इस्लाम क्या है ?

उर्दू लेखक
मौलाना मुहम्मद मंज़ूर नोमानी

★

हिन्दी अनुवादक
सय्यद अब्दुर्रब सूफ़ी, एम० ए०

★ प्रकाशक—
मजलि-से-तहक़ीक़ात व नशरियाते–इसलाम
नदवतुल उलमा—लखनऊ

(Academy of Islamic Research & Publications
Nadwatul Ulama, Lucknow)

★ मूल्य ४)

★ द्वितीय संस्करण २५००
अगस्त १९६४ ई०

रबी उस्सानी १३८४ हिजरी

★ मुद्रकः—
रामचरन लाल श्रीवास्तव
पवन प्रिंटिंग प्रेस, नज़ीराबाद लखनऊ।

इस पुस्तक
इस्लाम क्या है ?
का
संक्षिप्त परिचय

इस्लाम की ठीक ठीक जानकारी और उसकी शिक्षा का ज्ञान मुसलमानों को कराने और उनमें विश्वास (यक़ीन) का बल और इस्लाम जीवन पैदा करने के लिए यह पुस्तक विशेष धुन और ध्यान से लिखी गई है। इस में बीस पाठ हैं जिन में से हर पाठ में इस्लाम के किसी विशेष अँग का बयान क़ुर्आन और हदीस से किया गया है। हर पाठ अपने विषय पर एक सुन्दर लेख और दिल में घर करने वाला भाषण है। जिनको ख़ुदा ने आँखें दी हैं, आशा है कि वह देखेंगे कि इस ज़माने में इस पुस्तक का संग्रह और प्रकाशन समय की एक महत्व पूर्ण माँग को पूरा करता है।

विनीत अनुवादक :
सय्यद मुहम्मद अब्दुर्रब सूफ़ी एम०ए०
सोमवार १८ नवम्बर १९६३ ई०
३७ बुधवारी उन्नाव, यू० पी० भारत

विषय सूची

—:०:—

सरल हिन्दी संस्करण की भूमिका

भाषान्तर कार की ओर से ।

"इस्लाम क्या है?" जिसका यह सरल हिन्दी अनुवाद आपके हाथों में है; हिन्दुस्तानके नामी धार्मिक विद्वान् और प्रसिद्ध इस्लामी मासिक पत्रिका "अल फ़ुर्क़ान" लखनऊ के सम्पादक मौलाना मुहम्मद मन्ज़ूर नोमानी की रचना है जिसको अब से चौदह वर्ष पहले सन् १९४९ ई० में उन्होंने उर्दू भाषा में लिखा था। अल्लाह तआला ने अपनी दया से इस पुस्तकको सत्कारपूर्वक विशेष स्वीकृति प्रदान की और मुसलमानों के धार्मिक चेतना रखने वाले क्षेत्र ने इसको बहुत लाभदायक पुस्तक समझकर इसका ऐसा स्वागत किया जो हमारे इस युग में धार्मिक पुस्तकों को बहुत कम प्राप्त होता है। पिछले चौदह वर्षों में इसके पचास से अधिक प्रकाशन लगातार हाथों हाथ निकल चुके हैं।

देश की अन्य भाषाओं में से सबसे पहले इसका भाषान्तर गुजराती भाषा में हुआ। अल्लाह तआला की दया से वह भी बहुत सत्कार-पूर्वक स्वीकार किया गया और उसके भी अनेक संस्करण निकल चुके हैं।

अंग्रेजी और बंगाली अनुवाद के लिये भी लेखक से आज्ञा माँगी गई है और उसने आज्ञा प्रदान कर दी। आशा है कि अंग्रेजी संस्करण सन् १९६४ ई० मे इन्शाअल्लाह अवश्य प्रकाशित हो जायगा।

सबसे अधिक आवश्यकता इसके हिन्दी अनुवाद की थी क्योंकि राष्ट्र भाषा हिन्दी के मान्य हो जाने के कारण हमारे देश में सबसे बड़ा क्षेत्र इसी का होगा और कुछ समय बीत जाने पर शिक्षित मुसलमानों में भी बहुत बड़ी संख्या ऐसों ही की होगी जो उर्दू से अधिक हिन्दी के जानने वाले होंगे। इसके अतिरिक्त कुछ उदार हृदय रखने वाले और ख़ुदा के प्रेमी हिन्दुओं ने भी इस पुस्तक को देखकर इसके हिन्दी संस्करण की केवल इच्छा ही नहीं प्रकट की वरन् इसके लिये आग्रह भी किया। लेखक महोदय ने जो कि मेरे मित्र भी हैं। इसके हिन्दी अनुवाद के लिए मुझ से भी कहा "इसको एक आवश्यक तथा पुण्य का कार्य समझ कर अल्लाह तआला के शुभ नाम के साथ मैं उनकी इच्छा पूर्ति में संलग्न हो गया और अल्लाह तआला ने अपनी दया से यह कार्य पूरा करा दिया। मेरे हिन्दी अनुवाद का प्रथम संस्करण नवम्बर १९५० ई० अर्थात् रबीउस्सानी १३७७ हिजरी में प्रकाशित हुआ जो हाथों हाथ निकल गया और अब उसकी कोई प्रति भी प्राप्त नहीं हो सकती।

अब छः वर्ष बीतने पर एक दूसरी संस्था ने लेखक महोदय की आज्ञा प्राप्त करके इसके हिन्दी प्रकाशन का प्रबन्ध किया परन्तु निर्णय यह किया कि अब हिन्दी अनुवाद यथा सम्भव सरल हो क्योंकि मेरा पहले वाला हिन्दी अनुवाद बहुत कम पढ़ी जनता के लिए कुछ कठिन प्रतीत हुआ। इस संस्था का विचार ऐसा है कि इस लाभदायक पुस्तक की हिन्दी भाषा को इतना सरल बना दिया जाय कि जूनियर हाई स्कूल से कम पढ़े लिखे लोग भी इसको पढ़ और समझ सकें ताकि अधिकाधिक लोग लाभ उठा सकें। इस संस्था का नाम है 'मजलिसे तहक़ीक़ातों नशरियाते इस्लाम' अर्थात् 'इस्लामी निरीक्षण तथा प्रकाशन

सभा" जिसका अँग्रेज़ी नाम "एकाडेमी आफ़ इस्लामिक रिसर्च ऐंड पबलीकेशन।" है। यह सभा अर्थात् एकाडेमी, दारूल उलूम नद वतुल उलमा लखनऊ के अन्दर ही की एक संस्था है जिस के स्थापक, दारुल उलूम नद वतुल उलमा लखनऊ के अध्यक्ष महोदय हैं जिनका नाम मौलाना अबुल हसन अली हसनी नदवी है। वह मेरे आदरणीय मित्र भी हैं। उन्होंने संस्था की ओर से इस सरल हिन्दी अनुवाद के लिए मुझी को लिखा। मैंने उनकी इच्छा का पालन करना स्वीकार कर लिया और अपने ही पहले वाले हिन्दी अनुवाद को सामने रखकर यह सरल हिन्दी भाषान्तर तय्यार कर दिया। इस सरल हिन्दी अनुवाद के कार्य में हिन्दी संस्करण का वह प्रकाशन सामने रहा है जो नवम्बर १९५७ ई० में प्रकाशित हुआ है।

भाषान्तर को सरल करते हुए मैंने प्रयत्न किया है कि हिन्दी साहित्य की मिठास नष्ट न होने पाए। अतः हिन्दी के कठिन शब्दों के स्थान पर यथा सम्भव सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है फिर भी जहाँ तहाँ जो शब्द कुछ भी कड़ा प्रतीत हुआ तुरन्त उसी के आगे ब्रेकेट के अन्दर उसका उर्दू उल्था भी लिख दिया गया है।

अपने पहले वाले अनुवाद के समान मैंने इस सरल भाषान्तर में भी इस सिद्धान्त का पालन किया है कि इस्लाम के धार्मिक साहित्य के शास्त्र सम्बन्धी शब्दों का अनुवाद करने में जहाँ अर्थ तथा भाव के बिगाड़ का भय था वहाँ उस शब्द को ज्यों का त्यों रहने दिया है हाँ कहीं कहीं ब्रेकेट के अंदर संकेत मात्र उल्था अथवा व्याख्या कर दी गई है। उदाहरणार्थ कुछ शब्द तथा वाक्य निम्न लिखित है।

(१) 'अल्लाह अथवा अल्लाह तआला' इसका अनुवाद यदिहिंदी में ईश्वर' प्रमेश्वर अथवा प्रमात्मा किया जाय तो शब्द "अल्लाह" का ठीक अर्थ तथा भाव प्रकट नहीं होता वरन "ईश्वर तथा प्रमेश्वर" व "आत्मा तथा प्रमात्मा" में छोटे बड़े का जो पारस्परिक अन्तर है, इस्लाम की तौहीद उसका सहन नहीं कर सकती।

(२) "रसूल अथवा रसूलुल्लाह अथवा नबी" इन शब्दों का शुद्ध अनुवाद हिन्दी भाषा में एक शब्द से नहीं हो सकता। यदि इसका उल्था औतार किया जाय तो भयँकर अशुद्धि होगी क्योंकि प्रमेश्वर स्वयं ही मानव शरीर धारण करके औतार लेता है और रसूल अथवा नबी अल्लाह तआला का बन्दह और उसका भेजा हुआ मनुष्य होता है। दोनों अर्थों तथा विश्वासों में बहुत ही बड़ा अन्तर है।

(३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १० ११ १२) तौहीद, शिर्क, ईमान, कुफ्र, क़ियामत, हश्र, बर्ज़ख़ आख़िरत आयत, हदीस आदि का अनुवाद एक शब्द से हिन्दी में असम्भव है। (१३,१४, १५, १६) अलैहिस्सलाम, सल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम, अलैहिस्सलातु वस्सलाम, रज़ियल्लाह, तआला अन्हु आदि का अर्थ ब्रेकेट के अन्दर ही लिखा जा सकता है जो कही कहीं लिख दिया गया है और कहीं कहीं यही वाक्य ज्यों के त्यों प्रयोग में लाए गए हैं।

इस पुस्तक में जहाँ जहाँ पवित्र क़ुर्आन की आयतें अथवा रसूल की हदीसें अथवा कोई पवित्र मँत्र आ गया है वहां उसको अरबी लिखावट में लिखने के साथ साथ हिन्दी लिपी में भी ध्यान पूर्वक ऐसा शुद्ध लिखने का प्रयत्न किया गया है कि सभाल सभाल कर तथा सचेत रहकर पढ़ने वाला वही पढ़

सकेगा जो अरबी में पढ़ा जाता है परन्तु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि अरबी व हिन्दी वर्ण माला के अक्षरों और उनके उच्चारण में बहुत बड़ा अन्तर होने के कारण अरबी भाषा को को हिन्दी लिपि में लिखकर शुद्ध पढ़ना असम्भव है, उदाहरणार्थ कुछ समस्याएँ और कठिनाइयाँ निम्नलिखित हैः—

(१) अरबी भाषा में साकिन हमज़ह को ज़गतह अर्थात् झिटके के साथ पढ़ा जाता है परन्तु इसी को हिन्दी में लिखकर झिटके के साथ पढ़ने की सम्भावना नहीं रहती।

(२) अरबी वर्णमाला के अक्षरों "खे" 'जाल' 'जे' जाद 'जो' "गैन" "फे" तथा "क़ाफ' की आवाजें देने वाले अक्षर हिन्दी वर्ण माला में नहीं हैं अतः "ख' "ज" "ग" "फ" तथा "क" के नीचे बिन्दी (नुक़तह) लगा कर काम निकाला गया है जिसकी सफलता पाठकों के सावधान तथा सचेत रहने पर निर्भर है।

(३) अरबी वर्णमाला के अक्षरों अलिफ़, ऐन तथा हमज़ह की आवाजें अलग अलग हैं परन्तु हिन्दी वर्ण माला में इन तीनों अक्षरों की आवाज़ों के लिए केवल अलिफ़ की आवाज देने वाले अक्षर हैं अतः अरबी शब्दों में अलिफ़ हो अथवा ऐन अथवा हमज़ह हिन्दी लिपि में लिखने पर केवल अलिफ़ की आवाज़ पैदा होगी।

(४) इसी प्रकार अरबी अक्षरों "ते" "व" "तो" की आवाजें अलग अलग हैं परन्तु हिन्दी लिपि में दोनों के लिए केवल "ते' की आवाज़ से काम चलाना पड़ेगा।

(५) इसी प्रकार अरबी अक्षरों "से" "सीन" तथा "साद" की तीन विभिन्न आवाज़ों के लिए हिन्दी लिपि में केवल "सीन"

की आवाज़ का प्रबन्ध है अतः वाले शब्दों का "से" व "साद" उच्चारण हिन्दी लिपि में असम्भव है।

(६) इसी प्रकार अरबी अक्षर "ज़ाल" "ज़े" ज़ाद तथा 'ज़ो' बिभिन्न उच्चारण रखते हैं परन्तु हिन्दी लिपि में चारों के लिए "ज़"के नीचे बिन्दी लगा कर काम निकालना पड़ेगा और चारों के लिये केवल "ज़े" अक्षर का प्रयोग होगा।

अन्त में निवेदन है कि यदि मेरे इस सरल हिन्दी अनुवाद में कोई सौन्दर्य अथवा गुण प्रतीत होतो वह निःसन्देह केवल मेरे पालनहार दयामय अल्लाह तआला ही की दया है और जो त्रुटियाँ तथा अशुद्धियाँ अवश्य मिलेंगी वह मेरी ही चूक और नादानी है जिसके लिये इस पुस्तक के पाठकों से क्षमा की आशा रखता हूँ। अब अपने पालनहार अल्लाह तआला से इस प्राथना पर इस भूमिका को समाप्त करता हूँ कि हे दयामय मेरे इस कार्य को स्वीकार करलीजिये, इसको अपने असंख्य बन्दों तथा बन्दियों के सुधार का साधन बना दीजिये।

वल्हम्दुलिल्लाह

वस्सलात, वस्सलाम, अला रसूलिल्लाहि व आलिही।

विनीत अनुवादक
अब्दुर्रब सूफ़ी एम० ए०
१८ नवम्बर १९६३ ई०
१ रजब १३८३ हिजरी
२७ बुधवारी, उन्नाव
यू० पी० भारत

प्राक्कथन

अल्लाह और रसूल के भक्तों और धर्म के प्रेमियों से लेखक का विनीत निवेदन।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

आरम्भ अल्लाह के पवित्र नाम से जो बहुत बड़ा दयामय और बार बार कृपा करने वाला है।

मान लिया जाय कि अगर अल्लाह तआला थोड़ी देर के लिए हमारे इस संसार मे रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फिर से भेज दे और आप मुसलमान कहलाने वाली इस ज़माने की जनता का जीवन और उसका रँग ढँग देखें तो आपके पवित्र दिल पर क्या बीतेगा ? और अल्लाह के जिन बन्दों को अब भी आप के लाए हुए धर्म से कुछ लगाव है और जिन के दिल इस धर्म की चिन्ता और इस के दुःख से ख़ाली नहीं हो गए हैं उनके लिए आप का संदेश और आदेश क्या होगा ? इस तुच्छ सेवक को इसमें कुछ भी शक नही है कि मुसलमान कहलाने वाली जाति की बहुत बड़ी तादाद के इस जीवन को जो इस्लाम से बिल्कुल कट गया है और मुसलमानों की लापरवाही को और उनके पापों को देखकर आप को उससे भी अधिक दुःख होगा जितना ताइफ़ के दुष्ट और उपद्रवी काफ़िरों के पत्थरों से और उहद के अत्याचारी और क्रूर मुशरिकों के ख़ूनी हम्लों से हुआ था। धर्म के साथ बेलाग सच्चाई का नाता रखने वालों और उसकी चिन्ता और उसके दुःख से भरे हुए दिल वालों

के लिए आप का संदेश यही होगा कि मेरी बिगड़ी हुई उम्मत के धार्मिक सुधार के लिये और उस में विश्वास का बल और इस्लामी जीवन पैदा करने के लिए जो कुछ तुम इस समय कर सकते हो उस में कोई कमी न करो । इस तुच्छ सेवक की इस बात को अगर आपका दिल कबूल करता है तो इसी समय फ़ैसला कर लीजिए और अपने दिल में पक्का इरादा कर लीजिये कि अब से आप इस काम को अपनी ज़िन्दगी का एक अंग बना लेंगे। यह कमज़ोर बन्दा अपने दिल के पूरे विश्वास के साथ कहता है कि इस ज़माने में अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पवित्र आत्मा को प्रफुल्ल और संतुष्ट करने और आप के आशीर्वाद लेने का यह विशेष साधन अल्लाह तआला की दया और सहायता से इस समय हिन्दुस्तान में भी और पाकिस्तान में भी बल्कि अब हिजाज़ आदि देशों में भी मुसलमानों में विश्वास की ताक़त और धार्मिक जीवन पैदा करने की यह कोशिश एक बहुत बड़े धर्म प्रचार और आन्दोलन के रूप में "तबलीग़" के नाम से प्रचलित है। आप जहाँ रहते बसते हों वहीं इस काम के करने वाले अल्लाह के सच्चे भक्तों के साथ मिलकर इस धार्मिक कोशिश और मेहनत में अपनी हालत और हैसियत के अनुसार भाग लें और इसके अलावा जितना कुछ इस बारे में व्यक्तिगत रूप से कर सकते हों उसमें भी कमी न करें।

यह छोटी सी पुस्तक
जो इस समय आप के हाथ में है

यह भी इसी धार्मिक सुधार की कोशिश की एक कड़ी है। यह विशेष कर इसी लिये लिखी गई है कि थोड़ा पढ़े लिखे पुरुष और

स्त्रियाँ भी इसको ख़ुद पढ़ कर और दूसरों से पढ़वा कर और इस लेख मुसलमानों को मस्जिदों और जन समूहों में सुनवा कर अपने में और दूसरों में विश्वास का बल और धार्मिक जीवन पैदा करने की कोशिश अपनी योग्यता और हैसियत के अनुसार कर सकें और अल्लाह तआला को अत्यन्त ख़ुश करने वाले और नबी की पवित्र आत्मा को बहुत ज़ियादह प्रफुल्ल करने वाले इस काम में अपनी ताक़त भर भाग लें। यह पुस्तक अधिक मोटी तो नहीं है लेकिन अल्लाह तआला की सहायता से इस में पूरे धर्म का निचोड़ आ गया है और क़ुर्आन और हदीस की वह पूरी शिक्षा बीस पाठों के रूप में इकट्ठा कर दी गई है जिसकी जानकारी प्राप्त करके और जिसके अनुसार जीवन व्यतीत करके एक मामूली मुसलमान न केवल अच्छा मुसलमान बल्कि अल्लाह की दया से पूरा मोमिन और अल्लाह का वली बन सकता है। मुसलमानों के अलावा यह पुस्तक उन ग़ैर मुस्लिमों को भी बे झिझक दी जा सकती है जो इस्लाम को समझने और इस्लामी शिक्षा को जानने की इच्छा रखते हैं।

बेचारे लेखक का कार्य केवल इतना ही था कि अल्लाह की सहायता और दया से उनसे यह पुस्तक तैयार कर दी और पुस्तकालय अलफ़ुर्क़ान के कर्मचारियों ने (अल्लाह इन्हें अच्छा बदला दे) अपने सामर्थ्य की सीमा तक इसको अच्छे रूप में छापने का उत्तरदायित्व लिया। अब इस पुस्तक से विस्तीर्ण माप पर वह सुधार का कार्य लेना जिसके लिए यह लिखी गई है, आप सब महापुरुषों के सहयोग और निर्णय पर निर्भर है।

यदि इस तुच्छ लेखक के पास आर्थिक साधन होते तो भारतवर्ष की दशा की विशेषकर यह माँग थी कि लाखों की

संख्या में यह पुस्तक छपवाई जाती और भारतवर्ष में रहनेवाले प्रत्येक लिखे पढ़े मुसलमान के पास इसकी एक-एक प्रति पहुँचा दी जाती परन्तु अल्लाह का व्यवहार प्रारम्भ ही से कुछ ऐसा है कि इस प्रकार की कामनायें रखनेवालों को साधन नहीं दिये जाते और निस्संदेह इसमें भी अल्लाह तआला के अपार परम हैं।

अच्छा ! यह बन्दा तो अपनी इस इच्छा की पूर्ति से असमर्थ है परन्तु जिन ईमानवालों तथा ईमानवालियों की दृष्टि यह पुस्तक से गुज़रे यदि वह अल्लाह की प्रसन्नता और नबी (सलाम हो उन पर) की पवित्र आत्मा की प्रफुल्लता तथा आख़िरत का असीम प्रतिफल प्राप्त करने की इच्छा के साथ यह दृढ़प्रतिज्ञा कर लें कि हम अधिकाँश मुसलमानों तक यह पुस्तक अथवा इसके लेख पहुचायेंगे तो ख़ुदा ने चाहा तो बड़ी सीमा तक वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है। जैसा कि अभी मैंने संकेत किया कि भारतवर्ष के इस नवीन युग में मुसलमानों का तथा भविष्य में उनकी संतान का इस्लाम से सम्बन्धित रहना प्रत्यक्ष रूप से पूर्णतः इसी पर निर्भर है कि धर्म के महत्व को समझने बूझने वाला प्रत्येक भक्त मुसलमान जनता में धार्मिक विश्वास तथा इस्लामी जीवन उत्पन्न करने का प्रयत्न करने को अपना व्यक्तिगत कर्तव्य समझ ले और इस्लामी शिक्षा तथा धर्म के संदेश को एक—एक मुसलमान तक पहुँचाना अपना नित्य कर्म बना ले। इस समय यह पुस्तक इसी विशेष आवश्यकता के अनुभव के आधीन लिखी गई है। यह मेरी मनोकामना है कि अल्लाह के बन्दे इसके महत्व और इसकी विशेष आवश्यकता को समझें।

अल्लाह ही सामर्थ्य देने वाला है और वही सहायता प्रदान करने वाला है।

विनीत लेखक :
मुहम्मद मंज़ूर नोमानी
१० रमज़ानुल मुबारक १३६६ हिजरी।

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ।

[अल्लाह के नाम से आरम्भ जो बड़ा दयालु और कृपाशील है]

हर मुसलमान के लिये इस्लामी शिक्षा प्राप्त करने की आवश्यकता तथा धर्म सीखने की उत्तमता ।

भाइयो ! इतनी बात तो आप सभी जानते होंगे कि इस्लाम किसी क़ौम या जाति या बिरादरी का नाम नहीं है कि इसमें पैदा होने वाला हर मनुष्य आप से आप मुसलमान हो और मुसलमान होने के लिये उसको कुछ करना न पड़े जिस तरह शैख़ या सय्यद वंश में पैदा होने वाला हर बच्चा आप से आप शैख़ या सय्यद हो जाता है और उसको शैख़ या सय्यद बनने के लिये कुछ करना नहीं पड़ता परन्तु इस्लाम नाम है उस धर्म का और उस ढंग पर जीवन बिताने का जो अल्लाह के सच्चे

रसूल (उन पर अल्लाह की रहमत और सलाम हो) अल्लाह तआला की ओर से लाए थे और जो पवित्र क़ुरआन में और रसूल (उन पर अल्लाह की रहमत और सलाम हो) की हदीसों में बतलाया गया है। इस लिये जो कोई इस धर्म को मान ले और इस्लाम की राह पर चले सचमुच वही मुसलमान और जो लोग है न तो इस धर्म को जानते ही हैं और न इस राह पर चलते ही हैं वह सच्चे मुसलमान नहीं हैं। इससे यह बात खुल कर सामने आगई कि मुसलमान बनने के लिये दो बातें आवश्यक हैं।

एक यह कि हम इस्लाम धर्म को जानें और कम से कम हमको उसकी बुनियादी और आवश्यक बातों का ज्ञान हो।

दूसरे यह कि हम उन को मानें और उन पर चलना तै करें। इसी का नाम इस्लाम है और मुसलमान होना इसी बात का नाम है। इसलिये इस्लाम की जानकारी प्राप्त करना या यों कहा जाय कि धर्म की आवश्यक बातों को सीखना मुसलमान होने की सबसे पहली शर्त है। इसी लिये पवित्र हदीस में आया है कि:—

طلب العلم فريضة على كل مسلم

त+लबुल+इल्मि+फ़रीज़तुन अला कुल्लि मुस+लिमिन इस का अर्थ यह है कि धर्म की बातें सीखने का प्रयत्न करना और उसमें ध्यान लगाना हर मुसलमान के लिये फ़र्ज़ है बहुत आवश्यक है, अनिवार्य है) और यह बात सदा याद रखने की है कि जो बात धर्म में फ़र्ज़ (अनिवार्य) है उसका करना इबादत (पूजा है। दीन धर्म सीखना और धर्म की बातें जानने का प्रयत्न करना भी इबादत (पूजा है और अल्लाह के यहाँ इसका बहुत

बड़ासवाब (प्रतिफल) है और रसूलुल्लाह (उन पर अल्लाह की रहमत और सलाम हो) ने इसकी बहुत बड़ाइयाँ बयान की हैं।

एक हदीस में है कि :—

जो मनुष्य दीन सीखने के लिये घर से निकले वह जब तक अपने घर लौट कर न आजाय वह अल्लाह के रास्ते में है। (तिर्मिज़ी) एक और हदीस में है कि :—

जो मनुष्य दीन की इच्छा में और धर्म की बातें सीखने के लिये किसी रास्ते पर चलेगा तो अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत (वैकुँठ) का रास्ता सरल कर देगा। (मुस्लिम) एक और हदीस में है कि :—

धर्म की विद्या की इच्छा रखना और उसको प्राप्त करने का प्रयत्न करना पिछले पापों को मिटा देने वाला है और इससे आदमी के पिछले पाप क्षमा कर दिये जाते हैं। (तिर्मिज़ी)

ख़ुलासा (सारांश) यह कि धर्म का सीखना और इस्लाम की आवश्यक बातों की जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न करना हर मुसलमान के लिये फ़र्ज़ (अनिवार्य) है चाहे वह धनवान हो चाहे निर्धन। जवान हो चाहे बूढ़ा। पढ़ा लिखा हो चाहे अनपढ़, पुरुष हो चाहे स्त्री, और ऊपर की हदीसों से यह भी जानकारी हो गई कि इस काम में जो समय लगता है और इस के लिये जो मेहनत करनी पड़ती है अल्लाह तआला के वहां उस का बहुत बड़ा बदला और प्रतिफल मिलने वाला है। इसलिये हम सब को यह तै कर लेना चाहिये कि हम दीन सीखने का और इस्लाम की बातें जानने का प्रयत्न आवश्य करेंगे।

जो मुसलमान भाई अवस्था अधिक हो जाने के कारण या

काम काज में फस जाने के कारण किसी इस्लामी पाठशाले में भरती हो कर और उस पाठशाले के विद्यार्थी बन कर धर्म की शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते उनके लिये दीन सीखने का सीधा रास्ता यह है कि अगर वह पढ़े लिखे हों तो दीन की ऐसी पुस्तकें जिन पर विश्वास किया जा सकता है देखा करें और जो पढ़े लिखे नहीं हैं या बहुत थोड़ा पढ़े हुए हैं वह अच्छे पढ़े लिखों से ऐसी पुस्तकें पढ़वा कर सुना करें। अगर घरों में, बैठकों में, जलसों में और मस्जिदों में ऐसी पुस्तकें पढ़ने और सुनने सुनाने का रिवाज हो जाय तो हर कोटि के मुसलमानों में दीन की जानकारी फैल सकती है।

यह छोटी सी पुस्तक इसी विचार से और इसी काम के लिये लिखी गई है। इस पुस्तक में इस्लाम धर्म की वह सभी आवश्यक बातें और रसूलुल्लाह (उन पर अल्लाह की रहमत और सलाम हो) की आज्ञाएँ सीधी सादी भाषा में लिखी गई हैं जिन की जानकारी हर मुसलमान को होनी चाहिये। आओ इन बातों को ख़ुद भी सीखें और दूसरों को भी सिखाएँ और बतलाएँ और सँसार में इन इस्लामी बातों को फैलाने और इनको रिवाज देने की कोशिश करें और इस काम को अपने जीवन का काम बना लें।

पवित्र हदीस में है कि :—

जो आदमी धर्म को सीखने और जानने का इसलिये प्रयत्न करें कि वह इस्लाम को लोगों में फैलाए और लोगों को उस पर चलाए और इसी बीच में उसकी मौत आ जाय तो आख़िरत में उसके और पैग़म्बरों के बीच में केवल एक ही कोटि का अन्तर होगा (दारमी)

अल्लाह् तआला हम सब की सहायता करे कि हम ख़ुद भी धर्म को सीखें और दूसरों को भी सिखाएं और ख़ुद भी दीन पर चलें और अल्लाह के दूसरे बन्दों को भी दीन पर चलाने का प्रयत्न करें।

—:o:—

पहला पाठ

कलिमए तय्यिबह

(पवित्र वाक्य)

"لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ"

ला+इला+ह+ इल्लल्लाहु+मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि
(अल्लाह के सिवा कोई ऐसा नहीं जिसकी पूजा की जाय और मुहम्मद उसके रसूल हैं।)

भाइयो! यही कलिमह (वाक्य) इस्लाम के अन्दर आने का रास्ता है और यही वाक्य धर्म और विश्वास की जड़ बुनियाद है। इसको मान कर और इसको विश्वास के साथ पढकर जन्म का काफ़िर और मुश्रिक भी मोमिन और मुसलमान और जन्नत का हक़दार हो जाता है मगर शर्त यह है कि इस कलिमे में अल्लाह तआला की तौहीद (एक होना) और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत (पैग़म्बर होना) का जो बयान किया गया है उसको उसने समझ लिया हो और दिल से मान लिया हो इसलिये अगर कोई आदमी अल्लाह तआला के एक होने और रसूल के पैगम्बर होने को तनिक भी न समझा हो और बिना समझे बूझे उसने यह वाक्य पढ़ लिया हो तो वह अल्लाह तआला के यहाँ मोमिन और मुसलिम न होगा।

इसलिये आवश्यक है कि हम इस कलिमे को भली भांति समझें। इस कलिमे के दो भाग हैं। पहला भाग यह है:—

"ला + इला + ह + इल्लल्लाहु", इस भाग में अल्लाह तआला के एक होने का बयान है और इसका अर्थ यह है कि अल्लाह तआला के सिवा कोई ऐसा नहीं है जिसकी पूजा हो सकती हो। बस अकेले अल्लाह तआला ही ऐसे हैं जिनकी इबादत (पूजा) की जा सकती है क्योंकि वही हमारे और सब के पैदा करने वाले और मालिक हैं। वही पालने वाले हैं और वही रोज़ी देने वाले हैं। वही मारने वाले हैं और वही जिलाने वाले हैं। बीमारी और तनदुरुस्ती, धन और निर्धनता और हर तरह का बनाव और बिगाड़ और लाभ और हानि अकेले अल्लाह तआला ही के हाथ में है। भूमि और आकाश में जो कुछ है, चाहे आदमी हों चाहे फ़रिश्ते सब अल्लाह तआला ही के बन्दे और उन्हीं के पैदा किये हुए हैं। उनके अल्लाह होने में कोई उनका साथी और साझी नहीं है। उनके आदेशों में कोई उलट-पलट नहीं कर सकता। उन के कामों में कोई भी रोड़ा नहीं अटका सकता इसलिये एक वही और अकेले वही ऐसे हैं जिनकी इबादत عبادت (पूजा) की जाय। और उन्हीं से लौ लगाई जाय और कठिनाइयों और अपनी सब आवश्यकताओं में गिड़-गिड़ा कर उन्हीं से प्रार्थना और बिनती की जाय। क्योंकि सचमुच वहीं हर तरह की ताक़त रखने वाले मालिक प्रभु स्वामी और नाथ हैं और सारे संसार के बादशाह हैं। वह हर प्रकार के अधिकारियों के मालिक और असली अधिकारी हैं। इसलिये आवश्यक है कि उनकी हर आज्ञा को माना जाय और पूरी तरह उनका बन्दह बनकर सचाई के साथ उनकी आज्ञाओं पर चला जाय। और उनकी आज्ञाओं को तोड़ने वाली कोई दूसरी आज्ञा

किसी को भी किसी दशा में भी न मानी जाय! चाहे वह कोई भी हो चाहे वह अपना बाप ही क्यों न हो। कोई राज्य का अधिकारी हो चाहे बिरादरी का चौधरी हो या कोई प्यारा मित्र हो या ख़ुद अपने दिल की इच्छा या अपने मन की चाहत हो। ख़ुलासा (साराँश) यह है कि जब हमने जान लिया और मान लिया कि अकेला एक अल्लाह ही ऐसा है जिसकी इबादत (पूजा) की जा सकती है और हम सब अकेले उसी एक के बन्दे हैं तो चाहिये कि हमारा काम हमारी इस जानकारी का उलटा न हो। और संसार के लोग हमें देख ही कर जान लिया करें कि यह अकेले एक अल्लाह ही का बन्दा है जो एक अल्लाह ही की आज्ञाओं को मानता है और एक अल्लाह ही के लिये जीता और मरता है। बस ला+इला+ह+इल्लल्लाहु हमारा प्रण (इक़रार) और हमारी घोषणा (एलान) हो। ला+इला+ह+इल्लल्लाहु हमारा विश्वास और हमारा ईमान हो। ला+इला+ह+इल्लल्लाहु हमारा कार्य और हमारी आन बान और हमारी शान हो। भाइयो! यह "ला+इला+ह+इल्लल्लाह" धर्म की नींव की पहली ईंट है। और सभी पैग़म्बरों ने सबसे पहला यही पाठ अल्लाह के बन्दों को पढ़ाया है जिनको सीधी राह पर लगाने के लिये वह भेजे गए थे। दीन की सब बातों में सबसे ऊँचा स्थान इसी ला+इला+ह+इल्लल्लाहु का है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस है। आप ने फ़रमाया :—

"ईमान की शाखाएँ सत्तर से भी ऊपर हैं उनमें सबसे ऊँची और उत्तम यह है कि ला+इला+ह+इल्लल्लाहु को माना जाय (बुख़ारी व मुस्लिम) इसलिये जापों में भी सबसे ऊँचा जाप ला+इला+ह+इल्लल्लाह का जाप है। (इब्ने मजहब

न+सई) एक और हदीस में यह आया है" अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (उनपर सलाम हो) के पूछने पर फ़रमाया कि:— हे मूसा ! अगर सातों आकाश और सातों धरतियां और जो कुछ उनमें है सब कुछ एक पलड़े में रक्खा जाय और "ला+इला+ह+इल्लल्लाह" दूसरे पलड़े में तो ला+इला+ह+इल्लल्लाह का पलड़ा ही भारी रहेगा (शहुस्सुन्नह)

भाइयो ला+इला+ह+इल्लल्लाह में यह उत्तमता और भारीपन इसीलिये है कि इसमें अल्लाह तआला को अकेला एक मानने के विश्वास की शिक्षा, प्रतिज्ञा और प्रण है। बस अकेले उसी की पूजा और उपासना करने, उसी की अज्ञाओं पर चलने, अपने जीवन का प्रयोजन उसी को बनाने और उसी से लौ लगाने का निर्णय और बचन ला+इला+ह+इल्लल्लाह में है। यही बात ईमान की जान और इस्लाम की पहचान है। इसीलिये रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों को आज्ञा दी है कि वह इस पवित्र वाक्य को बार-बार पढ़-पढ़ कर अपने ईमान का नया करते रहा करें। बहुत प्रसिद्ध हदीस है कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:—

"लागो अपने ईमान को नया करते रहा करो।" कुछ सहबाा (सतसंग करने वालों) ने पूछा कि "हे अल्लाह के रसूल ! हम किस प्रकार अपने ईमानों को नया किया करें" आपने फ़रमाया कि "ला+इला+ह+इल्लल्लाह" बहुत पढ़ते रहा करो" (मुस्नद अहमद व जम उलफ़वाइद) "ला+इला+ह+इल्लल्लाह" के पढ़ने से ईमान के नया होते रहने का कारण यही है कि इसमें अल्लाह तआला के एक अकेले होने का विश्वास रखने, अकेले उसी की पूजा करने, उसी पर मर मिटने उसीसे प्रेम करने, उसीसे लौ लगाने और उसीकी आज्ञाओं पर चलने

का प्रण और बचन है। जैसा कि ऊपर कहा गया है यही ईमान की जान और इस्लाम की पहचान है। इसलिये हम जितना भी समझ समझ कर और जितने भी धुन और ध्यान के साथ इस पवित्र वाक्य का जाप करेंगे उतना ही हमारा ईमान नया होगा और हमारा प्रण (इकरार) भी उतना ही पोढ़ा होगा। और अल्लाह तआला की दया से ला+इला+ह+इल्लल्लाह हमारा स्वभाव हो जायगा। इसलिये भाइयो तै कर लो कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़रमाने के अनुसार हम इस वाक्य को ध्यान के साथ और सच्चे दिल से बहुत पढ़ते रहा करेंगे ताकि हमारा ईमान ताज़ा होता रहे और हमारा पूरा जीवन ला+इला+ह+इल्लल्लाह के साँचे में ढल जाय।

यहाँ तक कलिमए तय्यिबह (पवित्र) वाक्य, के पहले भाग को बयान किया गया। अब इस कलिमे के दूसरे भाग का बयान किया जाता है—

हमारे पवित्र कलिमे का दूसरा भाग है

محمد الرسول الله

(मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि।)

इस भाग में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पैग़म्बर मानने और मानने को प्रकट करने का बयान है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रसूल होने का अर्थ यह है कि अल्लाह तआला ने आपको संसार के सुधार के लिये और लोगों को सीधा और सच्चा रास्ता बताने के लिये भेजा था और आपने जो कुछ अल्लाह के बन्दों को बताया और आपने उनको जो

संदेश पहुँचाया और जो-जो समाचार सुनाये वह सब सच्चे और बिलकुल ठीक हैं जैसे पवित्र कुर्आन का ख़ुदा की ओर से होना, फ़रिश्तों का होना, क़ियामत का आना, मुरदों का फिर से जिलाया जाना और अपने-अपने कामों के अनुसार जन्नत या दोज़ख़ में जाना आदि। बस हुज़ूर सल्लल्लाहु, अलैहि व सल्लम के रसूल होने का अर्थ यही है कि आपने जो बातें संसार को बतलाई हैं वह आपने ख़ुदा की ओर से पाकर बतलाई हैं और वह सब बिलकुल सच और ठीक हैं जिनमें किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं किया जा सकता और इसी प्रकार आपने जो आज्ञाएँ दीं और जो रास्ता बताया वह सब ख़ुदा ही की आज्ञाएँ हैं और रास्ता ख़ुदा ही का बताया हुआ रास्ता है। यह आज्ञाएँ और सच्चे रास्ते की जानकारी आपके ऊपर अल्लाह की ओर से उतारी गई है। इससे आपकी समझ में आ गया होगा कि किसी को रसूल मान लेने से यह आप ही आप आवश्यक हो जाता है कि उस रसूल की आज्ञाओं आदि को सच्चा माना जाय क्योंकि अल्लाह तआला किसी को अपना रसूल इसीलिये बनाता है कि रसूल के ऊपर अपनी आज्ञाएँ उतारे और फिर रसूल वह आज्ञाएँ अल्लाह के बन्दों तक पहुँचाए क्योंकि अल्लाह उसी के रास्ते पर अपने बन्दों को चलाना चाहता है जो रास्ता अपने रसूल को ख़ुद बता देता है।

अल्लाह तआला ने पवित्र कुरआन में फ़रमाया है कि—

"وَمَا اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ"

(वमा अर्सल्ना मिर्सूलिन इल्ला लियुताअ बिइज़्निल्लाह)

और हमने हर रसूल को इसीलिये भेजा है कि हमारी आज्ञाओं के अनुसार उसकी आज्ञाओं को माना जाय और उन पर चला जाय।

बस रसूल पर ईमान लाने और उसको रसूल मानने का अर्थ यही है कि उसकी हर बात को बिलकुल सच माना जाय और उसकी शिक्षा को और रास्ता दिखाने को खुदा की शिक्षा और खुदा का रास्ता दिखाना समझा जाय, साथ ही रसूल की आज्ञाओं पर चलना तै कर लिया जाय। अगर कोई आदमी ऐसा हैं जो पवित्र कलिमह ला + इला + ह + इल्लल्लाहु + मुहम्मदुर्रसूलूल्लाहि तो पढ़ता है परन्तु उसने अपने बारे में यह तै नहीं किया हैं कि मै हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बतलाई हुई हर बात को बिलकुल सच मानूंगा और जो बातें उनकी आज्ञाओं से टकराती हों उनको ग़लत मानूंगा और उसने यह तै न किया हो कि मैं रसूल की शरीअत (धर्मशास्त्र) पर चलूंगा तो वह आदमी, सच यह है कि मोमिन और मुसलमान ही नहीं हुआ। चाहे वह मुसलमानों के किसी ऊंचे से ऊँचे घराने में पैंदा हुआ हो। और सच्ची बात यह है कि वह भूल में है और उसने अभी मुसलमान होने का अर्थ समझा ही नहीं।

खुली हुई बात है कि जब हमने कलिमह पढ़कर हुज़ूर सल्ल्लेलाहु अलहि व सल्लम को ख़ुदा का सच्चा रसूल मान लिया तो हमारे लिये अनिवार्य हो गया कि हम उनकी आज्ञाओं के अनुसार ही चलें और उनकी सारी बातें मानें और उनके लाए हुए धर्म शास्त्र (शरीअत) का पूरी तरह से पालन करें।

पवित्र कलिमह सचमुच एक प्रतिज्ञा (इक़रार) और प्रण (पक्का वादा) है

कलिमए शरीफ़ (पवित्र कलिमह) के दोनों भागों (१) ला + इला + ह + इल्लल्लाहु (२) मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि का जो अर्थ ऊपर समझाकर और खोल कर बयान किया गया है उससे

आपने अवश्य समझ लिया होगा कि यह कालिमह सच यह है कि एक प्रण (पक्का वादा) और एक प्रतिज्ञा (इक़रार) है। प्रण इस बात का है कि मैं अकेले अल्लाह तआला को सच्चा ख़ुदा और ऐसा स्वामी मानता हूँ जिसकी पूजा (इबादत) की जाय और इस संसार और प्रलोक (आख़िरत) की हर चीज़ को अकेले उसी के बश और उसीके हाथ में समझता हूँ इसलिये मैं उसी की और अकेले उसी की पूजा और उपासना करूँगा और एक दास (ग़ुलाम) को अपने मालिक की अज्ञाओं पर जिस तरह चलना चाहिये उसी तरह उसकी आज्ञाओं पर चलूँगा। और हर चीज़ से बढ़ कर मैं उससे प्रेम करूँगा। और अपना नाता हर एक से बढ़ कर उसी से बाधूँगा। और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मैं ख़ुदा का सच्चा रसूल मानता हूँ मैं उनका उम्मती (उनके गरोह का) हूँ और एक सच्चे उम्मती की तरह उनकी आज्ञाओं का पालन सदा करता रहूँगा और उनके लाए हुए धर्मशास्त्र पर चलता रहूँगा। सच बात यह है कि इसी इक़रार और इसी पक्के वादे का नाम ईमान है। और अल्लाह की तौहीद (अकेला एक होना) और रसूल की रिसालत (पैग़म्बरी) की गवाही देने का भी यही अर्थ है। इसलिये कलिमह पढ़नेवाले हर मुसलमान को चाहिये कि वह अपने आपको इस प्रण और इस गवाही में बंधा हुआ समझे और वह अपना जीवन इसी के अनुसार बिताए ताकि वह अल्लाह तआला के सामने एक सच्चा मोमिन और पक्का मुसलमान हो। और दोज़ख़ (नरक) से छुटकारा पाने और जन्नत का हक़दार बनने में सफल हो। ऐसे भाग्यवानों के लिये क़ुआन और हदीस में बड़ी बड़ी शुभ सूचनाएँ बयान की गई हैं। ऐसे भाग्यवान वही हैं जो पवित्र कालिमे के दोनों भागों तौहीद (एक होना) और

रिसालत (पैग़म्बरी) को सच्चे दिल से मानें और तीनों प्रकार से गवाही दें। तीनों प्रकार क्या हैं? दिल से, ज़बान से और काम (कर्म) से। हज़रत अनस, (एक सतसंग करने वाले) का बयान है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मआज़ से फ़रमाया कि :—

जो कोई सच्चे दिल से ला + इला + ह + इल्लल्लाहु + मुहम्मदुर्रसलूल्लाहि की गवाही दे तो अल्लाह तआला ने दोज़ख़ (नरक) की आग ऐसे मनुष्य पर हराम कर दी है। (बुख़ारी व मुसलिम)

भाइयो ला + इला + ह + इल्लल्लाहु + मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि के अर्थ और इसके भारीपन को भली-भांति समझ कर दिल और ज़बान से इसकी गवाही दो और ठान लो कि अपना जीवन इस गवाही के अनुसार बिताओगे ताकि हमारी गवाही झूठ न ठहरे क्योंकि इस गवाही पर हमारा ईमान और इस्लाम और नरक से हमारा छुटकारा निर्भर है। इसलिये चाहिये कि :—

लाइला + ह + इल्लल्लाहु + मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि हमारा पक्का विश्वास व ईमान हो

" " " " " हमारी प्रतिज्ञा और घोषणा हो

" " " " हमारे जीवनका सिद्धान्त और सारे ससार के लिये हमारा संदेश हो

इसी को फैलाने और ऊँचा करने के लिये हम जियें और मरें।

—:o:—

दूसरा पाठ

नमाज़

नमाज़ की बड़ाई और उसकी छाप।

अल्लाह और रसूल पर ईमान लाने और तौहीद (अल्लाह का एक होना) और रिसालत (पैग़म्बर होना) की गवाही देने के बाद सबसे उत्तम और सबसे पहला फ़र्ज़ (अनिवार्य कर्म) इस्लाम में नमाज़ है। नमाज़ अल्लाह तआला की सबसे बड़ी और विशेष पूजा (इबादत) है जिसका पढ़ना दिन रात में पाँच बार फ़र्ज़ (अनिवार्य) है। क़ुरआन शरीफ़ की पचासों आयतों (वाक्यों) में और रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सैकड़ों हदीसों में नमाज़ पढ़ने पर बहुत बल दिया गया है, और उसको धर्म का खम्बा और दीन की नीव कहा गया है।

नमाज़ की यह छाप बहुत विशेष रूप से लगती है कि अगर उसको भली भाँति पढ़ा जाय और अल्लाह तआला को हर बात का हर समय देखने और सुनने वाला समझते हुए पूरे ध्यान के साथ नमाज़ को जी लगा कर पढ़ा जाय तो उससे आदमी का दिल पवित्र और साफ हो जाता है और उसका जीवन सुधर जाता है और बुराइयाँ उससे छूट जाती हैं और नेकी और सच्चाई का प्रेम और ख़ुदा का डर उसके दिलमें पैदा हो जाता है।

इसलिये इस्लाम में दूसरी फ़र्ज़ इबादतों (पूजा) से बढ़ कर नमाज़ पर बल दिया गया है। और इसीलिये रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह नियम था कि जब कोई मनुष्य आप की सेवा में आकर इस्लाम धर्म को अपनाता तो आप तौहीद की शिक्षा के बाद उससे पहला प्रण नमाज़ ही का लिया करते थे। बस कलिमे के बाद नमाज़ ही इस्लाम की बुनियाद है।

रसूल की दृष्टि (निगाह) में नमाज़ न पढ़ना कैसा है और नमाज़ न पढ़ने वाले कैसे हैं ?

हदीसों से पता चलता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ न पढ़ने को कुफ़्र की बात और काफ़िरों की चाल ढाल ठहराते थे और फ़रमाते थे कि जो मनुष्य नमाज़ न पढ़े उसका दीन में कोई भाग नहीं। शुद्ध पुस्तक मुसलिम शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :—

बन्दे और कुफ़्र के बीच में बस नमाज़ छोड़ देने का अन्तर है।

अर्थ यह है कि बन्दा यदि नमाज़ छोड़ देगा तो कुफ़्र से मिल जायगा और नमाज़ छोड़ने का कार्य काफ़िरों के काम की तरह का काम होगा।

एक दूसरी हदीस में आया है कि :—

इस्लाम में उसका कुछ भी भाग नहीं जो नमाज़ न पढ़ता हो (दुर्रे मन्सूर) मुस्नद बज़्ज़ाज़ से लेकर) नमाज़ पढ़ना कितना बड़ा धन और कितनी बड़ी भाग्यवानी है और नमाज़ न पढ़ना कितनी

मुसीबत और कितना बड़ा अभागा-पन है इस बात का कुछ अन्दाज़ा लगाने के लिये रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह हदीस और सुनिये। एक दिन रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ के पढ़ने पर बहुत बल देते हुए फ़रमाया कि जो कोई नमाज़ को ठीक-ठीक और भली-भांति पढ़ेगा तो नमाज़ क़ियामत में उसके लिये रौशनी होगी और उसके ईमान व इस्लाम की पहचान बनेगी और दोज़ख़ से छुटकारा दिलाने वाली बन जायगी। और जो कोई नमाज़ ध्यान के साथ ठीक ठीक नहीं पढ़ेगा तो वह उसके लिये न रौशनी बनेगी न इस्लाम व ईमान की पहचान का काम देगी और न वह उसको दोज़ख से छुटकारा दिलाने वाली बनेगी। वह आदमी क़ियामत में क़ारून, फ़िरऔन हामान और उबय्य बिन ख़लफ़ के साथ होगा (मुस्नद अहमद)

भाइयो हम में से हर एक आदमी को सोचना चाहिये कि अगर हमने भली भांति और ठीक-ठीक नमाज़ पढ़ने की टेव न डाली तो फिर हमारा हश्र और हमारा अन्त कैसा होने वाला है।

क़ियामत के मैदान में नमाज़ न पढ़ने वालों का अपमान

नमाज़ न पढ़ने वालों को क़ियामत के दिन जो अपमान सबसे पहले उठाना पड़ेगा उसका बयान पवित्र क़ुरआन की एक आयत में इस तरह किया गया है।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ

وَهُمْ سَالِمُوْنَ ۝ - (سورۂ قلم)

यौ + म + युक + शफ़ु + अन + साक़िव + वयुद + औ + न + इलस्सुजूदि फ़ला + यस + ततीऊन + ख़ाशअतन + अब + सारुहुम + तर्हक़ुहुम + ज़िल्लह + वक़द + कानू + युद + औ + न + इलस्सुजूद + वहुम + सालिमून। (सूरए क़लम)

इस आयत का अर्थ यह है कि क़ियामत के दिन जबकि बड़ी कड़ी घड़ी होगी और संसार के आरम्भ से लेकर क़ियामत तक के सभी लोग क़ियामत के मैदान में इकट्ठा होंगे तो अल्लाह तआला की एक विशेष तजल्ली (रोशनी) प्रकट होगी और उस समय पुकारा जायगा कि सभी लोग अल्लाह के सामने सजदे में गिर कर माथा टेक दें। तो जिनके दिलों में ईमान की दौलत होगी और जो संसार में नमाज़ें पढ़ते रहे होंगे और अल्लाह को सजदे करते रहे होंगे वह तो तुरन्त सजदे में चले जायँगे परन्तु जो लोग संसार के जीवन में हट्टे कट्टे होते हुये भी नमाज़ें नहीं पढ़ते थे उनकी कमर और पीठ उस समय तख्ते की तरह कड़ी कर दी जायगी और वह काफ़िरों के साथ खड़े रह जायँगे और सजदे में न जा सकेंगे। और उनके ऊपर अपमान छा जायगा, उनकी आँखें नाज़ी होंगी और वह कुछ भी देख न सकेंगे। दोज़ख़ (नर्क) के दण्ड (सज़ा) से पहले उनको यह अपमान का दण्ड क़ियामत के मैदान में सारे संसार के सामने उठाना पड़ेगा। अल्लाह तआला हम सबको इस दण्ड (सज़ा) से बचाए।

सच बात यह है कि नमाज़ न पढ़ने वाला ख़ुदा का बैरी और बाग़ी (राजद्रोही) है उसका अपमान जितना भी किया जाय और उसको जितना भी दण्ड (अज़ाब) दिया जाय ठीक है। वह इसी के योग्य (क़ाबिल) है। उम्मत के कुछ विद्वानों का कहना है

कि नमाज़ न पढ़ने वाले धर्म से निकल जाते हैं और वह धर्म छोड़ने का दण्ड (सज़ा) पाने के योग्य (क़ाबिल) हैं।

भाइयो हम सबको अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि बिना नमाज़ पढ़े अपने को मुसलम न समझना बे बुनियाद और बेजोड़ बात है। नमाज़ पढ़ना ही धर्म का वह विशेष (ख़ास) काम है जो हमारा नाता अल्लाह तआला से जोड़ता है और हम उसकी दया के अधिकारी (हकदार) हो जाते हैं।

नमाज़ की बरकतें

जो बन्दा दिन रात में पाँच बार अल्लाह तआला के सामने हाथ बाँध कर खड़ा होता है, उसके गुन गाता है, उसकी बिनती करता है, उसके आगे अपने को झुकाता है, उसके सामने सजदों में अपना माथा टकता है और उससे प्रार्थना (दुआ) करता है तो वह अल्लाह तआला की विशेष (ख़ास) दया और उसके प्रेम का अधिकारी (हक़दार) हो जाता है। और हर बार की नमाज़ से उसके पाप और अपराध कटते रहते हैं और उसके दिल में सफाई पैदा हो जाती है। उसका दिल पापों के मैल कुचैल से पाक साफ़ हो जाता है एक हदीस में है कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बड़ा अच्छा उदाहरण (मिसाल) देते हुये फ़रमाया :—

'बताओ अगर तुम में से किसी के द्वार (दरवाज़े) पर नहर बह रही हो जिसमें वह हर रोज पाँच बार नहाता हो तो क्या उसके शरीर (बदन) पर कुछ भी मैल-कुचैल रह जायगा ?"

सत संगियों ने (सहाबा) जवाब दिया "हुज़ूर कुछ भी मैल-कुचैल नहीं रह जायगा" आपने फरमाया "बस पाँचों समय की

नमाज़ें पढ़ते रहने से पापों का मैल-कुचैल यों ही दूर हो जाता है। अल्लाह तआला नमाज़ों की बरकत से पापों को मिटा देता है। (बुख़ारी व मुसलिम)।

सामूहिक रूप से (जमाअत से) नमाज़ें पढ़ने की आज्ञा पर बल और उसकी उत्तमता।

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों से यह भी पता चलता है कि नमाज की भलाइयाँ और बरकतें जैसी कुछ चाहिए वैसी पाने के लिये सामूहिक रूप से (जमाअत) से नमाज पढ़ना आवश्यक है और इसके लिये आज्ञा पर इतना बल दिया गया है कि जो लोग आलस्य के कारण सामूहिक नमाज में (जमाअत की नमाज में) नही पहुँचते उनके बारे में रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार फरमाया कि :—

मेरा जी चाहता है कि मैं उनके घरों में आग लगा दूं (शुद्ध मुसलिम) बस इसी एक हदीस से अन्दाजा किया जा सकता है कि जमाअत का छोड़ना अल्लाह और रसूल को कितना बुरा लगता है। सहीह हदीस में आया है कि—सामूहिक रूप से (जमाअत) से नमाज पढ़ने का प्रतिफल (सवाब) अकेले नमाज पढ़ने से सत्ताईस गुना अधिक होता है (बुखारी व मुसलिम)

पाबन्दी के साथ (लगातार) सामूहिक रूप से (जमाअत) से नमाज़ पढ़ने में परलोक (आख़िरत) के प्रतिफल (सवाब) के अलावा और भी बड़े-बड़े लाभ हैं जैसे (१) पाबन्दी से सामूहिक रूप से नमाज पढ़ने से मनुष्य में और कामों में भी पाबन्दी की आदत पड़ जाती है।

(२) दिन रात में मुहल्ले के सब मुसलमान भाइयों का एक जगह जमाव हो जाता है जिससे बड़े-बड़े लाभ उठाये जा सकते हैं।

(३) जमाअत की पाबन्दी करने से पांचों नमाजों की पाबन्दी प्राप्त हो जाती है और जो लोग जमाअत की पाबन्दी नहीं करते देखा गया है कि उनकी नमाज़ें बीच-बीच अवश्य छूटती रहती हैं। (४) एक बहुत बड़ा लाभ यह है कि सामूहिक रूप से नमाज पढ़ने वाले हर मनुष्य की नमाज पूरे समूह (जमाअत) की नमाज का एक भाग मानी जाती है। समूह (जमाअत) में अल्लाह के ऐसे पवित्र और सच्चे बन्दे भी होते हैं। जिनकी नमाज़ें बड़े धुन ध्यान वाली और बड़ी अच्छी होती हैं और उनको अल्लाह तआला स्वीकार कर लेता है (कबूल कर लेता है) और अल्लाह तआला की दया से यही समझना ठीक है कि जब वह समूह के कुछ पवित्र बन्दों की नमाजें कबूल करेगा तो उनके साथ नमाज पढ़ने वाले दूसरे मुसलमानों की नमाजें ठुकरा नहीं देगा चाहे उनकी नमाजें वैसी अच्छी न हों। फलों का जो ढेर का ढर मोल लेने वाले ने एक साथ मोल लेलिया उस ढेर के बढ़िया और घटिया सभी फलों को उसने अवश्य ले लिया।

है वह दयालु करुणानिधान ऐसा दयालु ऐसा उदार।
देता है दुर्जन को क्षमा सतसंग से करके सुधार॥
जिस नाव पर सन्तों सहित बैठे कोई पापी कुजन।
हो जायगी जब नाव पार डूबेगा पापी किस प्रकार॥

इसलिये हम में से हर एक मनुष्य को सोचना चाहिये कि बिना किसी बड़ी मजबूरी के जमाअत की नमाज का खो देना

अपने को कितने बड़े प्रतिफल (सवाब) से और कितनी बरकतों से दूर कर देना है।*

धुन और ध्यान के साथ नमाज़ पढ़ने पर बल और उसकी उत्तमता

लीन होकर (जी लगा कर) और ध्यान देकर नमाज पढ़ने का अर्थ यह है कि अल्लाह तआला को हर जगह और हर समय सब कुछ देखने और सुनने वाला समझते हुए नमाज इसतरह पढ़ी जाय कि दिल अल्लाह तआला के प्रेम से भरा हुआ हो, उसकी बड़ाई और उसके डर से सहमा हुआ हो जैसे कोई अपराधी किसी बड़े से बड़े बादशाह के सामने खड़ा हुआ हो। नमाजी जब नमाज के लिये खड़ा हो तो उसको यह समझना चाहिए कि मैं अपने प्रभु और स्वामी, अल्लाह तआला की सेवा में उपस्थित (हाजिर) हूँ और उसके गुन गाने के लिए खड़ा हुआ हूँ, रुकू करे तो समझे कि मैं अपने मालिक के सामने झुका हुआ हूँ, जब सजदह करे तो सूचे कि मैं अपने पैदा करने वाले अल्लाह के सामने अपना माथा टेक रहा हूँ और सबसे बड़े स्वामी के सामने सबसे छोटा बन कर अपनी छुटाई और बल हीनता प्रकट (जाहिर) कर रहा हूँ। साथ ही यह भी करे कि खड़े होने की दशा (हालत) में रुकू की दशा में और सजदे आदि की दशा में

---

*यह बात ध्यान में रहे कि सामूहिक रूप से (जमाअत) से नमाज़ पढ़ने के लिए आज्ञा पर जो इतना बल दिया गया है वह पुरुषों ही के लिए है। हदीस शरीफ़ में खोल कर बयान कर दिया गया है कि स्त्रियों को अपने घर में नमाज़ पढ़ने का सवाब मसजिद में नमाज़ पढ़ने के मुकाबिले में अधिक मिलता है।

जो कुछ पढ़ा जाता है उस सबको समझ-समझ कर पढ़े। नमाज का जो स्वाद है वह तभी ठीक-ठीक मिल सकता है जबकि जो कुछ उसमें पढ़ा जाता है उसको समझ-समझ कर पढ़े। नमाज में जो कुछ पढ़ा जाता है उसके अर्थ को समझ लेना और याद कर लेना बहुत सहज है और उसमें कोई कठिनाई नहीं है।

नमाज में लीनता (खुशू) ध्यान और अल्लाह तआला की ओर दिल का झुकाव नमाज की जान है। अल्लाह तआला के जो बन्दे ऐसे ध्यान और ऐसी लीनता से नमाज पढ़ते हैं उनकी मुक्ति (नजात) और सफलता बिलकुल तै है। पवित्र कुरआन में है :—

कद + अफ़ + लहल + मूमिन + नल्लज़ी + नहुम + फ़ी + सला-तिहिम ख़ाशिउन०

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلٰوتِهِمْ خَاشِعُوْنَ ۝

इसका अर्थ यह है कि सफल हैं वह ईमान वाले जो अपनी नमाज लीनता के साथ पढ़ते हैं।

एक पवित्र हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि—"पाँच नमाज अल्लाह तआला ने अनिवार्य (फर्ज) की हैं जिसने इनके लिये भली भाँति वज़ू किया और ठीक समय पर इनको पढ़ा और रुकू व सजदह भी जैसे करना चाहिए उसने वैसे ही किया और लीन होकर और ध्यान देकर उनको अदा किया तो ऐसे बन्दे के लिये अल्लाह का निर्णय (फैसला) है कि उसको क्षमा (मुआफी) दे देगा और जिसने ऐसा न किया और भली भांति नमाज न पढ़ी तो उसकी क्षमा के लिये अल्लाह का कोई वचन (वादा) नहीं है चाहेगा तो

उसको क्षमा कर देगा और चाहेगा तो उसे दण्ड (अजाब) देगा। (मुस्नद अहमद व सुनने अबू दाऊद) इसलिये अगर हम चाहते हैं कि प्रलोक (आखिरत) के दण्ड से छुटकारा पा जायें और अल्लाह तआला हम को अवश्य ही क्षमा दे दें तो हम को चाहिए कि इस पवित्र हदीस के अनुसार पाँचों नमाजें अच्छे से अच्छे ढंग से पढ़ा करें।

नमाज़ पढ़ने का नियम

जब नमाज का समय आवे तो हमको चाहिये कि हम पहले भली भांति वज़ू करें और यों समझें कि अल्लाह तआला के दरबार में पहुँचने के लिये और उसकी पूजा के लिये यह पवित्रता (पाकी) और सफाई आवश्यक है। यह अल्लाह तआला की दया है कि उसने वज़ू में भी हमारे लिये बड़ी बरकते रक्खी हैं। पवित्र हदीस में है कि वज़ू में शरीर (बदन) के जो भाग धोए जाते हैं इन अंगों से होने वाले पाप वज़ू के पानी से धुल जाते हैं अर्थ यह है कि क्षमा (मुआफ) कर दिये जाते हैं। इन पापों की गन्दगी वज़ू के जल से धुल जाती है। वज़ू करके जब हम नमाज़ के लिये खड़े होने लगें तो चाहिए कि भली भांति दिल में यह ध्यान जमायें कि हम पापी बन्दे अपने उस स्वामी के सामने खड़े हो रहे हैं जो हमारी ढकी छुपी सब भलाइयाँ और बुराइयाँ जानता है और कियामत के दिन हमको उसके सामने खड़े होना है। फिर जिस समय की नमाज पढ़नी हो उसी समय को ध्यान में रखकर कानों तक हाथ उठा कर दिल और जबान से कहना चाहिए "अल्लाहु अक्बर" (अर्थ यह है कि अल्लाह बहुत बड़ा है) फिर हाथ बाँध कर और अल्लाह तआला के दरबार में खड़े हुए होने का ध्यान जमा कर यह पढ़ना चाहिये जो नीचे लिखा जाता है।

(१) सुब + हा + न + क + अल्लाहुम + म + वबि + हम + दि + क + व + तबा + र + कस्मु + क + व + तआला + जद्दु + क + वला + इला + ह + गैरु + क।

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَ تَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ -

इसका अर्थ यह है कि "हे मेरे अल्लाह ! तू पवित्र है। और सब प्रसंशाये (तारीफें) अकेले तेरे ही लिये है। और तेरा नाम बरकत वाला है। और तेरी शान ऊँची है और तेरे सिवा कोई पूजे जाने के काबिल नहीं है।

(२) अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शै + तानिर्रजीम

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

अर्थ यह है "मैं अल्लाह की शरण (पनाह, बचाव) लेता हूँ धिक्कारे हुए शैतान से।

(३) बिस + मिल्लाहिर्रहमानि-र्रहीम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अर्थ यह है—'मैं आरम्भ (शुरू) करता हूँ अल्लाह' के नाम से जो बड़ा दयामय और बड़ा ही कृपाशील है।

(४) अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल + आ + ल + मीन। अर्रह मानिर्रहीम। मालिकि यौमिद्दीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مَالِكِ

يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝

اٰمِيْنْ ۝

ईया + क + नाबुदु व ईया + क + नस्तईन ।

इह + दिनस्सिरातल मुस्तक़ीम । सिरातल्लज़ी + न + अन + अम + त अलैहिम + गैरिल + मग़ + ज़ूबि अलैहिम + वलज्जाल्लीन आमीन ।

अर्थ यह है : सारी प्रशंसायें (तारीफें) अल्लाह के लिये हैं जो सब संसारों का पालने वाला है । बड़ी दया वाला और बहुत ही कृपाशील है । बदला मिलने के दिन का स्वामी है । हम तेरी ही पूजा करते हैं और तुझ से ही सहायता (मदद) माँगते हैं । हे अल्लाह हमको सीधे रास्ते पर चला । उन अच्छे बन्दों के मार्ग पर जिनपर तूने पुरस्कार (इनाम) बरसाए न उन पर तेरा कोप (ग़ज़ब) और क्रोध (ग़ुस्सा) हुआ और न वह सीधे रास्ते से भटके । हे अल्लाह मेरी यह प्रार्थना स्वीकार (क़बूल) कर ले । इसके बाद कोई सूरत (अध्याय) या किसी सूरत का कोई भाग कम से कम तीन आयतों वालों वाला पढ़े । हम यहाँ पवित्र कुरआन की छोटी छोटी चार सूरतें उल्था सहित (तर्जुमें के साथ) लिखते हैं ।

١- وَالْعَصْرِ ۝ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

(१) वल + अस्र + इन्नल + इन्सा + न + लफी खुस्र । इल्ल-ल्लजी + न + आ + मनू + व + अमिलुस्सलिहाति व + तवा + सौबिल + हक्क । व + तवा + सौ बिस्सब्र ।

अर्थ यह है—सौगन्द (क़सम) है समय और काल की

(जमाने की) कि सारी मानव जाति (आदमी) टोटे और घाटे में है उनको छोड़ कर जो ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे काम किये और एक दूसरे को सच्चाई और धर्म की बातें सौंपीं।

(२) कुल+हुवल्लाहु+अहद+अल्लाहुस्समद। लम+यलिद व लम+यूलद। वलम+यकुल्लहू+कुफुवन+अहद।

٢- قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۝ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝-

अर्थ यह है—कह! अल्लाह एक है। अल्लाह को किसी सहारे की आवश्यकता नहीं है और वह किसी का मंगता नहीं है और उसके मंगते सब हैं। न उसके सन्तान है। न वह किसी की सन्तान हैं। और न कोई उसके बराबर है।

(३) कुल + अऊजु + बिर ब्बिल + फलक + मिन + शर्रि मा + खलक। वमिन+शर्रि गासिकिन इजा वकब वमिन शर्रिन+नफ्फासाति फ़िल उकद। वमिन शर्रि हासिदिन इज। हसद

٣- قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝

अर्थ यह है :—कह! मैं शरण लेता हूँ प्रातः काल के पालन हार की। बुराई से हर उस चीज की जो उसने पैदा की है। और अँधेरे की बुराई से जब वह छा जाय। और गाँठों में फूंकने वालियों की बुराई से। (टोने टोटके करने वाली स्त्रियों की बुराई से) और डाह करने वाले की बुराई से जब वह डाह करे।

(४) क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास।

मलिकिन्नास ।

इलाहिन्नास ।

मिन शर्रिल वस्वासिल खन्ना-सिल्लज़ी ।

युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नास ।
मिनल जिन्नति वन्नास ।

٤ قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝
مَلِكِ النَّاسِ ۝ اِلٰهِ النَّاسِ ۝
مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝
الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ
النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ
وَالنَّاسِ ۝

अर्थ यह है :—कह ! मैं शरण लेता हूँ सब मनुष्यों के पालन हार की। सब के बादशाह की। सब के ख़ुदा को जो पूजे जाने के योग्य (क़ाबिल) है। बुरा बिचार डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से जो मनुष्यों के दिल में बुरे विचार डालता है। चाहे वह जिनों में से हो चाहे आदमियों में से ।

तो बस यह याद रखिये कि अल्हम्दु शरीफ़ के बाद क़ुरआन शरीफ़ की कोई सूरत या उसका कुछ भाग पढ़ना चाहिये। हर नमाज़ में इतनी क़िरअत करना (इतना क़ुरआन पढ़ना) आवश्यक है ।

जब इतनी क़िरअत कर चुके तो अल्लाह तआला की बड़ाई का ध्यान जमाए हुए दिल और ज़बान से "अल्लाहु अक्बर" कहता हुआ रुकू में चला जाय। और कम से कम तीन बार यह तस्बीह कहे ।

सुब + हा + न + रब्बि + यल + अज़ीम

अर्थ यह है :—पवित्र है मेरा पालन हार जो बहुत बड़ाई वाला है।

जिस समय अल्लाह की पवित्रता और बड़ाई का यह वाक्य रुकू में कह रहा हो उस समय दिल में भी उसकी पवित्रता और बड़ाई का पूरा-पूरा ध्यान होना चाहिये। उसके बाद रुकू से सर उठाते हुए कहे :—

समि + अल्लाहु + लिमन + हमिदह ।

अर्थ यह है :—अल्लाह ने उस बन्दे की सुन ली जिसने उसकी प्रशंसा बखानी।

इसके बाद खड़े हुए यह कहे :—

अल्ला हुम्म + रब्बना + व + लकल हम्द ।

अथ यह है :—हे हमारे मालिक और पालनहार सब प्रशंसा तेरे ही लिये हैं।

इसके बाद फिर दिल और ज़बान से "अल्लाहु अकबर" कहता हुआ अपने प्रभु के सामने सजदे में गिर जाय और सजदे में माथा और नाक टेके हुए कम से कम तीन बार कहे :—

सुब + हा + न + रब्बियल + आला

अर्थ यह है :—पवित्र है मेरा पालनहार जो बहुत बड़ाई वाला है। सजदे की दशा में जिस समय यह वाक्य ज़बान पर हो उस समय दिलमें अपने तुच्छ और छोटे होने का ध्यान होना चाहिये। यह ध्यान जितना प्रबल और गहेरा होगा नमाज़ उतनी ही बहुमूल्य (क़ीमती) और अच्छी होगी क्योंकि यही ध्यान नमाज़ का प्राण है।

एक सजदह पूरा हो जाय तो 'अल्लाहु अक्बर" कहते हुए उठकर बैठ जायँ। फिर सावधान होकर "अल्लाहु अक्बर" कहते हुए दूसरे सजदे में जायँ और पहले सजदे की तरह यह दूसरा सजदह भी पूरा करें और "अल्लाहु अक्बर" फिर कहते हुए दूसरी रकअत के लिये खड़े हो जायँ। यह एक रकअत का बयान हुआ फिर जितनी रकअत नमाज़ पढ़नी हो इसी तरह पढ़नी चाहिये। अलबत्ता यह ख़याल रखना चाहिये कि "सुब + हा + न + कल्लाहुम्मम + व + बिहमदि + क। पहली ही रकअतमें पढ़ा जाता है।

नमाज के बीच में एक बार दूसरी रकअत पढ़कर बैठते हैं और अगर दो रकअत से अधिक रकओं वाली नमाज़ है तो अंतिम (आख़िरी) रकअत पूरी करके भी बैठते हैं और जब बैठते हैं तो 'अत्तहीयात" पढ़ते हैं जो मानो नमाज़ का निचोड़ है और वह यह है :—

अन्त + हीयातु + लिल्लाहि वस्स + ल + वातु + वत्तय्यिबातु + अस्स + लामु + अलै + क + ऐय्यु + नबीय + व + रहम-तुल्लाहि व + ब + र + कातुहू अस्सलामु अलैना व + अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन। अश + हदु + अल्ला + इला + ह इल्लल्लाहु + व + अश + हदु + अन्न + मुहम्मदन + अब्दुहू + व + र + सलुह।

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ
وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا
النَّبِيُّ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ؕ
اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ
اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अर्थ यह है :—शिष्टाचार (अदब) और प्रतिष्ठा (ताज़ीम)

और प्रशँसा के सारे शब्द अकेले अल्लाह के लिये हैं और सारी पूजा और दान अल्लाह ही के लिये हैं। सलाम हो तुम पर हे नबी (पैग़म्बर) और अल्लाह की दया और बरकतें हों तुम पर हे नबी। सलाम हो हम पर और अल्लाह के सब नेक बन्दों पर। मैं गवाही देता हूँ कि सिवा अल्लाह के कोई पूजा के योग्य नहीं। और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद उसके बन्दे और उसके पैग़म्बर हैं।

तीन रकअत और चार रकअत वाली नमाज़ों में जब दूसरी रकअत पर बैठते हैं तो केवल (सिर्फ़) यह अत्तहीयात ही पढ़ी जाती है और आख़िरी रकअत पर जब बैठते हैं तो अत्तहीयात के बाद दरूद शरीफ़ और एक दुआ भी पढ़ते हैं। हम उन दोनों को यहाँ लिखते हैं।

अल्लाहुम्म + सल्लि + अला मुहम्मदिवँ + व + अलाआलि मुहम्मदिन + कमा सल्लै + त + अला इबराही + म + व + अला + आलि + इबराही + म + इन्न + क + हमीदुम + मजीद। अल्ला-हुम्म + बारिक + अला + मुहम्म-दिवँ + व + अला + आलि + मुहम्मदिन + कमा + बारक + त + अला + इबराही + म + व + अला + आलि + इबराही + म + इन्न + क + हमीदुम + मजीद।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ
كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ
اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ٥
اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ
كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ
اِبْرَاهِيْمَ
اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ٥

अर्थ यह है:—हे अल्लाह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उनकी सन्तान पर और उनके पीछे चलने

वालों पर विशेष दया कर जैसी दया तूने हजरत इबराहीम अलैहिस्सलाम पर और उनकी सन्तान पर और उनके पीछे चलने वालों पर की। तू बड़ी प्रशंसा वाला और बहुत बड़ाई वाला है।

हे अल्लाह हजरत मुहम्मद पर, उनकी सन्तान पर और उनके पीछे चलने वालों पर बरकतें उतार जैसे तूने हजरत इबराहीम अलैहिस्सलाम पर, उनकी सन्तान पर और उनके पीछे चलने वालों पर बरकतें उतारी तू बड़ी प्रशंसा वाला है और बहुत बड़ाई वाला है।

यह दरुद शरीफ वास्तव में (दर अस्ल) रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप की आल के लिये यानी आपके घर वालों के लिये और आपसे विशेष धार्मिक नाता रखने वालों के लिये रहमत और बरकत की प्रार्थना है। हम को दीन की नेमत और नमाज की पूँजी हुज़ूर सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथों से मिली है इसलिये अल्लाह तआला ने हुज़ूर के इस दान और उपकार (एहसान) पर धन्यवाद के तौर पर हमारा यह कर्तव्य (फरीजा) बना दिया है कि जब नमाज पढ़ें तो उसके आखिर में हुज़ूर के लिए और हुज़ूर के कार्य और संदेश को अपनाने और फैलाने वाले संतों के लिये रहमत और बरकत की प्रार्थना (दुआ) भी करें। इसलिये हमको चाहिये कि हर नमाज के आखिर में "अत्तहीयात" पढ़ने के बाद हम हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इसउपकार (एहसान) की याद करके सच्चे दिल से उन पर यह दुरूद शरीफ़ पढ़ें और उनके लिये रहमत और बरकत की प्रार्थना (दुआ) करें।

फिर दुरुद शरीफ़ के बाद अपने लिये यह प्रार्थना करें और

और उसके बाद सलाम फेर दें:—

अल्लाहुम्म + इन्नी + जलम्तु + नफ्सी + जुल्मन + कसीरौं + व + इन्नहू + ला + यग़ + फ़िरुज्जूनू + ब + इल्ला + अन + त + फग़ + फ़िर्ली + मग़फ़ि + रतम + मिन + इन्दि + क वर्हम + नी + इन्न + क + अन्तल + ग़फ़ूरुर्रहीम।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْ لِیْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِیْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ۔

अर्थ यह है:—हे मेरे अल्लाह मैंने अपनी जान पर बड़ा अत्याचार किया और तेरी आज्ञाओं पर चलने में मुझसे बड़ा अपराध हुआ और तेरे अलावा कोई पापों का क्षमा करने वाला नहीं है। इसलिये केवल तू ही मुझे अपनी दया से क्षमा करदे और मुझ पर कृपा कर। तू बड़ा क्षमा करने वाला दयालु है।

इस प्रार्थना में अपने पाप और अपना अपराध माना गया है। और अल्लाह तआला से क्षमा और दया की प्रार्थना की गई है। बन्दे के लिये यही मुनासिब है कि वह नमाज़ जैसी ऊँची पूजा करके भी अपना दोष माने और अपने को अपराधी समझे और अल्लाह की क्षमा और दया ही को अपना सहारा बनाए, और पूजा का कोई घमन्ड उसमें पैदा न हो। क्योंकि अल्लाह तआला की इबादत हमसे ठीक-ठीक और पूरे तौर से कहाँ हो सकती है?

इस पाठ में नमाज़ के बारे में जो कुछ बयान करना था वह सब बयान किया जा चुका। आखिर में हम फिर कहते हैं कि नमाज़ वह पारस है जो मनुष्य के दिल के लोहे को सोना

बना सकती है, और बिगड़े हुए आदमी को फ़रिश्तह बना सकती है। हाँ शर्त यह है कि नमाज़ को ध्यान के साथ समझ-समझ कर लीन होकर अदा किया जाय जिसका बयान हमने ऊपर किया है।

भाइयो नमाज़ की बड़ाई और उसका मूल्य समझो।

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी उम्मत के नमाज़ पर जमे रहने की इतनी चिन्ता थी कि अपने पवित्र जीवन की बिल्कुल आख़िरी घड़ी में जबकि हुज़ूर इस दुनिया से बिदा हो रहे थे और ज़बान से कुछ फ़रमाना भी कठिन था उस समय पर भी आपने अपनी उम्मत को नमाज़ पर जमे रहने की बड़ी ताकीद के साथ वसीयत (आख़िरी उपदेश) फ़रमाई थी। इसलिये जो मुसलमान आज नमाज़ नहीं पढ़ते और नमाज को रिवाज देने की कोई कोशिश नही करते वह ख़ुदा के लिये सोचें कि क़ियामत में वह किस मुँह से हुज़ूर के सामने जा सकेंगे। जबकि वह हुज़ूर की आख़िरी वसीयत को भी पैरों से रौंद रहे हैं। आओ हम सब हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम के शब्दों में प्रार्थना करें।

रब्बिज + अल्नी + मुक़ीमस्स-लाति वमिन ज़ुर्रीयती। रब्बना व तक़ब्बल दुआ + इ।	رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوۃِ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ ٥ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ٥
रब्ब + नग + फ़िर्ली + वलि, + वालि + दय्य वलिल + मूमिनी + न + यौ + म यक़ूमुल + हिसाब।	رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ ٥ -

अर्थ यह है :—हे पालनहार आप मुझको और मेरी सन्तान को नमाज़ का ठीक करने वाला बना दीजिये। हे पालनहार मेरी प्रार्थना क़बूल कर लीजिये। हे पालनहार मुझको और मेरे माँ बाप को और ईमान वालों को क़ियामत के दिन क्षमा कर दीजिये।

—:o:—

इस्लाम का तीसरा पाठ

ज़कात

इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं में ईमान और नमाज़ के बाद ज़कात का स्थान है यानी वह इस्लाम का तीसरा खम्बा है। ज़कात का अर्थ यह है कि जिस मुसलमान के पास इस्लाम धर्म की बताई हुई एक लगी बँधी पूंजी हो वह हर साल हिसाब लगा कर अपनी पूंजी का चालीसवाँ भाग मुसलमान गरीबों को दिया करें या इस्लाम की बताई हुई दूसरी राहों में खर्च किया करें।

ज़कात का अनिवार्य होना और उसकी बड़ाई।

क़ुर्आन शरीफ़ में जगह-जगह पर नमाज़ के साथ-साथ ज़कात पर बल दिया गया है। अगर आप क़ुर्आन शरीफ़ का पाठ (तिलावत) करते होंगे तो उसमें बीसों जगह पढ़ा होगा "अक़ामुस्सला+त+आतुज्ज़का+त। यानी नमाज़ ठीक-ठीक खड़ी करो और ज़कात दिया करो और कई जगह मुसलमानों की आवश्यक पहचान यह पढ़ी होगी। "अल्लज़ी+न+युक़ीमूनस्सला+त वयूतूनज्ज़का+त" यानी वह नमाज़ को ठीक-ठीक खड़ी करते हैं और ज़कात अदा करते हैं। इससे यह मालूम हुआ कि जो लोग नमाज़ नहीं पढ़ते और ज़कात नहीं देते वह सच्चे मुसलमान नहीं हैं क्योंकि इस्लाम की जो बातें और जो पहचानें असली मुसलमानों में होनी चाहियें वह उनमें नहीं हैं।

इसलिये नमाज़ न पढ़ना और ज़कात न देना क़ुर्आन शरीफ़ के बयान को देखते हुए मुसलमान होने की पहचान नहीं है बल्कि काफ़िरों और मुशरिकों का चिन्ह है। नमाज़ के बारे में तो, सूरए रूम के एक वाक्य में (आयत में) फ़रमाया गया है :—

अक़ीमुस्सला + त + वला + तकूनू मिनल + मुश + रिकीन।
(सूरए रुम रुकू ४)

أَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُونُوا
مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ (الروم ـ ع٤)

अर्थ यह है :—नमाज़ क़ायम करो और नमाज़ को छोड़ कर मुशरिकों में से न हो जाओ। और ज़कात न देने को मुशरिकों काफ़िरों की पहचान सूरए फ़ुस्सिलत की इस आयत में बतलाया गया है :—

व वैलुल्लिल + मुशरिकी नल्लज़ी + ला यूतूनज्ज़का + त + वहुम बिल + आख़ि + रति + हुम + काफ़िरुन।
(सूरए फ़ुस्सिलत रुकू १)

وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ الَّذِيْنَ لَا
يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ
هُمْ كَافِرُوْنَ ۝ (فُصِّلَتْ ـ ع١)

अर्थ यह है :—उन मुशरिकों के लिये बड़ी दुर्गत है और उनका अन्त बहुत बुरा होने वाला है जो ज़कात अदा नहीं करते और वह क़ियामत को न मानने वाले और काफ़िर हैं।

ज़कात न देने का कड़ा दण्ड।

ज़कात न देने वालों का जो बुरा नतीजा क़ियामत के दिन होने वाला है और जो दण्ड उनको मिलने वाला है वह इतना

कड़ा है कि उसके सुनने ही से रोंगटे खड़े हो जाते हैं और दिल काँपने लगते हैं।

सुनिये सूरए तौबह में फ़रमाया गया है :—

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ
وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ
اَلِيْمٍ يَوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ
جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ
وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ هٰذَا
مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا
مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ۝ (سورة توبه ع ٥)

वल्लज़ी + न + यक + निज़ूनज्ज़ + ह + व वल + फ़िज्ज़ + त + वला + युने + फ़िक़ू + नहा फ़ी + सबी लिल्लाहि + फ + बश्शिर + हुम + बि अज़ाबिनअलीम + यौ + म + युह + मा + अलहाफ़ी नारि जहन्न + म + फ़तुक + वा + बिहा + जिबाहुहुम + व + जुनूबुहुम व + ज़ुहूरुहुम + हाज़ा मा + क़नज़्तुम + लिअन्फ़ुसिकुम + फ़ज़ूकू + मा + कुन्तुम + तक + निज़ून।

(सूरए तौबह रुकू. ५)

अर्थ यह है :—और जो लोग सोना चाँदी यानी धन दौलत जोड़ कर रखते हैं और उसको खुदा की राह में खर्च नहीं करते यानी उन लोगों पर जो ज़कात आदि अनिवार्य (फ़र्ज़) है वह अदा नहीं करते, हे रसूल ! आप उनको कड़े और दुख देने वाले दण्ड का संदेश सुना दीजिये कि जिस दिन उनकी इस दौलत को नर्क की आग में तपाया जायगा फिर उससे उन लोगों के माथों और करवटों को दाग़ा जायगा तो उस दिन उनसे कहा जायगा कि यह है तुम्हारा वह धन दौलत जिसको तुमने अपने वास्ते जोड़ा था। इसलिये अपनी जोड़ी हुई दौलत का स्वाद (मज़ा) चक्खो। (सूरूए तौबह रुकू ५)

इस ऊपर वाली आयत (वाक्य) के अर्थ को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक हदीस में और भी खोल कर बयान किया है। उस हदीस का यह अनुवाद (तरजुमा) है :—

जिस मनुष्य के पास धनदौलत, सोना चाँदी हो और वह ज़कात आदि न देता हो तो क़ियामत के दिन उसके लिये आग की तख़्तियाँ तय्यार की जायँगी फिर उनको दोज़ख़ की आग में और भी अधिक तपाया जायगा और उनसे उस मनुष्य के माथे कों, करवट को और पीठ को दाग़ा जायगा और इसी तरह बार-बार उन तख़्तियों को दोज़ख़ की आग पर तपा-तपा कर उस मनुष्य को दाग़ा जाता रहेगा और क़ियामत के दिन की पूरी मुद्दत में इसी दण्ड को बराबर जारी रक्खा जायगा और वह मुद्दत पचास हजार साल की होगी। इस तरह पचास हजार साल तक बराबर जकात न देने वाले को यही कड़ा दण्ड (अज़ाब) दिया जाता रहेगा।

कुछ हदीसों में जकात न देने वालों के लिये इसके अलावा और दूसरे प्रकार के कड़े दण्डों का बयान भी किया गया है। अल्लाह तआला हमको अपने दण्डों से बचाएँ। अल्लाह तआला ने जिन लोगों को धनी बनाया है वह अगर ज़कात न दें और अल्लाह तआला के बताए हुए रास्ते मे ख़र्च न करें तो बेशक वह बड़े अत्याचारी हैं और अल्लाह तआला के उपकार (एहसान) को भुलाने वाले हैं और ऐसे लोगों को क़ियामत के दिन जो बड़े से बड़ा दण्ड दिया जाय वह ठीक है।

ज़कात न देना अत्याचार है और उपकार (एहसान) को ठुकराना है।

फिर यह भी सोचना चाहिए कि ज़कात और (दान) से

अपने ही गरीब भाइयों की सेवा होती है इसलिये जकात न देना उन गरीबों पर अत्याचार करना है और उनका हक मारना है।

भाइयो ज़रा सोचो कि हमारे और आपके पास जो कुछ माल और धन है वह सब अल्लाह तआला ही का दिया हुआ तो है और हम ख़ुद उसी के बन्दे और उसी के पैदा किये हुए हैं इसलिए अगर वह हमसे हमारा सारा धन भी माँगे बल्कि जान देने को भी कहे तो हमारा कर्तव्य (फर्ज़) है कि बिना कारण पूछे सब कुछ देदें। यह तो उसकी बड़ी दया है कि अपने दिये हुए माल में से चालीसवाँ भाग ज़कात देने की आज्ञा दी है।

ज़कात का बदला (सवाब)

फिर अल्लाह तआला ही की दूसरी बहुत बड़ी दया यह है कि उसने ज़कात और दान (सदक़े) का बहुत बड़ा प्रतिफल (सवाब) रक्खा है। ज़कात या दान (सदक़ा) देने वाला जो कुछ देता है अल्लाह तआला ही के दिये हुए माल में से देता है इस लिये अगर अल्लाह तआला उस पर कोई सवाब न देता तो बिल्कुल न्याय की बात होती, लेकिन यह उसकी दया है कि उसके दिये हुए माल में से जो कुछ हम ज़कात या दान (सदक़े) के तौर पर उसकी राह में खर्च करते हैं तो वह उससे बहुत ख़ुश होता है और उस पर बड़े-बड़े सवाबों का वादा करता है। क़ुरआन शरीफ़ ही में है कि:—

मَثَلُ الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۝ وَاللَّهُ يُضَاعِفُ لِمَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنفَقُوا مَنًّا وَلَا أَذًى لَّهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ (سورۂ بقرہ ع ۳٦)

म+स+लुल्ल ज़ी+न+युन +फ़िक़ू+न+अम+ वा+ लहुम +फ़ी+सबीलिल्लाहि क+स+ सलि+हब्बतिन+अम्ब+तत+ सब+अ + सनाबि+ ल+फ़ी+ कुल्लि+ सुम + बु + लतिम+ मिअतु+हब्बह+वल्लाहु+ युज़ा-इफु+लिमैंय्य+शाउ + वल्लाहु +वासिउन+अलीम + अल्लज़ी +न+युन+फ़िक़ू +न+अम+ वा+लहुम+फ़ी+ सबीलिल्लाहि +सुम्म+ला+युत+बिऊ + न +मा+अन+फ़क़ू+मनों+वला +अज़ल्ल+हुम+अज + रुहुम +इन+ दे + रब्बिहिम वला+ ख़ौफ़ुन+अलैहिम + वलाहुम यह +ज़नून। (सूरए ब+ क़+रह) (रुकू: ३६)।

अर्थ यह है:—जो लोग अल्लाह की राह में अपना माल ख़र्च करते हैं उनके इस ख़र्च करने का उदाहरण (मिसाल) उस दाने का है जिससे पौदा उगे और उससे सात बालियाँ निकलें और हर बाली में सौ दाने हों। और जिसके वास्ते चाहता है अल्लाह तआला और भी बढ़ा देता है। वह बड़ी अधिकता (ज़ियादती) वाला है और सब कुछ जानता है। जो लोग अपना माल ख़ुदा की राह में ख़र्च करते हैं फिर न वह अपना उपकार (इहसान) जिताते हैं न दुख पहुँचाते हैं, उनके लिये

उनके रब (पालनहार) के पास बड़ा प्रतिफल (सवाब) और उनको क़ियामत में कोई डर या हानि न होगी (सूरए ब+क़रह) (रुकू : ३६)।

इस आयत (क़ुर्आन का एक पूर्ण वाक्य) में ज़कात देने वालों और ख़ुदा की राह में ख़र्च करने वालों के लिए अल्लाह तआला की ओर से तीन वादे किये गए ह :—

एक यह कि जितना वह ख़र्च करते हैं अल्लाह तआला उनको इसके बदले में सैकड़ों गुना अधिक देगा।

दूसरे यह कि उनको बहुत बड़ा बदला और सवाब मिलेगा और बड़ी-बड़ी नेमतें मिलेंगी। तीसरे यह कि क़ियामत के दिन उनको कोइ डर और खटका न होगा। सुब+हा नल्लाह! भाइयो! (सहाबए किराम को (रसूल के माननीय सत सँगियों को) अल्लाह तआला के इन वादों पर पूरा विश्वास (यक़ीन) था इसलिये उनकी हालत यह थी कि जब ख़ुदा की राह में दान देने (सदक़ा करने) की अच्छाई और प्रतिफल (सवाब) की आयतें हुज़ूर पर उतरीं और उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उनका बयान सुना तो उनमें जो ग़रीब थे और जिन के पास दान देने (सदक़ा करने) के लिये पैसा भी न था वह भी दान देने के लालच में मज़दूरी करने के लिये घरों से निकल पड़े और अपनी पीठ पर बोझ लाद-लाद कर उन्होंने पैसे कमाए और ख़ुदा की राह में दान दिया।*

ज़कात की आवश्यकता और उसकी बड़ाई के बारे में यहाँ हम रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की केवल फ़क़त)

---

* रियाज़ुस्सालिहीन पृष्ठ २८ ससँकत बुख़ारी व मुसलिम।

एक हदीस और लिखते हैं। हदीस की प्रसिद्ध (मशहूर) पुस्तक अबूदाऊद शरीफ़ में है कि:—

तीन बातें हैं जिसने उनको पकड़ लिया उसने ईमान का स्वाद पा लिया। एक यह कि अकेले अल्लाह ही की पूजा (इबादत) करे। दूसरे यह कि : ला+इला+ह+इल्लल्लाह पर उसको पूरा यक़ीन हो और तीसरे यह कि हर साल दिल की पूरी ख़ुशी के साथ अपने माल की ज़कात अदा करे। (जिसको यह तीन बातें मिल जाँय उसको ईमान का स्वाद (मज़ा) और ईमान की मिठास मिल जायगी। अल्लाह तआला हमको ईमान की मिठास और उसका मज़ा प्रदान करें (दें)।

ज़कात और दान के कुछ सांसारिक (दुनियावी) लाभ (फ़ायदे)

ज़कात और दान का जो सवाब और जो पुरस्कार (इनआम) अल्लाह तआला की ओर से प्रलोक (आख़िरत) में मिलेगा उसके अलावा इस दुनिया के जीवन में भी उससे बड़-बड़े लाभ (फ़ायदे) होते हैं। जैसे यह कि ज़कात और दान देने वाले मुसलमान का दिल ख़ुश और पूरा रहता है। ऐसे सज्जन से ग़रीब लोगों को डाह नहीं होती बल्कि वह उसका भला चाहते हैं। उसके लिये प्रार्थना (दुआ) करते हैं और उनके लिये अच्छी इच्छाएँ रखते हैं और उसको प्रेम से भरी हुई आँख से देखते हैं। लोगों की निगाह में उसका बड़ा आदर होता है और ऐसे सज्जन को सब की हमदर्दी और सबका प्रेम प्राप्त (हासिल) हो जाता है। अल्लाह तआला उसके धन में बड़ी बरकतें देते हैं। रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि :—अल्लाह

तआला का आदेश (हुक्म) है कि हे आदम के पुत्र ! तू मेरे ग़रीब बन्दों पर और दूसरे अच्छे अवसरों (मौकों) पर मेरा दिया हुआ धन ख़र्च किये जा मैं तुझको बराबर देता रहूँगा। एक दूसरी हदसीस में है कि :—मैं इस बात पर क़सम खा सकता हूँ कि दान करने से कोई आदमी ग़रीब न होगा। अल्लाह तआला हमारी सहायता करें कि रसू—लुल्लाहि सल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम की आज्ञाओं पर और इसलाम के सुझाओं पर चल कर दुनिया और आख़िरत की नेमतें और दौलतें प्राप्त (हासिल) करें।

—:o:—

इसलाम का चौथा पाठ

रोज़ह

रोजे की बड़ाई और उसका अनिवार्य (फ़र्ज़) होना।

इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं में ईमान, नमाज़ और ज़कात के बाद रोज़े का स्थान है। .कुर्आन शरीफ़ में फरमाया गया है कि :—

या + ऐय्यु + हल्लजी + न +
आ + मनू कुति + ब + अलै +
कुमुस्सियामु कमा + कुति + ब +
अलल्लजी + न + मिन + कब +
लिकुम + ल अल्ल + कुम + तत्त +
कून। (ब + क + रह रुकू २३)

يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ
الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝
(بقرہ ع ۲۳)

अर्थ यह है:—हे ईमान वालों, तुम पर रोज़े रखना अनिवार्य (फ़र्ज़) किया गया है जैसा कि तुमसे पहलो उम्मतों पर भो अनिवार्य किया गया था ताकि तुम्हारे अन्दर अल्लाह से डरकर पाप से रुक जाने का गुण पैदा हो जाय।

इस्लाम में रमज़ान के पूरे महीने के रोज़े रखना अनिवार्य

(फ़र्ज़) है। और जो मनुष्य बिना किसी मजबूरी के एक रोज़ह भी छोड़ दे वह बहुत बड़ा पापी और अपराधी है।

एक हदीस में है कि :—

> जो मनुष्य बिना किसी मजबूरी और बीमारी के रमज़ान का एक रोज़ह भी छोड़ दे वह अगर इसके बदले में जब तक जीता रहे रोजे रखता रहे तब भी उसका पूरा हक़ अदा न हो सकेगा।

रोज़ों का सवाब

रोजे में अल्लाह के लिये इबादत की नियत से रोज़ह रखने वाला खाना पीना और अपनी दूसरी इच्छाओं को छोड़ देता है और अपने मन को रोकता है इसलिये अल्लाह तआला ने भी रोज़े का सवाब बहुत बड़ा रक्खा है।

एक हदीस में है :—

> जो आदमी पूरे ईमान और यकीन के साथ और अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिये और उससे सवाब लेने के लिये रमज़ान के रोज़े रक्खे तो उसके सब पहले के पाप क्षमा कर दिये जाते हैं।

एक दूसरी हदीस में है कि :—

> बन्दों के सब अच्छे कामों के बदले के लिये एक नियम (क़ायदा) बना हुआ है और हर काम का सवाब उसी बने हुए नियम से दिया जायगा लेकिन रोज़े का सवाब इस लगे बँधे नियम से अलग है। रोजे के सवाब के बारे

में अल्लाह तआला का वादा है कि रोज़े का बदला अपने बन्दे को मैं ख़ुद ही दूंगा क्योंकि बन्दा रोज़े में मेरे लिये खाने पीने और अपने मन की दूसरी इच्छाओं का बलिदान करता है।

एक दूसरी हदीस में है कि :—

रोजेदार के लिये ख़ुशी के दो अवसर (मौक़े) हैं। एक ख़ुशी उसको इस संसार में रोज़ह खोलने के समय होती है दूसरी खुशी उसको आखिरत में अल्लाह तआला के दर्शन होने पर और अल्लाह तआला के दर्बार में जगह पाने पर होगी।

एक और हदीस में आया है कि :—

रोज़ह एक ढाल है जो दोज़ख़ की आग से बचने वाली है और एक पोढ़ी ढाल है जो दोजख़ के दण्ड से रोज़ेदार को सुरक्षित (महफ़ूज़) रखती है।

एक और हदीस में आया है कि :—

रोज़ेदार के लिये ख़ुद रोज़ह ही अल्लाह से प्रार्थना करेगा कि मेरे कारण इस बन्दे ने दिन को खाना पीना और अपने मन की इच्छाओं का छोड़ दिया था इसलिये इस बन्दे को क्षमा कर दिया जाय और इसको पूरा बदला दिया जाय। तो अल्लाह तआला रोजे की यह प्रार्थना मान लेंगे।

एक हदीस में है कि :—

रोज़ह रखने वाले के मुँह की भबक (जो क़िसी-क़िसी

समय पेट खाली होने से आने लगती है) अल्लाह तआला को मुश्क की सुगन्ध से भी अधिक भली लगती है।

इन हदीसों में रोज़े की जो महिमा बखानी गई है इसके अलावा इसकी एक बड़ी विशेषता यह है कि रोज़ह मनुष्यों को दूसरे जानदारों से अलग करता है। दूसरे सभी जानदारों का यह हाल है कि जब उनका जी चाहा खा लिया, जब जी चाहा पानी पी लिया और जब मन की इच्छा हुई अपने जोड़े से सुख और स्वाद प्राप्त कर लिया परन्तु रोज़ह रखने वाला ऐसा नहीं करता उसको भूख लगे, उसको प्यास लगे, उसके मन में जोड़े से स्वाद लेने की इच्छा उठे तो वह अपने मन को रोकता है और अपनी इच्छाओं को अल्लाह तआला की खुशी पर बलिदान करता है। न कभी खाना, न कभी पीना और न कभी अपने जोड़े से स्वाद लेना, यह विशेषता देवदूतों (फ़रिश्तों) की है। और पवित्र धर्मशास्त्र (शरीअत) के नियमों के अनुसार लगे बँधे तौर पर खाना, पीना और मन की दूसरी ठीक इच्छाओं का पूरा करना यह विशेषता केवल आदमियों ही की है। इसलिये रोज़ह रखकर आदमी दूसरे जानदारों से अलग हो जाता है और फ़रिश्तों की तरह का हो जाता है।

रोज़े का विशेष लाभ

रोज़े का एक विशेष लाभ यह है कि इससे आदमी के अन्दर अल्लाह का डर और परहेज़गारी पैदा हो जाती है। और अपने मन की इच्छाओं को अपने वश में रखने की ताक़त आती है। और अल्लाह के लिये अपनी इच्छा और अपने मन को दबाने की आदत पड़ती है। और आत्मा (रूह) की ताक़त बढ़ती है और रूह (आत्मा) का सुधार होता है। लेकिन यह सब लाभी उस

समय मिल सकते हैं जब रोज़ह रखने वाला ख़ुद भी अपने अन्दर यह बातें पैदा करना चाहे और इनके लिये कोशिश करे और उन बातों को ध्यान में रक्खे जिनकी शिक्षा रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी है यानी केवल खाना पीना ही न छोड़े बल्कि अपने मन को हर प्रकार के पाप से दूर रक्खे न झूठ बोले न गीबत करे यानी किसी के बारे में उसके पीठ पीछे ऐसी बात न कहे जो अगर उसके सामने कही जाय तो उसको बुरी लगे। न किसी से लड़े झगड़े। बस रोजे की हालत में सभी छोटे बड़े खुले और छपे पापों से बिचे जैसाकि हदीसों में इस पर बल दिया गया है।

एक हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलहि व सल्लम ने फरमाया कि :—

"जब तुम में से कोई रोज़ह रक्खे तो चाहिये कि कोई गन्दी और बुरी बात अपनी ज़बान से न निकाले और लड़ाई-झगड़ा और गुल ग़पाड़ा न करे, अगर कोई उससे झगड़ा करे और उसको गालियाँ दे तो उससे केवल इतना कह दे कि मैं रोज़े से हूँ (इसलिये तुम्हारी गालियों के बदले मैं भी मैं गाली नहीं दे सकता)

एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:—

"जो कोई रोज़े में भी गन्दी बोली और बुरे काम न छोड़े तो उसने जो खाना पीना छोड़ा इसकी अल्लाह तआला को कोई परवाह नहीं है।

एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने फ़रमाया कि ऐसे रोज़ह रखने वाले कितने ही होते हैं जो रोज़े की हालत में बुरी बातों और बुरे कामों से नहीं बचते तो रोज़े से भूख प्यास के अलावा कुछ हाथ नहीं लगता।

रोज़े की छाप से आत्मा (रूह) में तबदीली पैदा होती है, चरित्र का सुधार होता है और अल्लाह तआला का डर पैदा होता है। रोज़ों से इच्छाओं को रोकने की ताक़त जभी पैदा होगी जबकि खाने पीने को छोड़ने के साथ-साथ सभी छोटे, बड़े और ढके छुपे पापों को भी छोड़ा जाय। विशेष कर झूठ, ग़ीबत और गाली गलौज से ज़बान को रोका जाय।

अगर इस प्रकार के अच्छे और साफ़ सुथरे रोज़े रक्खे जाँय तो ख़ुदा की दया से वह सब लाभ प्राप्त हो सकते हैं जिनका बयान ऊपर किया गया है और ऐसे स्वच्छ और पवित्र रोज़े मनुष्य के अन्दर फ़रिशतों के गुण पैदा कर सकते हैं अल्लाह तआला हम सब की सहायता करें कि हम रोज़े की बड़ाई और उसकी महिमा समझें और रोज़ों से अपने अन्दर ख़ुदा के डर का और पापों के छोड़ने का गुण पैदा करें।

रोज़े के बारे में यहां इस सेवक ने बहुत थोड़ा सा लिखा है जो सज्जन रोज़े की बड़ाई आदि के बारे में इससे अधिक बयान पढ़ना चाहें वह मेरी पुस्तका "बरकाते रमज़ान" नामी पढ़े जो उर्दू में छपी है।

—:o:—

इस्लाम का पाँचवाँ पाठ

हज

हज का अनिवार्य होना

इस्लाम के खम्भों में से पांचवाँ खम्वा हज है। क़ुर्आन शरीफ़ में हज के फ़र्ज़ होने का बयान करते हुए फ़रमाया गया है :—

व लिल्लाहि अलन्नासि हिज्जुल बैति मनिस्तताअ इलैहि सबीला। वमन+क+फ़+र + फ़इन्नल्ला +ह+गनीयुन अनिल+आ+ लमीन।

(सूरए आल इमरान रुकू १०)

وَلِلّٰہِ عَلَی النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَیْہِ سَبِیْلًا وَمَنْ کَفَرَ فَاِنَّ اللّٰہَ غَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ ہ (سورۂ آل عمران ۱۰)

अर्थ यह है :—और अल्लाह के वास्ते बैतुल्लाह (काबा शरीफ़) का हज करना अनिवार्य (फ़र्ज़) है उन लोगों पर जो वहाँ तक पहुँचने की ताक़त रखते हों और जो लोग न मानें तो अल्लाह तआला सब दुनिया से बे परवाह है इस आयत में हज के फ़र्ज़ होने का भी बयान किया गया है और साथ ही यह बत-लाया गया है कि हज केवल उन लोगों पर फ़र्ज़ है जो वहाँ पहुँचने की ताक़त और इसके लिये धन रखते हों और आयत के आख़िरी भाग में यह भी बता दिया गया है कि जिन लोगों को अल्लाह ने हज करने की ताक़त दी हो और वह अल्लाह

तआला का उपकार (इहसान) भूल कर हज न करें (जैसा आज कल बहुत से धनी लोगों की दशा है) तो अल्लाह तआला सारी दुनिया से बे परवाह है यानी उनके हज न करने से अल्लाह का कुछ न बिगड़ेगा बल्कि हज न करने वाले ख़ुद ही अल्लाह की रहमत और दया से दूर रहेंगे और उनका नतीजा (खुदा न करे) बहुत बुरा होगा।

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हदीस में है कि :—

जिस किसी को अल्लाह ने इतना दिया हो कि वह हज कर सके लेकिन फिर भी वह हज न करे तो कोई परवाह नहीं है कि चाहे वह यहूदी होकर मरे चाहे नसरानी (ईसाई) होकर।

भाइयो अगर हमारे दिलों में ईमान और इस्लाम की कुछ भी क़ीमत हो और अल्लाह और उसके रसूल से कुछ भी लगाव हो तो इस हदीस को पढ़ लेने के बाद हममें से किसी भी ऐसे आदमी को हज से न रुकना चाहिये जो काबे शरीफ़ तक पहुँच सकता हो।

हज की बड़ाइयाँ और बरकतें

बहुत सी हदीसों में हज की और हज करने वालों की बहुत सी बड़ाइयाँ और प्रशँसाए बयान की गई हैं। हम यहाँ केवल दो तीन हदीसें बयान करते हैं :—

एक हदीस में है कि :—

हज़ और उमरे के लिए जाने वाले लोग अल्लाह

तआला के बड़े आदर वाले पाहुने हैं। वह अल्लाह तआला से जो कुछ प्रार्थना करें तो अल्लाह तआला उनकी प्रार्थना मान लेता है और अगर वह नर्क से छुटकारा माँगें तो अल्लाह तआला उनको नर्क से छुटकारा देता है। (मिश्कात शरीफ़)

एक दूसरी हदीस में है कि.—

जो आदमी हज करे और उसमें कोई बे हयाई और पाप का काम न करे और अल्लाह के कहने को माने तो वह पापों से ऐसा पवित्र और स्वच्छ होकर लौटेगा जैसा वह अपने पैदा होने के समय पापों से अलग था। (मिश्कात शरीफ़)

एक और हदीस में है कि :—

वह हज जिसमें दिल का खोट न हो और जो दिल की सच्चाई के साथ ठीक-ठीक अदा किया गया हो और उसमें कोई बुराई न हो तो उसका बदला केवल जन्नत ही है। (मिश्कात शरीफ़)

हज का वह बदला जो तुरन्त ही मिलता है।

हज करने से पापों का क्षमा हो जाना और जन्नत और जन्नत की नेमतों का मिलना ऐसा बदला है जो आख़िरत में मिलेगा लेकिन इसके अलावा कुछ ऐसा भी बदला है जो तुरन्त ही मिल जाता है जैसे अल्लाह तआला के घर के यानी काबे शरीफ़ के दर्शन करना जो ऐसा स्थान है जहाँ अल्लाह तआला की विशेष तजल्ली है इसी तरह मक्के शरीफ़ में हज़रत इबराहीम और

हज़रत इस्माईल अलैहि मसलसम और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यादगारें देखना जिन से ईमान वालों को ऐसी ख़ुशी और ऐसा स्वाद प्राप्त होता है जो इस दुनिया में जन्नत ही की नेमत है। इसी तरह मदीने शरीफ़ में पहुँच कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़े शरीफ़ के दर्शन करना, हुज़ूर के सामने खड़े होकर हुज़ूर पर सलाम पढ़ना हुज़ूर के पवित्र नगर तैबह की गलियों में फिरना वहाँ के जंगलों में घूमना, वहाँ की हवा में साँस लेना जहाँ की मिट्टी और हवा में बेशक ख़ुशबू आती हैं और वहाँ उन जगहों को देखना जो हुज़ूर और हुज़ूर के सहाबा (सत सगियों) की कहानी आज भी सुनाते हैं जिनसे प्रेम का जादू जागता है और आँखे आँसू बहाती हैं। यह सब वह नेमत है जो हज करने वालों को तुरन्त ही मिल जाती है। अल्लाह तआला से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि इन सब नेमतों के प्राप्त होने के लिये दिलमें ईमान और प्रेम की रौशनी बढ़ाएँ और हम शौक़ और विश्वास के साथ वहाँ पहुँचे।

इसलाम की पाँच बुनियादे

इसलाम कीं जिन बुनियादी शिक्षाओं का यहाँ तक बयान हुआ यानी कलिमह, नमाज़, ज़कात, रोज़ह और हज, यह पाचों चीज़ें इसलाम के खम्बे (अर्कानेइस्लाम) कही जाती हैं। रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मशहूर हदीस है आप ने फ़रमाया कि:—

> इसलाम की बुनियाद इन पाँच चीज़ों पर रक्खी गई है। एक यह कि "लाइला + ह + इल्लल्लाहु + मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि" की गवाही देना। दूसरे नमाज़ क़ायम करना। तीसरे ज़कात देना। चौथे रमज़ान के रोज़े

रखना और पाँचवें बैतुल्लाह शरीफ़ का हज करना केवल उन्हीं लोगों के लिये जो वहाँ तक पहुँच सकें (बुखारी व मुसलिम शरीफ़)

इन पांच चीज़ों के इसलाम के खम्बे और इस्लाम की बुनियाद होने का अर्थ यह है कि यह वह अनिवार्य काम है जो इस्लाम धर्म की ओर से मुसलमानों पर लागू हैं। इन पाचों अनिवार्य कामों को भली भांति करने से इस्लाम की दूसरी बातों का करना भी सहज हो जाता है। यहाँ हमने केवल इन पाँचों की बड़ाई और उनका अनिवार्य होना बयान किया है इनके बारे में इससे अधिक मसायल (बातें) फ़िक़ह (धर्म शास्त्र) की बड़ी-बड़ी पुस्तकों में पढ़ना चाहिए या अच्छे विद्वानों से पूछना चाहिए।

—:o:—

इसलाम का छटा पाठ

ख़ुदा का डर और पवित्र जीवन

तक़वे और परहेज़गारी की शिक्षा भी इसलाम की बुनियादी शिक्षाओं में से है। तक़वे का अर्थ यह है कि अल्लाह की पकड़ और उसके दण्ड से डरते हुए और आखिरत को सच्चा मानते हुए सब बुरे कामों और बुरी बातों से बचा जाय और अल्लाह तआला का कहना माना जाय यानी जो काम हम पर अल्लाह तआला ने अनिवार्य किये हैं हम उनको पूरा करें और अपने बन्दों का जो हक़ हमारे ऊपर रक्खा है हम उसको अदा करें और जिन कामों को अल्लाह तआला ने हराम किया है यानी जिनका करना किसी तरह ठीक नहीं है उनसे ऐसा बचें कि उनके पास भी न जायें। इसी का नाम तक़्वा है। इसपर क़ुर्आन और हदीस में बड़ा ज़ोर दिया गया है। हम यहाँ केवल कुछ आयतें और हदीसें लिखते हैं।

सूरए आल इमरान में फरमाया गया है :—

या + ऐय्यु हल्लज़ी + न + आ + मनुन्तकुल्ला + ह हक़ + क + तुक़ातिही वला तमूतुन्न + इल्ला + व अन्तुम + मुसलिमून। (सूरए आल इमरान रुकू ११)

يَاأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقَاتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ (آل عمران ع ۱۱)

अर्थ यह है—हे इमान वालो अल्लाह से डरो जैसाकि उससे डरना चाहिए और आख़िरी साँस तक इसी डर के

साथ अल्लाह तआला की आज्ञाओं पर चलते रहो और तुम को इसी हालत में मौत आए।

और सूरए तग़ाबुन में फ़रमाया :—

فاتقوا الله ما استطعتم
واسمعوا واطيعوا (تغابن ع ٢)

फ़त्त क़ुल्ला + ह + मस्त + ता तुम वस्मऊ वअतीऊ।

(सूरए तगाबुन रुकू २)

अर्थ यह है—जितना भी तुमसे हो सके तक़्वे पर चलो और अल्लाह की आज्ञाएँ सुनो और मानो।

और सूरए हश्र में फरमाया गया है कि :—

يا ايها الذين امنوا اتقوا الله
ولتنظر نفس ما قدمت لغد
واتقوا الله ان الله خبير بما
تعملون (الحشر ع ٣)

या + ऐय्यु हल्लज़ी + न आमनुत्तकुल्ला + ह + वल तन्ज़ुर + नफ्सुम्मा + कद्दमत लिग़द। वत्तक़ुल्लाह + इन्नल्ल + ह ख़बीरुम बिमा ता + मलून।

(अलहश्र रुकू ३)

अर्थ यह है कि—हे ईमान वालो अल्लाह से डरो और तक़्वे पर चलो और हर आदमी को चाहिये कि वह देखे और ध्यान देकर सोचे कि उसने कल के लिए यानी आख़िरत के लिये क्या काम किये हैं। अल्लाह से डरते रहो वह तुम्हारे सब कामों से अच्छी तरह जानकारी रखता है।

क़ुर्आन शरीफ़ ही यह भी बताता है कि जो लोग अल्लाह तआला से डरे और तक़वे और परहेज़गारी के साथ जीवन बिताएँ दुन्या में भी उनपर अल्लाह तआला की विशेष दया रहती है और अल्लाह तआला उनकी बड़ी सहायता करता है।

सूरए तलाक़ में फरमाया गया है कि :—

व मय्यँ तक़िल्ला + ह + यज अल्लहू मख़ + रजा + वयर्ज़ु क़ + हुमिन हैसु ला यह + तसिव।

(अत्तलाक़ रुकू १)

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا
وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ
(الطلاق- ع-١)

अर्थ यह है—और जो लोग डरे अल्लाह से तो अल्लाह उनके वास्ते राह निकाल देता है और उनको ऐसी तरह रोज़ी देता है कि उनको पता नहीं चलता।

कुर्आन शरीफ़ ही यह भी बताता है कि जिन लोगों में तक़वा होता है वह अल्लाह तआला के मित्र (दोस्त) होते हैं और फिर उनको किसी दूसरी वस्तु का डर या दुख तनिक भी नहीं होता। फ़रमाया गया है कि :—

अला + इन्न + औलिया + अल्लाहि ला + ख़ौफ़ुन + अलै-हिम + वला हुम यह + ज़नून। अल्लज़ी + न + आ + मनू + वकानू + यन्तक़ून। लहुमुल बुशरा + फ़िल + हयाति हथरातद दुनिया व फ़िल + आख़िरह।

(यूनुस रुकू ७)

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۚ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۚ لَهُمُ
الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ
فِى الْاٰخِرَةِ ۚ (يونس- ع-٧)

अर्थ यह है कि :—याद रखना चाहिये कि जो अल्लाह के वली (मित्र) होते हैं उन को कोई डर और दुःख नहीं होता। यह वह लोग होते हैं जो सच्चे ईमान वाले और तक़्वे वाले होते हैं। उनके लिये दुन्या और आख़िरत में सुखी रहने का सँदेश है।

इन सच्चे ईमान वालों और परहेज़गारों को जो नेमतें आख़िरत में मिलने वाली हैं, नीचे लिखी हुई आयत में उनका कुछ बयान किया गया है :—

قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ
لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ
جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ
وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ
بِالْعِبَادِ ۚ (آل عمران - ع - ٢)

क़ुल + अउ + नब्बिउकुम + बिख़ैरिम्मिन + ज़ालिकुम + लिल्लज़ी + नत्तक़ौ + इन + द रब्बिहिम जन्नातुन + तजरी मिन तह + तिहल + अनहाक़ ख़ालिदी + न + फ़ीहा व अज़ + वाजुम + मुतह + ह ᒪर + तूँ + रिज़ + वानुम्मि + नल्लाह। वल्लाहु + बसोरूम + बिल + इबाद। सूरए आले इमरान रुकू २)

अर्थ यह है :—हे रसूल इन लोगों से आप कहिये कि क्या मैं तुम्हें वह चीज़ बताऊँ जो तुम्हारी इस दुनिया की सारी दिल की चाही हुई चीज़ों से और दिलके चाहे हुए स्वादों से अधिक अच्छी है। सुनो ! उन लोगों के लिये जो अल्लाह से डरें और तक़्वे वाला जीवन बिताएँ, उनके मालिक के पास जन्नत की ऐसी फुलवाड़ियाँ हैं

जिनके नीचे नहरे बहती हैं। उनमें वह लोग हमेशा रहेंगे और वहाँ उनके लिये ऐसी बीबियाँ हैं जो बिलकुल पवित्र और स्वच्छ हैं और ऐसे बन्दों के लिये अल्लाह तआला को ख़ुशी है और अल्लाह तआला अपने बन्दों को भली-भाँति देखता है और सबका खुला और छुपा हाल उसकी आँखों के सामने है।

इस सम्बन्ध में सूरए स्वाद की यह आयत और सुन लीजिये :—

व इन्न + लिल + मुत्तक़ी + न + लहुस + न + म आब जन्नाति अदनिम मुफ़त्त + हतल + लहुमुल अबवाब। मुत्तकिई + न फ़ीहा यदऊ + न + फीहा बिफ़ाकि + हतिन + कसी + र + तिवं + व + शराब व + इन्द + हुम + क़ासिरातुत + तीर्फ़ अतराब। हाज़ा + मा + तुअदू + न + लियौमिल + हिसाब। इन्न + हाज़ा + लरिज़ + क़ुना + मा + लहू + मिन्नफ़ाद।

(स्वाद रुकू ४)

وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝
جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ
الْاَبْوَابُ ۝ مُتَّكِـِٔيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ
فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ۝ وَعِنْدَهُمْ
قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ۝ هٰذَا مَا
تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ اِنَّ
هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ۝ -

(ص-ع-٤)

अर्थ यह है :—और बेशक अल्लाह से डरने वाले बन्दों के लिये बहुत ही अच्छा ठिकाना है। हमेशा रहने के लिये सदा बहार फुलवाड़ियाँ हैं। उनके लिये दर-

वाज़े खुले हुए हैं। उनमें तकिया लगाए बैठे हैं। सेवकों से मेवे और शरबत माँगते हैं और उनके पास नीची आँखें रखनेवाली स्त्रियाँ हैं सब एक अवस्था (उम्र) वाली हैं यह है वह इनआम जिसका हिसाब के दिनके लिये तुम से वादा किया जा रहा है। बेंशक यह हमारी देन है जिसका कोई अन्त नहीं।

पवित्र क़ुर्आन ही में डरने वाले बन्दों को यह शुभ समाचार भी सुनाया गया है कि अपने पालनहार की विशेष नज़दीकी उनको प्राप्त होगी। सूरए क़मर की आखिरी आयत है।

इन्नल + मुत्तकी + न +
फी + जन्नातिंव + व + न +
हरिन + फी + मक़ + आदि +
सिद + क़िन + इन + द +
मलीकिम + मुक + तदिर
(कमर रुकू ३)

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّٰتٍ وَنَهَرٍ فِي
مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ
مُّقْتَدِرٍ ۝ (قمر-ع-٣)

अर्थ यह है कि:—डरने वाले बन्दे आख़िरत में वैकुन्ठ की फुलवाड़ियों में और नहरों में रहेंगे एक अच्छे स्थान में ताक़त वाले बादशाह के पास।

पवित्र क़ुर्आन में यह भी बयान किया गया है कि अल्लाह तआला के वहाँ आदर और बड़ाई केवल तक़्वे वाले के लिये है। सूरए हुजुरात में फ़रमाया गया है :—

इन्न + अक + र + मकुम
इन्दल्लाहि अतक़ाकुम।
(हुजुरात रुकू २)

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ
(حجرات، ع-٢)

अर्थ यह है :—बेशक तुम में सबसे अधिक सम्मान (इज्ज़त) के लायक़ अल्लाह के यहाँ वह है जो तक़्वे में बड़ा है।

इसी प्रकार रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी एक हदीस में फरमाया है कि :—

मुझसे बहुत समीप (क़रीब, नज़दीक) और मुझे बहुत प्यारे वही लोग हैं जिनमें तक़्वे की अच्छाई है चाहे वह किसी भी जाति और वँश (खानदान) से हों और किसी भी देश में रहते हों।

तक़्वा यानी ख़ुदा का डर और आख़िरत की चिन्ता सारी भलाइयों की जड़ है। जिस आदमी में जितना तक़्वा होगा उसमें उतनी ही अच्छाइयाँ इकट्ठी होंगी और वह बुरे कामों और बुरी बातों से उतना ही दूर होगा। हदीस शरीफ में है कि:—

रसूल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी (सतसंगी) ने आपकी सेवा में यह बात कही कि हे अल्लाह के रसूल मैं ने आपकी बहुत सी बातें और आपकी बहुत सी आज्ञाएँ सुनी हैं और मुझे डर है कि यह सब बातें और आज्ञाएं मुझे याद न रह जायं इसलिए आप कोई एक ऐसी नसीहत कीजिये जो मेरे लिये काफी हो जाय आपने फरमाया कि "अपनी जानकारी भर ख़ुदा से डरते रहो और इसी डर के साथ जीवन बिताओ"

यानी अगर तुम ने यही एक बात याद रक्खी और इसी के अनुसार काम किये तो बस तुम्हारे सफल होने के लिये यही एक बात काफ़ी हो जायगी।

एक दूसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :—

"जिसको डर होगा वह सवेरे चल पड़ेगा और जो सवेरे चल पड़ेगा वह ठिकाने पर ठीक समय पर पहुँच जायगा।"

इसलिये अच्छी भाग्य वाले और सफल वही लोग हैं जो अल्लाह से डरें और आख़िरत की चिन्ता रक्खें।

ख़ुदा के डर से और उसके दण्ड के भय से अगर एक आँसू भी आँख से निकले तो अल्लाह तआला के यहाँ उसका बड़ा मान है।

हदीस शरीफ़ में है कि :—

अल्लाह तआला को आदमी के दो बूँदों और दो चिन्हों से अधिक कोई वस्तु प्यारी नहीं है। वह दो बूँदें जो अल्लाह तआला को बहुत प्यारी हैं उनमें से एक आँसू की वह बूँद है जो अल्लाह के डर से किसी आँख से निकली हो और दूसरी ख़ून की वह बूँद है जो ख़ुदा की राह में किसी के शरीर से बही हो और जो दो चिन्ह अल्लाह को बहुत प्यारे हैं उनमें से एक वह चिन्ह है जो ख़ुदा की राह में लड़ते हुए घाव लगने से बन गया हो दूसरा वह चिन्ह जो ख़ुदा की पूजा के कामों से बन गया हो, जैसे माथे में और घुटनों में नमाज़ पढ़ने के चिन्ह बन जाते हैं।

एक दूसरी हदीस में है कि :—

"ऐसा आदमी कभी नर्क में नहीं जासकता जो अल्लाह के डर से रोता हो।"

बस ! ख़ुदा का सच्चा डर और आख़िरत की चिन्ता अगर किसी को यह दोनों चीज़ें मिल जायँ तो बहुत बड़ी दौलत है और इस डर और चिन्ता से मनुष्य का जीवन सोना बन जाता है।

भाइयो अच्छी तरह समझ लो कि इस कुछ दिनों वाली दुनिया में जो ख़ुदा से डरता रहेगा मरने के बाद आख़िरत के जीवन में उसको कोई डर न होगा और वह अल्लाह तआला की दया से हमेशा खुश रहेगा और बड़े चैन से रहेगा और जो यहाँ ख़ुदा से न डरेगा और आख़िरत की चिन्ता न करेगा और दुनिया ही में मस्त रहेगा वह आख़िरत में बड़े दुख उठाएगा और हज़ारों साल खून के आँसू रोएगा।

तक़्वा यानी ख़ुदा का डर और आख़िरत की चिन्ता पैदा करने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि अल्लाह के उन अच्छे बन्दों का साथ पकड़ा जाय जो ख़ुदा से डरने वाले हों और ख़ुदा की आज्ञाएँ मानने वाले हों, दूसरा तरीक़ा यह है कि तक़्वा रखने वाले ऊँचे साधू सन्तों की अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ी जायँ या पढ़वा कर सुनी जायँ और तीसरा तरीक़ा यह है कि अकेले में बैठ कर अपनी मौत का ध्यान जमाया जाय और मरने के बाद अल्लाह तआला की ओर से अच्छे कामों का जो बदला और बुरे कामों का जो दण्ड मिलने वाला है उसको याद किया जाय और उसका ध्मान जमाया जाय और अपनी हालत पर बिचार किया जाय और यह सोचा जाय कि क़ब्र में मेरी क्या हालत होने वाली है और क़ियामत में जब सब बन्दे उठाए जायेंगे तो उस समय मेरा हाल क्या होगा और जब ख़ुदा के सामने जाना पड़ेगा और मेरे जीवन भर के कामों का चिट्ठा

मेरे सामने खोला जायगा तो मैं क्या जवाब दूँगा और कहाँ अपना मुंह छुपाऊँगा। जो आदमी इन तरीक़ों को काम में लाएगा, ख़ुदा ने चाहा तो उसको तक़वा अवश्य प्राप्त हो जायगा। अल्लाह तआला हम सबकी सहायता करें और हमको भाग्य-वान बनाएँ कि हमारे अन्दर भी तक़्वा पैदा हो जाय।

—:o:—

इसलाम का सातवाँ पाठ

आपस के कामों और व्यवहारों में सच्चाई और ईमानदारी

आपस के कामों और व्यवहारों में सच्चाई और ईमानदारी बरतना भी इस्लाम की बुनियादी शिक्षा है।

क़ुर्आन शरीफ़ से और रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों से मालूम होता है कि असली मुसलमान वही है जो अपने व्यवहार में और अपने कामों और धन्धों में ईमानदार हो, वादे का सच्चा हो और बचन का पक्का हो। धोका न देता हो। छल कपट न करता हो। धरोहर में काट कपट और बेईमानी न करता हो। किसी का हक़ न मारता हो। नाप तोल में कमी न करता हो झूठे मुक़द्दमे न लड़ता हो। झूठी गवाही न देता हो। सूद, ब्याज और रिश्वत की गंदी कमाई से घिन करता हो और जिसके अन्दर यह बुराइयाँ मौजूद हों वह सच्चा मुसलमान और पक्का मोमिन नहीं है बल्कि वह "मुनाफ़िक़ है यानी इस्लाम के साथ कपट करने वाला है। अल्लाह तआला हम सबको इन सब बुरी बातों से बचाएँ। इस बारे में क़ुर्आन और हदीस में जो कुछ कहा गया है, हम उसका थोड़ा सा बयान यहाँ करते हैं। क़ुर्आन शरीफ़ की छोटी सी आयत है

या + ऐय्यु + हल्लज़ी + न आ + मनू + ला + ता + कुलू अम + वा + लकुम + बैं + नकुम + बिल + बातिल।

يَاأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَأْكُلُوْٓا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ ۙ

अर्थ यह है:—हे ईमानवालो तुम किसी टेढ़े रास्ते और ग़लत तरीक़े से दूसरों का माल न खाओ।

इस आयत में कमाई के उन सब तरीक़ों को मुसलमानों के लिए हराम कर दिया गया है जिनके रास्ते बेईमानी के हों और जिनके तरीक़े ग़लत हों जैसे व्यापार में धोखा देकर लाभ उठाना धरोहर में काट कपट करना, जुवा खेलना, सट्टे और सूद ब्याज का धन्धा करना और रिश्वत घूस आदि लेना। दूसरी आयतों में अलग-अलग भी बयान किया गया है। जैसे दूकानदार और सौदागर नाप तौल में धोका बाज़ी और बेईमानी करते हैं। ऐसे लोगों के बारे में विशेष कर फरमाया गया है :—

वैलुल + लिल + मुतफ + फ़िफ़ी + नल्लज़ी + न + इज़क तालू + अलन्नासि + यस्तौफ़ू + न + व + इज़ा + कालू + हुम + औ + व + ज़नूहुम + युख़ + सिरून। अला + यज़ुन्नु + उलाइ + क + अन्नहुन मब + ऊसू + न + लियौ मिन + अज़ीम + यौ + म + यक़ूमुन्नासु + लिरब्बिल + आ + लमीन।

(सूरए ततफ़ीफ़)

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ الَّذِينَ إِذَا
اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ
وَإِذَا كَالُوهُمْ أَو وَّزَنُوهُمْ
يُخْسِرُونَ أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ
أَنَّهُم مَّبْعُوثُونَ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ
يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ

(سورۂ تطفیف)

अर्थ यह है :—बड़ी ख़राबी है नाप तौल में कमी करने वालों की कि जब लोगों से नाप करलें तो पूरालें और जब उनको नाप कर या तौल कर दे तो घटा दें। क्या इन लोगों को इसका

विश्वास (यक़ीन) नहीं है कि वह एक बहुत कड़े दिन में मरे पीछे जीवित (ज़िन्दा) करके उठाए जायँगे जिस दिन सारे आदमी संसारों के पालनहार के सामने खड़े होंगे।"

दूसरों का हक़ और दूसरों का धरोहर पूरा-पूरा अदा करने के लिये विशेष आज्ञा है। फ़रमाया गया है कि :—

इन्नल्ला + ह + या + मुरुकुम अनतु + अद्दल + अमानाति इला + अह + लिहा।

(सूरतुन्निसा)

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا

(سورة النساء)

अर्थ यह है:—अल्लाह तआला तुमको आज्ञा देता है कि जिन लोगों के जो धरोहर और जो हक़ तुम्हारे ऊपर हों उनको ठीक-ठीक अदा करो।

और क़ुर्आन शरीफ़ ही में दो जगह, एक सूरए मूमिनून में दूसरे सूरए मआरिज में अस्ली मुसलमानों की यह विशेषता और उनकी यह पहचान बताई गई है कि :—

वल्लज़ी + नहुम + लि अमाना-तिहिम + व + अह् + दिहिम राऊन।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِأَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُوْنَ

(سورۂ مومنون وسورۂ معارج)

अर्थ यह है :—वह जो कि अपने धरोहरों के अदा करने वाले हैं और अपने वादे के पूरा करने वाले हैं।

और हदीस शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने अधिकतर भाषणों (वाज़ों) और उपदेशों (नसीहतों) में फ़रमाया करते थे कि :-

> याद रक्खो जिस आदमी के अन्दर धरोहर की ठीक-ठीक रखवाली करने और ठीक-ठीक फेरने का गुण नहीं है उसमें ईमान भी नहीं है और जिसके अन्दर अपना वादा पूरा करने का गुण नहीं है उसमें दीन नहीं है।

एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :—

"मुनाफ़िक़ (इस्लाम का कपटी) की तीन पहचाने हैं—झूठ बोलना, धरोहर में काट-कपट करना और वादा पूरा न करना।"

व्यापार में धोका-करने वालों के बारे में आपने फ़रमाया:— "जो धोकाबाज़ी करे वह हममें से नहीं और छल कपट और धोका नर्क में ले जाने वाली चीज़ें हैं।" यह बात आपने उस समय फ़रमाई जब एक बार मदीने के बाज़ार में आपने एक आदमी को देखा कि बेचने के लिये उसने अनाज का ढेर लगा रक्खा है लेकिन ऊपर उसने सूखा अनाज डाल रक्खा है और भीतर अनाज में कुछ गीलापन है उसपर हुज़ूर ने फ़रमाया था कि "ऐसे धोकेबाज हमारे गरोह से अलग हैं।!' इसलिये जो दूकानदार गाहकों को माल का अच्छा नमूना दिखाएँ और माल में जो खोटापन हो उसको छुपाएँ तो हुज़ूर की यह हदीस बताती है कि वह सच्चे मुसलमानों में से नहीं हैं और (खुदा न करे) नर्क में जाने वाले हैं।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने फ़रमाया कि "जो कोई ऐसी चीज़ किसी के हाथ बेचे जिसमें कोई खोट और ख़राबी हो और बेचने वाला उस खोट को गाहक से छुपाए रक्खे ऐसा आदमी हमेशा अल्लाह के क्रोध (गुस्से) में फंसा रहेगा और दूसरे बयान में यह है कि उसको अल्लाह के फ़रिश्ते शाप देते रहेंगे। (उसपर लानत भेजते रहेंगे)।

इस्लामी शिक्षा के अनुसार व्यापार और व्यवहार में हर तरह की धोकेबाज़ी, छल कपट और जाल हराम है और यह काम शाप (लानत) के योग्य है और रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसे लोगों से अपना नाता तोड़ने और सम्बन्ध काटने की धमकी दी है और उसको अपने गरोह से अलग बताया है। इसी प्रकार सूद ब्याज और घूस का लेन-देन भी बिलकुल हराम है। चाहे लेने देने वाले दोनों की ख़ुशी से हो और लेने देने वाले दोनों पर हदीसों में शाप (लानत) की धमकी आई है। ब्याज के बारे में प्रसिद्ध (मशहूर) हदीस है कि हुज़ुर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :—

> "अल्लाह का शाप हो (अल्लाह की लानत हो) सूद के लेने वाले पर और देने वाले पर और सूद की दस्तावेज़ लिखने वाले पर और उसके गवाहों पर" और इसी प्रकार घूस के बारे में हदीस शरीफ में है कि रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शाप दिया है (लानत की है) रिश्वत के लेने वाले पर और देने वाले पर।

एक हदीस में यहाँ तक है कि :—

"जिस आदमी ने किसी के लिये किसी काम में सच्ची और उचित (मुनासिब) सिफ़ारिश की फिर उसने सिफ़ारिश

करने वाले को कोई भेंट दी और उसने यह भेंट ले ली तो यह भी बड़ा पाप किया यानी यह भी एक तरह का घूस और सौदा है।

घूस हो या सूद, इनका लेन-देन हराम है और इनसे भी बढ़कर हराम यह है कि झूठी गवाही दे दिला कर या झूठी मुक़दमे बाज़ी कर कराके किसी दूसरे की चीज़ पर अधिकार (क़बज़ा) कर लिया जाय।

एक हदीस में है :—"जिस आदमी ने किसी की ज़मीन के किसी भाग पर हटधर्मी करके जबरदस्ती क़ब्ज़ा जमालिया तो क़ियामत के दिन उसको यह दण्ड दिया जायगा कि ज़मीन के उस भाग के साथ उसको धँसा दिया जायगा यहाँ तक कि धरती के सबसे नीचे वाले धरातल तक धँसता चला जायगा।

एक और हदीस में है कि :—

"जिस किसी ने कचेहरी में झूठी क़सम खा कर किसी मुसलमान की चीज़ को न्याय (इंसाफ़) को छोड़कर ग़लत तरीक़े से प्राप्त कर लिया तो अल्लाह ने उसके लिये नर्क की आग अनिवार्य कर दी है। और जन्नत को उसके ऊपर हराम कर दिया है। यह सुन कर किसी ने कहा कि हे अल्लाह के रसूल ! अगर वह कोई साधारण मामूली ही चीज़ हो ? आपने फ़रमाया हाँ वह चाहे जँगली पेड़ पीलू की टहनी ही हो।

एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मुक़दमा बाज़ को समझाते हुए फ़रमाया :—

"देखो जो कोई झूठी क़सम खाकर किसी दूसरे का कोई भी माल न्याय छोड़ कर ग़लत तरीके से प्राप्त करेगा वह क़ियामत में अल्लाह के सामने कोढ़ी होकर आएगा।"

एक और हदीस में है कि :—

जिस किसी ने किसी ऐसी चीज़ पर दावा किया जो उसकी नहीं है तो वह हम में से नहीं है और उसे चाहिये कि अपना स्थान दोज़ख़ में बना ले। झूठी गवाही के बारे में एक हदीस में है कि :—हुज़र सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दिन सवेरे नमाज़ पढ़ कर खड़े हो गए और आपने एक विशेष ध्वनि (अन्दाज़) में तीन बार यह फ़रमाया कि झूठी गवाही शिर्क के बराबर कर दी गई है। (शिर्क का अर्थ है ख़ुदा का साझी ठहराना)।

हराम माल का गँदा होना और उसका मनहूस होना

माल प्राप्त करने के जिन ग़लत और गंदे तरीक़ों का ऊपर बयान किया गया है उन तरीक़ों से जो धन भी प्राप्त होगा वह हराम और गँदा होगा और जो कोई उस धन को अपने खाने पहनने के कामों में लगाएँगा, रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि उसकी नमाज़ें मान्य (क़बूल) न होंगी और प्रार्थनाएँ भी मान्य न होंगी, यहाँ तक कि अगर वह उस धनसे कोई अच्छा काम करेगा तो वह भी अल्लाह के वहाँ मान्य न होगा और वह आख़िरत में अल्लाह की विशेष दया से दूर रहेगा।

एक हदीस में है कि :—

जो कोई हराम धन प्राप्त करेगा और उस धन से दान करेगा तो उसका दान करना मान्य (क़बूल) न होगा। और वह उस गंदे धन से जो कुछ अपने ऊपर लगाएगा उसमें बरकत न होगी और अगर उसको छोड़कर मरेगा तो वह गँदा धन उसके लिये नर्क की पूँजी बनेगा विश्वास (यक़ीन) करो कि अल्लाह बुराई को दूसरी बुराई से दूर नहीं करता यानी गंदा धन कमाना बुराई है और गंदे धन को दान में देना भी बुरा ही काम है इसलिये गंदे धनको दान में दे देने से गंदा धन कमाने का पाप क्षमा नहीं हो सकता। बल्कि अल्लाह बुराई को भलाई से मिटा देता है। कोई गंदगी दूसरी गंदगी को पवित्र और स्वच्छ नहीं कर सकती।

एक दूसरी हदीस में है कि :—

"अल्लाह ख़ुद भी पवित्र है और वह पवित्र धन ही को स्वीकार (क़बूल) करता है।" इस हदीस के आगे एक ऐसे आदमी का बयान अल्लाह के पवित्र रसूल ने किया है जो बड़ी लम्बी यात्रा करके किसी विशेष पवित्र स्थान पर प्रार्थना करने के लिये इस हालत में आवे कि उसके बाल बिखरे हुए हों और सिर से पाँव तक वह धूल में अटा हुआ हो और आकाश की ओर वह दोनों हाथ उठा-उठा कर और रो-रो कर प्रार्थना करे और कहे "हे मेरे पालने वाले! हे मेरे पालनहार! लेकिन उसका खाना और पानी हराम धनसे प्राप्त किया हुआ हो और उसके कपड़े भी हराम धन

ही से बनाए गए हों, और वह हराम धन ही से पाला गया हो तो ऐसी हालत में उसकी यह प्रार्थना कैसे स्वीकार (क़बूल) होगी।

अर्थ यह है कि जब खाना पीना सब हराम धनसे हो तो प्रार्थना स्वीकार (क़बूल) नहीं होती।

एक दूसरी हदीस में है कि :—

"अगर कोई आदमी एक कपड़ा दस दिरहम में मोल ले और उन दस दिरहमों में से एक दिर्हम हराम कमाई का हो तो जब तक वह कपड़ा उस आदमी के बदन पर रहेगा उसकी कोई नमाज़ भी अल्लाह के वहाँ स्वीकार (क़बूल) न होगी।

एक और हदीस में है कि :—

जो शरीर (बदन) हराम धन से पला हो वह जन्नत में न जा सकेगा।

भाइयो! हमारे दिल में अगर थोड़ा सा भी ईमान है तो अल्लाह तआला के पवित्र रसूल की इन पवित्र हदीसों को सुनकर हमको पूरे तौर पर तै कर लेना चाहिये कि हमको दुनिया में चाहे जितनी ग़रीबी और जितने दुख के साथ जीना पड़े लेकिन हम कभी भी किसी बेईमानी, धोकेबाज़ी, छल कपट और किसी ग़लत और गन्दे तरीक़े से कोई पैसा कमाने की कोशिश नहीं करेंगे और केवल पवित्रऔर स्वच्छ (पाक साफ़) कमाई पर ख़ुश रहेंगे।

पवित्र कमाई और ईमानदारी का व्यवहार

इस्लाम में जिस तरह गन्दे और ग़लत तरीक़े से धन कमाने को हराम किया गया है और गन्दे और ग़लत तरीक़े से कमाए हुए धन को अपवित्र और हराम बताया गया है, इसी तरह भले और ठीक तरीक़ों से खाना पैदा करने और ईमानदारी के साथ व्यापार और व्यवहार करने की बड़ी प्रशंसा (तारीफ़) की गई है।

एक हदीस में है कि :—

> इस्लाम के फ़र्ज़ कामों को पूरा करने के बाद हलाल (पवित्र) कमाई की खोज करना भी एक फ़र्ज़ है।

एक दूसरी हदीस में अपनी मेहनत से भोजन कमाने की बड़ाई बयान करते हुए फ़रमाया कि :—

> "किसी ने अपना खाना उससे अच्छे तरीके से नहीं पैदा किया जिसने ख़ुद अपने हाथ पैर की ताकत से मेहनत की हो और अल्लाह के नबी दाऊद का यही तरीका था (उन पर अल्लाह का सलाम हो) कि वह अपने हाथ से काम अपनी राज़ी (भोजन) कमाते थे।

एक और हदीस में है कि :—

> सच्चाई और ईमानदारी के साथ काम करने वाला व्यापारी क़ियामत में नबियों (पैग़म्बरों), सिद्दीक़ो (सच्चों) और शहीदों (ख़ुदा के रास्ते में जान देने वालों) के साथ होगा।

व्यवहारों में नर्मी और मेहरबानी

रुपये पैसे के व्यवहार में और दूसरे कामों में जिस तरह सच्चाई और ईमानदारी पर इस्लाम में बहुत जोर दिया गया है और उसको बहुत बड़ी नेकी और ख़ुदा की नज़दीकी का काम बताया गया है इसी तरह इसका भी बहुत लालच पैदा किया गया है और इसकी बहुत बड़ाई बयान की गई है व्यवहार की गई है कि व्यवहार और लेन-देन में नर्मी बरती जाय और कड़ा व्यवहार न किया जाय।

एक हदीस में आया है कि :—

> अल्लाह की रहमत (दया) हो उस बन्देपर जो बेचने और मोल लेने में और दूसरों से अपना हक़ प्राप्त करने में नर्मी बरते।

एक दूसरी हदीस में है कि :—

> "जो आदमी किसी कमज़ोर और ग़रीब बन्दे को क़र्ज़ चुकाने में समय दे या पूरे का पूरा या थोड़ा बहुत क्षमा कर दे तो अल्लाह तआला उसको क़ियामत के दिन की कठिनाइयों से छूट दे देगा" इसी हदीस के [एक दूसरे बयान में इस तरह आया है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उसको अपनी दया से साए में स्थान देंगे।

पवित्र रसूल की यह पवित्र हदीसें तो व्यापारियों, सौदागरों और मालदारों के बारे में हैं जिनसे उधार लेकर गरीब लोग समय पड़ने पर अपना काम चलाते हैं लेकिन जो लोग किसी

से उधार ले तो उनको रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़ोर देकर यह आज्ञा देते हैं। कि जहाँ तक हो सके वह क़र्ज़ा चुकाने की कोशिश जल्दी करें ताकि कहीं ऐसा न हो कि वह क़र्ज़ा चुकाने से पहले ही मर जायँ और उनके ऊपर दूसरे का हक़ लदा रह जाय इस बारे में आप जितना ज़ोर देते थे उसका पता नीचे का हदीसों से चलता है।

एक हदीस में है कि :—

अगर कोई आदमी अल्लाह की राह में शहीद हो जाय तो उसके शहीद होने के बदले में उस के सब पाप क्षमा कर दिये जायँगे लेकिन अगर किसी का क़र्ज़ा उसके ऊपर लदा हुआ है तो उसका बोझ न उतरेगा और क़र्ज़े का पाप क्षमा न किया जायगा।

एक और हदीस में है कि :—

उस पालनहार की क़सम खाता हूँ जिसके वश में मुहम्मद (उनपर अल्लाह का सलाम हो) की जान है कि अगर कोई आदमी अल्लाह की राह में शहीद हो और फिर ज़िन्दा किया जाय और फिर शहीद हो तब भी अगर उसके ऊपर क़र्ज़े का बोझ हो तो जब तक क़र्ज़े का झगड़ा तै न हो जायगा वह शहीद जन्नत में न जा सकेगा।

रुपिये पैसे का लेन देन और दूसरी तरह का हक़ जैसी कुछ भारी चीजें हैं इनका अन्दाज़ा लगाने के लिये ऊपर की दो हदीसें काफ़ी हैं।

अल्लाह तआला सहायता करें कि हम भी इनके भारीपन और कड़ेपन को समझें और हमेशा इसकी कोशिश करते रहें कि किसी बन्दे का कोई हक़ हमारी गर्दन पर न रह जाय।

—:o:—

इस्लाम का आठवाँ पाठ

लोगों में मिल जुल कर रहना, एक दूसरे का ख़याल रखना और आपस के हक़ पहचानना ।

लोगों में मिल जुल कर रहने, एक दूसरे का ख्याल रखने और आपस के हक़ पहचानने की शिक्षा भी इस्लाम में बहुत विशेषता और महत्व रखती है। आदमी सच्चा और पक्का मुसलमान जभी बन सकता है जब वह लोगों में मिल जुल कर रहने और आपस के हक़ अदा करने में पूरी तरह सफल हो। इन आदेशों से जिनका सम्बन्ध समाज से है हमारा मतलब यह है कि हम यह बतायें कि इस्लाम ने आपस के व्यवहार के बारे में क्या सिखाया है जैसे यह कि बेटों बेटियों का व्यवहार माँ बाप के साथ कैसा हो और माँ बाप का बरतावा बेटो बेटियों के साथ कैसा हो। एक भाई दूसरे भाई के साथ कैसा व्यवहार करे। बहिनों के साथ भाइयों को क्या सुलूक करना चाहिए। पति और पत्नी आपस का जीवन किस तरह बिताएँ। छोटे अपने बड़ों के सामने किस तरह रहें और बड़े छोटों के साथ कैसा बर्ताव करें। पड़ोसियों के साथ हमारा व्यवहार क्या हो। मालदार लोग ग़रीबों के साथ किस तरह का सुलूक करें और ग़रीब लोगों का व्यवहार मालदार लोगों के साथ कैसा हो। स्वामी का सम्बन्ध नौकर के साथ और नौकर का सम्बन्ध स्वामी के साथ कैसा हो। सारांश (ख़ुलासा) यह कि इस दुनिया की जिन्दगी में तरह तरह

के छोटों और बड़ों से हमारा जो साथ पड़ जाता है तो उनके साथ रहन सहन और व्यवहार के बारे में इसलाम जो शिक्षा हम को देता है वही सामाजिक आदेश और आपस के व्यवहार का नियम है और इस पाठ में हम उसी का कुछ बयान करना चाहते हैं। इस बारे में इस्लाम की शिक्षा और उसके बताए हुए नियम हर तरह से पूरे हैं। उनमें कोई कमी नहीं है। वह बहुत साफ़ सुथरे और चमक दमक रखने वाले हैं।

माँ बाप का हक़ और उनका अदब

इस दुनिया में आदमी का नाता और साथ सबसे पहला और सबसे ऊँचा माँ बाप ही से होता है। इसलाम ने अल्लाह के हक़ के बाद सबसे बड़ा हक़ माँ बाप ही को बताया है।

क़ुर्आन शरीफ़ के सूरए बनीं इसराइल के तीसरे रुकू में है कि—

व + क़ज़ा + रब्बु + क + अल्ला + ताबुदू इल्ला + ईयाहू + वबिल + वालिदैनि + इह + साना। इम्मा यब्लुगन्न + इन्द कल + कि + ब + र + अ + ह + दुहुमा औ किलाहुमा + फला + तकुल्लहुमा + उफ़्फ़िव + वला + तन्हर + हुमा + वकुल्लहुमा + क़ौलन + करीमा। वख़ + फ़िज़ + लहुमा जनाहज्ज़ुल्लि + मिनर्रह + मति वकुर्रब्बिर्हम + हुमा + कमा रब्बयानी + सग़ीरा।

وَقَضٰی رَبُّکَ اَلَّا تَعْبُدُوْا اِلَّا
اِیَّاہُ وَبِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا
اِمَّا یَبْلُغَنَّ عِنْدَکَ الْکِبَرَ
اَحَدُھُمَا اَوْ کِلٰھُمَا فَلَا
تَقُلْ لَّھُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْھَرْ
ھُمَا وَقُلْ لَّھُمَا قَوْلًا کَرِیْمًا
وَاخْفِضْ لَھُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ
مِنَ الرَّحْمَۃِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْھُمَا
کَمَا رَبَّیٰنِیْ صَغِیْرًا

(بنی اسرائیل ع-۳)

अर्थ यह है :—और तेरे पालनहार ने अटल आदेश दिया है कि उसके सिवा तुम किसी की पूजा न करो और माँ बाप के साथ अच्छा बर्ताव करो अगर इनमें से एक या दोनों तुम्हारे पास बुढ़ापे को पहुँच जाँय तो उनको हूँ भी न कहो और न उनको झिड़को और उनसे ख़ूब अदब से बात करो और छोटे बनकर और झुक कर उनकी सेवा करो और उनके लिये ख़ुदा से इस तरह प्रार्थना भी करते रहो कि हे पालन हार तू इनपर दया कर जैसी इन्होंने मेरे ऊपर दया की कि मुझको बचपन में प्रेम से पाला पोसा।

क़ुर्आन शरीफ़ ही की एक दूसरी आयत में माँ बाप का हक़ बयान करते हुए यहाँ तक फ़रमाया गया है कि :—

मान लो कि अगर किसी के माँ बाप काफ़िर और मुशरिक भी हों और वह बेटे पर भी काफ़िर और मुशरिक हो जाने के लिये दबाव डालें तो बेटे बेटी को चाहिये कि माँ बाप के कहने से काफ़िर और मुशरिक तो न बनें लेकिन दुन्या में उनके साथ अच्छा बर्ताव करते रहें और उन की सेवा करते रहें"

आयत के शब्द यह हैं :—

व इन+जा+हदा+क + अला+अन+तुश्रि+क+बी+मा लै+स+ल+क+बिही+इल्मुन+फ़ला+ तुतीहुमा+वसाहिब +हुमा+फ़िद्दन+या+मारूफ़ा (सूरए लुक्मान रुकू २)।

"وَاِنْ جٰهَدٰكَ عَلٰۤى اَنْ تُشْرِكَ بِیْ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ

فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِی الدُّنْیَا مَعْرُوْفًا"

(سورۂ لقمان - ع - ۲)

क़ुरआन शरीफ़ के अलावा हदीसों में भी माँ बाप की सेवा करने और उनका कहना मानने पर बहुत ज़ोर दिया गया है और उनकी आज्ञा न मानने और उनको सताने को बहुत बड़ा पाप बताया गया है।

एक हदीस में है कि :—

माँ बाप की ख़ुशी में अल्लाह की ख़ुशी है और माँ बाप की नाख़ुशी में अल्लाह की नाख़ुशी है।

दूसरी हदीस में है कि :—

हुज़ूर से पूछा कि बेटी बेटे पर माँ बाप
आपने फ़रमाया कि संतान (बेटा
और नर्क (दोज़ख़) माँ बाप
मिल सकती है और उन
अच्छा बर्ताव न
है।

कमी नहीं है वह जिस काम पर जितना चाहे सवाब दे सकता है

एक हदीस में है कि :—

जन्नत माँ बाप के पैरों के नीचे है। एक और हदीस में है कि हुज़ूर ने अपने सहाबा को (अपने सत सँगियों को) सबसे बड़े पाप यह बतलाये। किसी को अल्लाह का साझी ठहराना यानी शिर्क करना। माँ बाप का कहना न मानना और झूठी गवाही देना।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर ने फ़रमाया :—

तीन तरह के लोग हैं जिनको अल्लाह तआला क़ियामत के दिन दया की आँख से नहीं देखेंगे। इनमें से एक वह लोग हैं जो माँ बाप का कहना नहीं मानते।

बेटों बेटियों के हक़ :—

इस्लाम ने जिस तरह बेटों बेटियों पर माँ बाप के हक़ रक्खे हैं इसी तरह माँ बाप पर भी बेटों बेटियों के हक़ रक्खे हैं। जहाँ तक बेटों बेटियों को पालने-पोसने, खिलाने-पिलाने, पहनाने-उढ़ाने के हक़ की बात है हम उसका बयान यहां करना नहीं चाहते क्योंकि ऐसे हक़ों की ओर हमारा ध्यान ख़ुद ही रहता है क्योंकि बच्चों से प्रेम होता है हाँ बच्चों का जो हक़ अदा करने में माँ बाप से चूक होती है वह उनको धर्म की शिक्षा देना है और उन स्वभाव और व्यवहारों का सुधार करना है। अल्लाह तआला की ओर से हमारे लिये अनिवार्य (फ़र्ज़) है कि हम अपने

बेटों बेटियों की ऐसी देख भाल करें और उनको ऐसे रास्ते पर डालें कि वह नर्क (जहन्नम) से बच जाँय।

क़ुर्आन शरीफ़ में है कि :—

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا - (تحريم-ع-۱)

या + ऐय्यु हल्लज़ी + न + आ + म + नू क़ू + अन + फ़ु + स + कुम + वअह + लीकुम नारा (तहरीम। रुकू २)

अर्थ यह है :—हे ईमान वालो ! अपने आप को और अपने बाल बच्चों को नर्क (जहन्नम) की आग से बचाओ।

औलाद (बेटों बेटियों) की देख भाल की बड़ाई रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक हदीस में इस तरह बयान की है : बाप की ओर से बेटों बेटियों के लिये कोई भेंट इससे अच्छी नहीं है कि वह उनकी अच्छी देख भाल करें और उनको अच्छी शिक्षा दें।

कुछ लोगों को अपनी सन्तान (औलाद) में बेटों से अधिक प्रेम और लगाव होता है और बेटियों को वह बोझ समझते हैं और इसलिये उनकी देख भाल और पढ़ाई लिखाई में कमी करते हैं इस कारण इस्लाम में लड़कियों की शिक्षा और देख-रेख पर बहुत बल दिया गया है और इसकी बहुत बड़ाई बयान की गई है।

एक हदीस में है कि :—

जिस आदमी के बेटियाँ या बहनें हों और वह उनके साथ बहुत अच्छा व्यवहार करे और उनको अच्छी

दीक्षा (तरबियत) दे और ठीक जगह उनका विवाह करे तो अल्लाह तआला उसको जन्नत देगा।

शौहर और बीबी के हक़ :—

आदमियों के आपस के सम्बन्ध में शौहर और बीवी का सम्बन्ध बहुत विशेषता रखता है यों कहना चाहिये कि दोनों का चोली दामन का साथ है इसलिये इस्लाम ने इसके बारे में बहुत खुली-खुली हिदायतें ज़ोर देते हुए दी हैं इस बारे में इस्लामी शिक्षा का निचोड़ यह है कि स्त्री (बीबी) को चाहिये कि अपने पुरुष (शौहर) की पूरे तौर पर भलाई चाहने वाली हो और अपने पति (शौहर) की आज्ञाएँ माने और उससे कुछ भी चुराए छुपाए नहीं और किसी तरह का कोई छल कपट न करे।

क़ुर्आन शरीफ़ में है :—

फ़स्सालिहातु क़ानितातुन हाफ़िज़ा- तुल्लिल+ग़ैब । (अन्निसा अ रुकू ६)	فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ ۚ (النساء-ع-٦)

अर्थ यह है कि :—तो फिर भली स्त्रियाँ आज्ञा मानने वाली होती हैं और पति के पीठ पीछे उनकी चीज़ों की रखवाली करती हैं।

और पति (शौहर) को इस्लाम का आदेश यह हैं।

वह पत्नी (बीबी) के साथ पूरे तौर पर प्रेम का व्यवहार करे और अपनी ताक़त भर अच्छा खाना और अच्छा कपड़ा दे और उनका दिल ख़ुश रखने में कमी न करे।

क़ुर्आन शरीफ़ में कहा गया है कि :—

वआशिरूहुन्न + बिल + मारुफ़ وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ
(अन्निसा + अ रुकू ३) (النساء-ع-٣)——

अर्थ यह है —स्त्रियो के साथ अच्छी तरह की गुज़र बसर करो।

क़ुर्आन के इस आदेश (हुक्म) के अनुसार, रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पुरुषों और स्त्रियों को आपस में अच्छे व्यवहार की और एक दूसरे को ख़ुश रखने की बहुत ताकीद किया करते थे। इसके बारे म कुछ हदीसें यह हैं :—

एक बार आपने स्त्रियों को नसीहत करते हुए फ़रमाया अगर पति अपनी पत्नी को अपने पास बुलाए और वह न आए और पति रात को उससे नाख़ुश रहे तो फ़रिश्ते सवेरे तक पत्नी पर लानत करते है (शाप देते हैं)

इसी का उलटा भी एक दूसरी हदीस में आया है कि :— जो स्त्री इस हालत में मरे कि उसका पुरुष उससे ख़ुश रहा तो वह जन्नत में जायगी।

एक और हदीस में है। हुज़ूर ने फ़रमाया। :—

उसकी क़सम खाता हूँ जिस के वश में मुहम्मद की जान है कोई स्त्री अल्लाह का हक़ उस समय तक अदा नहीं कर सकती जब तक कि वह अपने पति का हक़ अदा न कर दे। एक विशेष समय पर मुसल्मानों के बहुत बड़े

जमाव के सामने पुरुषों को सुनाते हुए आपने फ़रमाया कि :- मैं तुम को स्त्रियों के साथ अच्छे बर्ताव की विशेष रूप से वसीयत करता हूँ। तुम मेरी इस वसीयत को याद रखना। देखो वह तुम्हारे वश में हैं।

एक और हदीस में है हुज़ूर ने फ़रमाया :—

तुम में अच्छे लोग वह हैं जो अपनी स्त्रियों के लिये अच्छे हैं।

एक दूसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :—

मुसलमानों में पूरे ईमान वाले वह हैं जिनके स्वभाव सुन्दर हों और अपनी घर वालियों के साथ जिनका व्यवहार प्रेम और नर्मी का हो।

दूसरे नाते दारों के हक़ :—

माँ बाप और सन्तान (औलाद) और पति पत्नी के सम्बन्ध के अलावा आदमी का सम्बन्ध अपने दूसरे नाते दारों के साथ भी होता है। इस्लाम ने ऐसे नातों का भी बड़ा आदर किया है और एक नाते दार का कुछ हक़ दूसरे नाते दार पर रक्खा है। क़ुर्आन शरीफ़ में जगह-जगह पर नाते दारों के साथ अच्छा बर्ताव करने पर ज़ोर दिया गया है। इस्लाम में उस आदमी को बड़ा पापी बतलाया गया है जो नाते दारों को ठुकरा दे और नाते दारी के हक़ को भुलादे।

एक हदीस में है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। :—

नाते दारों के हक़ को पैरों से रौंदने वाला और अपने बर्ताव में नातों का सम्मान न रखने वाला जन्नत में न जायेगा।

इसके बारे में रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ोर देकर यह शिक्षा दी है कि अगर कोई नाते दार तुम्हारी नाते दारी का हक़ अदा न करे जब भी तुम उसका हक़ अदा करते रहो!

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलहि व सल्लम ने एक हदीस में फ़रमाया है कि :—

तुम्हारा जो नाते दार तुम से सम्बन्ध और नाता तोड़ने का व्यवहार करे और नाते दारी का हक़ अदा न करे तो भी तुम उससे सम्बन्ध न काटो। अपनी ओर से तुम उस की नाते दारी का हक़ अदा करते रहो।

हदीस यह है :—

सिल + मन + क़ता + क। (صِلْ مَنْ قَطَعَكَ الخ)

अर्थ यह है :—जो तुमसे तोड़े तुम उससे जोड़ो।

बड़ों के छोटों पर और छोटों के बड़ों पर हक़

इस्लाम ने रहन सहन वाली ज़िन्दगी के सम्बन्ध में एक बुनियादी शिक्षा यह भी दी है कि हर छोटा अपने हर बड़े का आदर और सम्मान करे और उनके सामने अदब के साथ रहे और हर बड़े को चाहिये कि अपने से हर छोटे के साथ प्रेम और नर्मी का बर्ताव करे चाहे उनमें एक दूसरे के साथ कोई नातेदारी

न हो। इस्लाम की निगाह में यह चीज़ ऐसी भारी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक हदीस में यह बयान फ़रमाया है कि :—

जो बड़ा अपने छोटों से नर्मी का बतांव न करे और और छोटा अपने बड़ों का अदब न करे वह हम में से नहीं है।

एक और हदीस में है :—

हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया :— जो जवान आदमी किसी बूढ़े का आदर उसकी बड़ी अवस्था (उम्र) के कारण करेगा तो अल्लाह तआला ऐसे लोग पैदा कर देगा जो उसके बुढ़ापे में उसका आदर करेंगे।

पड़ोसी का हक़ .—

आदमी का अपने नातेदारों के अलावा एक गहरा सम्बन्ध अपने पड़ोसियों से भी होता है। इसलाम ने पड़ोसियों के साथ वाले सम्बन्ध को भी बहुत महत्व दिया है। इसके लिये अलग से खुली हुई हिदायतें दी हैं। क़ुर्आन शरीफ़ में जहाँ माँ बाप, पति पत्नी और दूसरे नातेदारों के साथ अच्छे-अच्छे बर्ताव का आदेश दिया गया है वहाँ पड़ोसियों के बारे में भी इसकी शिक्षा दी गई है।

फ़रमाया गया है कि :—

वल + जारि + जिला + क़ुरबा "وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ"
वल + जारिल + जुनुबि वस्सा हिबि बिलि जम्बि।

इस आयत में तीन तरह के पड़ोसियों का बयान है और इनमें से हर एक के साथ अच्छे बर्ताव की हिदायत की गई हैं।

"वल जारि ज़िल क़ुरबा" से वह पड़ौसी अर्थ हैं जिनसे पड़ोस के अलावा कोई विशेष नाता भी हो और "वल जाहिल जुनुबि से वह पड़ोसी अर्थ हैं जिनके साथ कोई नातेदारी न हो वह केवल पड़ोसी हों चाहे वह मुसलमान हों चाहे मुसलमान नहों और "वस्साहिबि बिल जम्बि से वह लोग अर्थ हैं जिनका कहीं साथ हो गया हो जैसे सफ़र के साथी या पाठशाला के साथी या साथ रह कर काम-काज करने वाले। यह लोग भी चाहे मुसलमान हों चाहे मुसलमान न हों। इन तीनों तरह के पड़ोसियों और साथियों के साथ इस्लाम ने हमको अच्छे बर्ताव की शिक्षा दी है। रसूल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस पर इतना बल दिया करते थे कि एक हदीस में है कि आप ने फ़रमाया कि :—

जो आदमी ख़ुदा और आख़िरत पर ईमान रखता हो वह अपने पड़ोसी को कोई दुख न पहुँचाए।

एक दूसरी हदीस में है कि हुज़ूर ने फ़रमाया कि:—

वह मुसलमान नहीं जो ख़ुद पेट भर कर खाए और बग़ल में पड़ा हुआ पड़ोसी भूखा रहे।

एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलहि व सल्लम ने एक बार बड़ी विशेषता के साथ फ़रमाया :—

"मैं ख़ुदा के नाम की क़सम खाता हूँ कि वह सच्चा मुसलमान नहीं, अल्लाह की क़सम वह पूरा मोमिन नहीं,

वल्लाह वह पूरा मुसलमान नहीं। सेवा में निवेदन किया गया कि हुज़ूर कौन सच्चा मोमिन नहीं आपने फ़रमाया वह मोमिन नहीं जिसका पड़ोसी उसकी शरारतों से चैन नहीं पाता। एक और हदीस में है कि हुज़ूर ने फ़रमाया। वह आदमी जन्नत में नहीं जायगा जिसकी शरारतों से उसके पड़ोसी चैन की साँस नहीं ले सकते।

एक और हदीस में है :—

किसी सहाबी ने (सतसंगी ने) हुज़ूर से निवेदन किया कि हुज़ूर फ़ुलाँ स्त्री के बारे में कहा जाता है कि वह बहुत नमाज़ पढ़ती है, बहुत रोज़े रखती है और ख़ूब दान देती है लेकिन अपनी कड़वी ज़बान से पड़ोसियों को सताती है हुज़ूर ने फ़रमाया कि वह दोज़ख़ में जायगी। फिर उन्हीं सहाबी ने निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल। फ़ुलाँ स्त्री के बारे में कहा जाता है कि वह नमाज़ रोज़ा और ख़ैरात तो बहुत नहीं करती, लेकिन पड़ोस वालों को अपनी बोली से कभी नहीं सताती तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि वह जन्नत में जायगी।

भाइयों! यह इस्लाम में पड़ोसियों के हक़! कैसे दुख की बात है कि आज हम इन आदेशों से बिलकुल ला परवाह हो गये हैं।

कमज़ोरों और ग़रीबों के हक़ :—

यहाँ तक जिस तरह के लोगों के हक़ का बयान किया गया है यह वह थे जिनसे आदमी का कोई विशेष सम्बन्ध और मेल

होता है चाहे नातेदारी का सम्बन्ध हो चाहे पड़ोसी होने का और चाहे साथी सँगी होने का। लेकिन इस्लाम में इनके अलावा सब कमज़ोरों, ग़रीबों और लाचारों के हक़ भी रक्खे गये हैं। ख़ुदा ने जिन लोगों को ताक़त या धन दिया है उनपर यह अनिवार्य है कि वह कमज़ोरों और ग़रीबों की देख रेख रक्खें और उनकी सेवा करें और अपनी ताक़त और अपने धन में उन लोगों का हक़ और हिस्सा समझें। क़ुर्आन शरीफ़ में बीसियों जगह इस पर ज़ोर दिया गया है और इसका आदेश दिया गया है कि बेसहारा लोगों, बे बाप के बच्चों, ग़रीबों और मुसाफ़िरों और दूसरे ऐसी ही लोगों की सेवा और सहायता की जाय। भूखों के खाने का और नंगों के कपड़ों का प्रबन्ध किया जाय।

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी इस पर बड़ा ज़ोर दिया है और इसके लिये बहुत उभारा है और इसकी बहुत बड़ाई बयान की है। इसके बारे में कुछ हदीस यह हैं :—

एक हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी दो उँगलियाँ बराबर करके फ़रमाया :—

किसी बे बाप के बच्चे के पालने पोंसने का बोझ उठा लेने वाला आदमी जन्नत में इसी तरह मेरे पास होगा जिस तरह मेरी यह दोनों उँगलियाँ मिली हुई हैं।

एक दूसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:—विधवा स्त्रियों, गरीबों और लाचारों की देख रेख और सहायता के लिए दौड़ धूप करने वाला आदमी ख़ुदा के रास्ते में तन मन धन की बाज़ी लगा देने वाले के ऊँचे स्थान पर है और सवाब में उस आदमी के बराबर है जो हमेशा

दिन को रोज़ह रखता हो और रात नफ़ल नमाज़ों में काटता हो। एक और हदीस में है कि हुज़ूर ने मुसलमानों को आदेश दिया:—

जो भूखे हों उनके खाने का प्रबन्ध करो। रोगियों की देख-रेख करो। क़ैदियों को छुड़ाओ।

एक और हदीस में है कि आप ने लोगों को कुछ उपदेश दिये (नसीहत की) और इस सम्बन्ध में फ़रमाया कि—दुखी लोगों की सहायता करो और भटके हुओं को रास्ता बताओ। इन हदीसों में आपने मुसलमान, और ग़ैर मुसलिम में कोई विशेषता नहीं बयान की बल्कि कुछ हदीसों में आपने सभी जानदारों के साथ अच्छा बर्ताव करने पर बहुत ज़ोर दिया है। और बे ज़बान जानवरों पर दया करने वालों और उनकी देख-रेख करने वालों को अल्लाह की रहमत (दया) की ख़ुश ख़बरी सुनाई है। सच यह है कि इस्लाम सारे संसार और सारे जानदारों के लिये रहमत है और हमारे स्वामी और हमको रास्ता दिखाने वाले हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रह मतुल लिल आलमीन हैं (सारे ससार वालों के लिए रहमत ह) लेकिन हम ख़ुद ही आप के आदेश और संदेश से दूर हो गये।

क्या अच्छा होता कि हम भी सच्चे मुसलमान बन कर सारी दुनिया के लिये रहमत बन जाँय।

मुसलमान पर मुसलमान का हक़:—

नातेदारी का हक़, पड़ोस का हक़ और दूसरे हक़ों के अलावा एक मुसलमान पर दूसरे मुसलमान के कुल्ल हक़ इसलाम ने रक्खे

हैं। इस बारे में रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुछ हदीसें नीचे लिखी जाती हैं :—

हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। उसके लिये यह अनिवार्य है कि न तो उसपर ख़ुद कोई अत्याचार (ज़ुल्म) और ज़बरदस्ती करे और न उसको अकेला छोड़ कर अलग हो जाय जबकि उस पर कोई दूसरा आदमी अत्याचार कर रहा हो। ऐसी हालत में जहाँ तक हो सके उसकी सहायता करे और उस का साथ दे।

तुम में से जो कोई अपने भाई मुसलमान की आवश्यकता पूरी करने में लगा रहेगा, अल्लाह तआला उसकी आवश्यकता पूरी करने में लगा रहेगा, और जो मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान की कठिनाई दूर करेगा तो अल्लाह तआला उसके बदले में क़ियामत में उसकी किसी कठिनाई से उसको छुटकारा देगा, और जो आदमी किसी मुसलमान की बुराई को छुपाएगा अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसकी बुराई को छुपाएगा।

एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :—

तुम आपस में कपट और बैर न रक्खो। डाह न करो। पीठ पीछे किसी को ऐसी बात न कहो कि मुँह पर कही जाय तो बुरा माने यानी ग़ीबत न करो। एक अल्लाह के बन्दे और आपस में भाई-भाई बन कर रहो और किसी मुसलमान के लिए हलाल नहीं है यानी यह करने का उसको हक़ नहीं है कि वह अपने मुसलमान

भाई से तीन दिन से अधिक सलाम करना और बात-चीत करना छोड़ दे।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर ने फ़रमाया कि मुसलमान का माल, उसकी जान और उसकी आबरू यानी मर्यादा मुसल-मान पर बिलकुल हराम है यानी इस का करना महा पाप है।

अब हम रहन-सहन के नियमों को यानी क़ायदों को और एक दूसरे के हक़ों के इस बयान को रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हदीस पर समाप्त (ख़त्म) करते हैं जो हर मुसलमान को थर्रा देने वाली है।

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दिन सहाबा (सत संगियों) से पूछा बताओ मुफ़लिस (ग़रीब) और नादार (निर्धन) कौन है? सहाबा ने कहा कि हुज़ूर मुफ़लिस वह है जिसके पास दिरहम और दीनार न हों (दिरहम और दीनार सिक्के हैं) आपने फ़रमाया नहीं, हम में मुफलिस वह है जो क़िया(मत के दिन निमाज़, रोज़ा और ज़कात का भंडार (खज़ाना) लेकर आवेगा लेकिन दुनिया में उसने किसी कोगाली दी होगी' किसीपर झोठा बुहतान बांधा होगा (झूठा अपराध लगाया होगा) किसी को मारा पीटा होगा, किसी का माल बिना हक़ के खाया होगा' तो जब वह हिसाब के स्थान पर खड़ा किया जायगा तो उसके ख़िलाफ़ दावा करने लोग आएँगे और जितना जिसका हक़ सिद्ध (साबित) [illegible]गा उसके सवाबमेंसे उनको दे दिया जायगा यहाँतक कि उसकी [illegible]कियाँ समाप्त (ख़त्म) हो जायँगी तो फिर दावा करने वालों [illegible] लाद दिये जायँगे और उसको नर्क (जहन्नम) में

भाइयों इस हदीस पर विचार करो और सोचो कि दूसरों का हक़ मारना, उनको बुरा भला कहना और उनकी ग़ीबतें करना (पीठ पीछे किसी को ऐसी बात कहना कि अगर सामने कही जाय तो वह बुरा माने) अपने आपको किसी बरबादी में डालना है।

ख़ुदा के बन्दो! अगर किसी का हक़ तुमने मारा हो तो दुनिया ही में उसका हिसाब कर लो या उसका बदला दे दो या क्षमा करा लो और आगे के लिये लापरवाही न करने का पक्का इरादा कर लो नहीं तो आख़िरत में इसका नतीजा बहुत बुरा होने वाला है। हमको अल्लाह बचाए।

—:o:—

अल्लाह का नवाँ पाठ

अच्छे चरित्र (अख़लाक़)

और

सराहनीय (तारीफ़ के क़ाबिल गुण (ख़ूबियाँ)

अच्छे चरित्र (अख़लाक़) आर गुणों (ख़ूबियों) की शिक्षा भी इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं में से है और लोगों का चारित्रिक (अख़लाक़ी) और आत्मिक (रुहानी) सुधार उन विशेष (ख़ास) उद्देश्यों (मक़सदों) में से है जिसको पूरा करने के लिये रसलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबी बना कर दुन्या में भेजे गए थे।

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खद फ़रमाया है कि:—मैं अल्लाह की ओर से इस लिये भेजा गया हूँ कि अच्छे चरित्र की शिक्षा दूँ और चरित्र को चोटी तक पहुँचा दूँ।

अच्छे चरित्र की बड़ाई

और उसका महत्व (उसकी अहमीयत)

इस्लाम में अच्छे चरित्र की जो बड़ाई बयान की गई है उसका कुछ अन्दाज़ा रसूलुलाहि सल्लल्हु अलैहि वसल्लम की नीचे लिखी हुई हदीसों से किया जा सकता है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुममें सब से अच्छे वह लोग हैं जिनके चरित्र बहुत अच्छे है

एक और हदीम में आया है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मेरी निगाह में सबसे ज्यादा प्यारा वह होगा जिसके चारित्रिक गुण (अख़लाक़ी ख़ूबियाँ सब में अच्छे होंगे।

एक दूसरी हदीस में कि रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु व सल्लम ने फ़रमाया :—

क़ियामत के दिन कामों की तराज़ू में सबसे अधिक भारी तौल अच्छे चरित्र की होगी।

एक और रि वायत (हदीस) में है कि हुज़ूर से पूछा गया कि वह कौन सा गुण (ख़ूबी) है जो मनुष्य को जन्नत में ले जाता है ?

आपने फ़रमाया :—अल्लाह का डर और अच्छा चरित्र।

एक और रियायत (हदीस) में आया है कि रसूलुल्लाहि सल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :—

वह मोमिन जिसने अपने चरित्र संवार लिये हों दिन को रोज़े का सवाब और रात को क़ियाम का (नफ़ल नमाज़ों में खड़े रहने का) सवाब पाता है। अर्थ यह है कि जिस अल्लाह के बन्दे को ईमान प्राप्त हो अल्लाह के बनाए हुए अनिवार्य क म पूरे करता हो लेकिन वह न तो बहुत रोजे रखता हो न बहुत नफ़ल नमाजें पढ़ता हो. हाँ उसने अपने चरित्रों का सुधार कर लिया हो तो अल्लाह तआला उसको अच्छे स्वभाव और अच्छे आचार व्यवहार के कारण उन लोगों के बराबर सवाब

देगा जो साइमुन्नहार (दिन को रोज़ह रखने वाले) और क़ाइमुल्लैल (रात को नफ़ल नमाजें पढ़ने वाले) हों।

बुरे स्वभावों की बुराई

जिस तरह हुज़ूर ने अच्छे स्वभावों की प्रशंसा (तारीफ़) की है और उनकी बड़ाई और अच्छाई बयान की है उसी तरह बुरे स्वभावों की बुराई भी आपने हमको बताई है।

एक हदीस में है :—

बुरे स्वभावों वाला आदमी जन्नत में न जा सकेगा। हदीस की एक और रिवायत में है कि कोई पाप अल्लाह की निगाह में बुरे स्वभाव से अधिक बुरा नहीं है।

कुछ बड़े-बड़े और आवश्यक स्वभावों का बयान :—

यों तो क़ुर्आन और हदीस में सभी अच्छे स्वभावों और सुथरे आत्मिक गुणों की शिक्षा दी गई है और सभी बुरे स्वभावों और बुरी टेवों से बचने पर ज़ोर दिया गया है लेकिन यहाँ हम इसलाम के केवल बुनियादी और चोटी के चरित्रों को बयान करते हैं जिनके बिना कोई अच्छा और सच्चा और पक्का मोमिन और मुस्लिम नहीं हो सकता।

सच्चाई और सच्चा व्यवहार

इस्लाम में सच्चाई का इतना महत्व है कि हर मुसलमान के लिये अनिवार्य है कि वह हमेशा सच भी बोले और सच्चों ही का साथ पकड़े और उन्हीं के सत संग में रहे।

पवित्र क़ुर्आन में है :—

या + ऐय्यु हल्लज़ीं + न +
आ + मनुन्तक़ुल्ला + ह + वकूनू + मअस्सादिक़ीन ।

يَاأَيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوْااتَّقُوْااللّٰهَ وَكُوْنُوْامَعَ الصَّادِقِيْنَ ۝

अर्थ यह है : हे ईमान वालो ख़ुदा से डरो और केवल सच्चों ही के साथ रहो ।

हदीस में है कि पवित्र रसूल ने एक समय पर पवित्र सहाबा से फ़रमाया :—

जो यह चाहे कि अल्लाह व रसूल से उसको प्रेम हो जाय या अल्लाह व रसूल उससे प्रेम करें तो उसके लिये अनिवार्य है कि जब बात करे तो सच ही बोले ।

एक और हदीस में है कि :—

सच्चाई को पकड़ो चाहे तुमको इसमें अपनी बरबादी और मौत ही दिखाई पड़ती हो क्योंकि मुक्ति और जीवन सच्चाई ही में है । और झूठ से घिन करो चाहे इसमें मुक्ति और सफलता दिखाई देती हो । क्योंकि झूठ का नतीजा नाश और बरबादी है ।

हदीस की एक रिवायत में है कि किसी आदमी ने पवित्र रसूल से पूछा कि जन्नत में जाने वालों की क्या पहचान है ?

पवित्र रसूल ने जवाब दिया कि सच बोलना । इसी के साथ एक दूसरी हदीस में है कि पवित्ररसूल ने फ़रमाया :—

झूठ बोलना मुनाफ़िक़ (कपटी) की ख़ास पहचान है। मुनाफ़िक़ वह है जिसके दिल में खोट हो और धोखा देने के लिये अच्छे और मीठे शब्द ज़बान से बोलता हो)।

एक और हदीस में है कि किसी ने रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलहि व सल्लम से पूछा "क्या मोमिन डरपोक हो सकता है ?" आपने फ़रमाया :—"हो सकता है।" फिर पूछा गया कि क्या मोमिन कन्जूस हो सकता है ? आपने फ़रमाया :—हो सकता है। फिर पूछा कि क्या मोमिन कन्जूस हो सकता है ? आपने फ़रमाया हाँ हो सकता है। फिर पूछा गया क्या मोमिन झूठा हो सकता है आपने फरमाया "नहीं" यानी झूठ की टेव ईमान के साथ इकट्ठा नहीं हो सकती। अल्लाह तआला हम सब की सहायता करें कि हम सदा के लिये सच्चाई को पकड़ लें जो मुक्ति (छुटकारा) देने वाली है, जन्नत में पहुँचाने वाली है और अल्लाह और रसूल का प्यारा और प्रेम बनाने वाली है और हम झूठ से पूरे तौर से बचें क्योंकि झूठ का नतीजा नष्ट होना, बरबाद हो जाना और ख़ुदा व रसूल का शाप (लानत) लेना और उनकी नाख़ुशी मोल लेना है। झूठ मुनाफ़िक़ों (कपटियों) की पहचान है।

वादे और बात का पूरा करना।

वादे और बात का पूरा करना भी सच्चाई ही का एक अंग है। कि जिस किसी से जो वादा किया जाय उसको पूरा किया जाय पवित्र और कुर्आन हदीस में खास तौर पर इस के लिये हिदायत की गई है और इस पर ज़ोर दिया गया है।

अल्लाह तआला ने फरमाया है :—

व औफ़ू बिल अहिद इन्नल अह+द+का+न+मस+अला (बनी इसराईल रुकू ४)

وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُوْلًا ۝ (بنی اسرائیل ر٤)

अर्थ यह है :—और अपने हर वादे को पूरा करो। बेशक तुमसे क़ियामत में हर वादे के बारे में पूछा जायगा।

पवित्र क़ुर्आन ही में एक दूसरे स्थान पर अच्छे लोगों और अच्छे कामों के बारे में कहा गया है कि: —

वल मूफ़ू+न बिअह+दिहिम इज़ा आ+हदू (ब+करह रुकू २२)

وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عَاهَدُوْا ۝ - (بقرہ-ع-٢٢)

और अल्लाह की निगाह में सन्त वह लोग भी हैं जो अपने वादे को पूरा करें जबकि वह ज़बान दे दें। हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने भाषणों (वाज़ों) में बहुत फ़रमाया करते थे:—"जो अपनी ज़बान का पक्का नहीं उसका धर्म में कोई भाग नहीं।

एक और हदीस में है कि :—

"बचन को पूरा न करना मुनाफ़िक़ों (कपटियों) की ख़ास पहचान है।" हुज़ूर सल्लल्लाहु अलहि व सल्लम की इस हदीस से यह जानकारी हुई कि अपने वादे का तोड़ डालना, अपनी बात को भँग कर देना और अपने वचन को

पूरा न करना ऐसी बुराइयाँ हैं जो ईमान के साथ इकट्ठा नहीं हो सकतीं। अल्लाह तआला इन बुरी आदतों से हम सबको बचाएँ।

धरोहर की रक्षा ! हफ़ाज़त) करना।

धरोहर की रक्षा करना भी सच्चाई और सच्चे व्यवहार हो की एक! शाखा (शाख़) है। इस्लाम में इस पर भी बड़ा ज़ोर दिया गया हैं। पवित्र क़ुर्आन में है :—

इन्नल्ला + ह + यामुरुकुम अन + तुअद्दुल अमानाति इला अह + लिहा।

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمٰنٰتِ إِلٰى أَهْلِهَا ۚ

अर्थ यह है :—अल्लाह तुमको आदेश देता है कि धरोहर उनके मालिकों को ठीक-ठीक अदा करो।

और पवित्र क़ुर्आन ही में दो जगहों पर सच्चे ईमानदारों के गुणों का बयान करते हुए कहा गया है :—

वल्लज़ी + नहुम लिअमानाति-हिम वअह + दिहिम + राऊन (सर समूमिनून व सूरए मआरिज)

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِأَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۙ

अर्थ यह है :—और वह लोग जो धरोहरों की रक्षा करते हैं और अपने वादों को पूरा करते हैं।

रसुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने भाषणों में मिमनर पर यह बहुत फ़रमाया करते थे

लोगो ! जिसमें धरोहर की रक्षा करने का गुण नहीं है उसमें मानो ईमान ही नहीं।

एक हदीस में है :—

किसी आदमी के अच्छे होने का अन्दाज़ा करने के लिये केवल उसकी नमाज़ और उसके रोज़ों ही को न देखो बल्कि यह गुण देखो कि वह जब बात करे तो सच बोले और जब कोई धरोहर उसके पास रक्खा जाय तो वह उसको ठीक-ठीक वापस करे और दुःख के समय में भी वह परहेज़गारी पर जमा रहे।

प्यारो अगर हम अल्लाह की निगाह में सच्चे मौमिन और उसकी रहमत के योग्य (क़ाबिल) बनना चाहते हैं तो हमारे लिये यह अनिवार्य है कि हम हर हाल मे ईमानदारी से काम लें और वादा पूरा करना अपने लिये अनिवार्य कर लें याद रक्खो कि हम में से जिस किसी में वह गुण नहीं वह अल्लाह और रसूल की में सच्चा मोमिन और पूरा मुसलमान नहीं।

न्याय करना और किसी की बेजा तरफ़दारी न करना

इस्लाम ने हर हालत में न्याय करने पर और ग़लत तरफ़दारी न करन पर बहुत ज़ोर दिया है। पवित्र क़ुर्आन में है ?

इन्नल्ला + ह + यामुरु बिल अद + लि वल इह + सान।

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ ۔

अर्थ यह है :—अल्लाह तआला न्याय का और ग़लत

तरफ़दारी न करने का और परोपकार करने (इहसान करने) का आदेश देता है।

साथ ही यह भी याद रखना चाहिए कि इस्लाम में न्याय पर और ग़लत तरफ़दारी न करने पर जो ज़ोर दिया गया है वह केवल अपने नातेदारों और मित्रों या केवल मुसलमानों ही के लिये नहीं बल्कि दूसरे लोगों के लिए भी यहाँ तक कि अपनी जान, अपने धन और अपने धर्म के वैरियों के लिये भी न्याय और ना तरफ़दारी पर ज़ोर दिया गया है। पवित्र क़ुर्आन का खुला हुआ आदेश है:—

وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَـَٔانُ قَوْمٍ عَلٰٓى
اَنْ لَّا تَعْدِلُوْا ۭاِعْدِلُوْا ۣ هُوَ
اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۡ
(سورۂ مائدہ ع ۲)

बला + यज + रिमन्नकुम श + न + आनु क़ौमिन + अला अल्ला तादिलू। एदिलू हु + व + अक़ + रबु लिन्तक़ + वा (सूरए मायदा रुकू २)

अर्थ यह है :—और किसी जाति की दुशमनी तुम को इस बात पर तय्यार न कर दे कि तुम उसके साथ न्याय न करो। तुम हर हालत में हर आदमी के साथ न्याय करो। परहेज़ गारी के लिए यही तुम को करना है। इस आयत से यह बात तै हो गई कि किसी आदमी से या किसी जाति से अगर हमारी लड़ाई है और दुशमनी हो गई है तो भी हम उसके साथ कोई बे इन्साफ़ी नहीं कर सकते और अगर करेंगे तो अल्लाह तआला की निगाह में हम बड़े पापी ठहरेंगे।

पवित्र हदीस की एक रिवायत है कि हुज़ूर ने (उन पर सलाम हो) यह फ़रमाया :—

क़ियामत के दिन अल्लाह से निकट तर (बहुत क़रीब) और अल्लाह को सब से अधिक प्यारा वह राजाधिकारी (हाकिम) होगा जो न्यायकारी (मुनसिफ़) होगा यानी अल्लाह के बनाए हुए नियमों के अनुसार न्याय के साथ राज करे गा और अल्लाह से सब से ज्यादा दूर और सबसे कड़े दण्ड में वह राजाधिकारी फँसा हुआ होगा जो अत्याचार (ज़ुल्म) और अन्याय (बे इन्साफ़ी) से राज करने वाला होगा ।

एक दूसरी हदीस में है कि :—

पवित्र रसूल ने (उन पर सलाम हो) एक दिन अपने सहाबा से (सत सँगियों से) फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि क़ियामत के दिन अल्लाह की रहमत के साये में कौन लोग सबसे पहले आवेंगे ? सहाबा (सत संगियों) ने कहा कि अल्लाह और उस का रसूल अधिक जानने वाले है इसलिये हुज़ूर ही हम को बताएँ कि कौन भाग्यवान बन्दे क़ियामत के दिन सब से पहले दयालुता के साये में लिये जायेंगे । पवित्र रसूल ने (उन पर सलाम हो) फ़रमाया :—यह वह बन्दे होंगे जिन की हालत यह होंगी जब उनको उनका हक़ दिया जाय तो ख़ुशी से क़बूल करलें और जब कोई उनसे अपना हक़ मांगे तो वह बिना टालमटोल के उसका हक़ उस को दे दें और दूसरे लोगों के लिए उसी तरह फ़ैसला करें जिस तरह ख़ुद अपने लिए करें यानी अपने और पराये के व्यवहार में कोई अन्तर (फ़र्क़) न करें ।

अफ़सोस की बात है कि हम मुसलमानों ने इस्लाम की इनसाफ़ सुथरी शिक्षाओं को बिलकुल भुला दिया है। अगर आज मुसलमानों में यह गुण पैदा हो जाय कि वह बात के सच्चे, वादे के पक्के और धरोहर की रक्षा करने वाले और हर एक के साथ न्याय और ना तरफ़दारी करने वाले हो जाँय तो दुन्या का आदर व सम्मान भी उनके पाँव चूमे और जन्नत में भी उनको बहुत ऊँची जगह मिले।

दया करना और अपराधी को क्षमा करना

किसी को कष्ट और दुःख की दशा (हालत) में देखकर उस पर दया करना और उसके साथ हमदर्दी का बर्ताव करना और अपराधी के अपराध को क्षमा करना भी उन स्वभावों में से है जिनका इसलाम में बड़ा ऊँचा स्थान है और जिनकी बहुत बड़ाई बयान की गई है।

एक हदीस में है कि :—

तुम अल्लाह के बन्दों पर दया करो तो तुम पर दया की जायगी। तुम लोगों के अपराध क्षमा करो तुम्हारे भी अपराध क्षमा किये जायँगे।

एक और हदीस में है कि :—

जो दया नहीं करता उस पर दया नहीं की जायगी।

एक दूसरी हदीस में है कि :—

जो कोई किसी का अपराध क्षमा नहीं करता तो अल्लाह तआला भी उसका अपराध क्षमा नहीं करेंगे।

एक और हदीस में है कि :—

दया करने वालों पर बहुत दया करने वाला अल्लाह दया करता है। तुम इस धरती पर बसने वालों पर दया करो तुम पर आकाश वाला दया करेगा।

इस हदीस से यह बात साफ़ हो जाती है कि इसलाम मित्र और शत्रु सबके साथ बल्कि पृथ्वी पर बसने वाले सब जीव-जन्तुओं के साथ दया करने की शिक्षा देता है।

एक हदीस में है कि :—

किसी ने एक प्यासे कुत्ते को जो बहुत प्यास के कारण कीचड़ चाट रहा था दया करके पानी पिला दिया तो अल्लाह तआला ने उसके इस नेक कामके बदले में उसको जन्नत दे दी थी। अफ़सोस की बात है कि अल्लाह के पैदा किए हुए जीवधारियों पर दया करने और सबके साथ हमदर्दी का बर्ताव करने का गुण हमसे निकल गया और इसी कारण हम ख़ुदा की दया के हक़दार नहीं रहे

नर्मी :—

लेन देन में और हर तरह के व्यवहार में नर्म और सहज बर्ताव करना भी इस्लाम की विशेष शिक्षाओं में से है।
एक हदीस में है कि :—

नर्मी का व्यवहार करने वालों पर और सहज बर्ताव करने वालों पर नर्क की आग हराम है।

एक दूसरी हदीस में है कि :—

अल्लाह तआला नर्मी करने वाला है और नर्मी को पसंद करता है और नर्मी पर इतना देता है जितना कड़ेपन पर नहीं देता।

सह लेने और पी जाने की आदत

अच्छी न लगने वाली बातों को सह लेना और ऐसे समय पर क्रोध (ग़ुस्सा) को पी जाना भी उन स्वभावों में से है जिनको इसलाम सभी लोगों में पैदा करना चाहता है और अल्लाह की निगाह में इन लोगों का बड़ा स्थान है जो अपने में यह गुण पैदा करलें। पवित्र क़ुर्आन में जहाँ उन लोगों का बयान है जिनके लिये जन्नत सजाई गई है वहाँ ऐसे लोगों का विशेषता के साथ बयान किया गया है। कहा गया है :—

وَالْكَاظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ۚ (آل عمران ع-۱۴)

वल + काज़िमी + नल ग़ै + ज़ वलआफ़ी + न + अनिन्नास।
(आल इमरान रूकू १४)

अर्थ यह है :—जो क्रोध को (ग़ुस्से को) पी जाने वाले हैं। और लोगों के अपराध क्षमा करने वाले ह।

ऐसे लोगों के लिये पवित्र रसूल ने (उन पर सलाम हो) यह अच्छी ख़बर दी है कि:—जो कोई अपने ग़ुस्से को रोकेगा, अल्लाह तआला उससे अपना दण्ड रोक लेगा।

बड़े भाग्यवान हैं वह लोग जो ग़ुस्सा आने के समय पर इन आयतों को और हदीसों को याद रक्खें और अपने ग़ुस्से को रोक

लें ताकि उसके बदले में अल्लाह तआला उनसे अपने दण्ड को रोक लें।

अच्छी बोली और मीठी ज़बान

इस्लाम में अच्छे आचार व्यवहार की शिक्षाओं में से एक विशेष (ख़ास) शिक्षा यह भी है कि बात चीत हमेशा अच्छी बोली और मीठी ज़बान में की जाय। और कड़े स्वभाव और कड़ी बोली से घिन की जाय।

पवित्र क़ुर्आन में है।

वक़ूलू लिन्नासि हुसना। وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا

अर्थ यह है कि :—और तुम लोगों से अच्छी बात कहो।

इसलाम में अच्छी बात बोलने पर सवाब का वादा किया गया है और कड़ी बोली को पाप ठहराया गया है।

पवित्र हदीस में है कि :—

नर्मी और अच्छे स्वभाव से बात-चीत करना सवाब है और एक तरह का दान है।

एक और हदीस में है कि:—

कड़ी और टेढ़ी बातें करना अत्याचार है और अत्याचार का ठिकाना नर्क हैं।

एक दूसरी हदीस में है कि :—

अपशब्द (गाली) ज़बान से निकालना निफ़ाक़ (इसलाम से कपट) की पहचान है। अल्लाह तआला अपशब्दों (गालियों) और कड़ी बात चीत के अत्याचार से हमको बचाएँ और हमको अपनी दया से वह नर्म बोली और मीठी ज़बान दें जिस से ईमान की शोभा है (ख़ूबसूरती है) और जो अल्लाह के नेक बन्दों का तरीक़ा है।

अपने को दूसरों से कम और नीचा समझना और दिल में घमँड न आने देना।

इस्लाम जिन स्वभावों को अपने मानने वालों में पैदा करना चाहता है उन में से एक यह भी है कि ख़ुदा के दूसरे बन्दों से अपने को नीचा रक्खे और अपने आप को दूसरों से कम और तुच्छ समझे और घमंड की गंदगी से अपने दिल को पवित्र रक्खे और अपने को कम समझने का स्वभाव पैदा करे।

अल्लाह के यहाँ सम्मान और ऊँचाई उन्हीं भाग्यवानों के लिये है जो दुनिया में अपने को तुच्छ समझ कर रहें।

पवित्र क़ुर्आन में है :—

व इबादुर्रहमानिल्लज़ी+न+यमशू+न +अलल+अर्ज़ि हौना।
(अलफ़ुर्क़ान रुकू ६)

وعباد الرحمن الذين يمشون على الأرض هوناً .
(الفرقان ع ٦)

अर्थ यह है :—बड़े दयालु अल्लाह के ख़ास बन्दे तो वही हैं जो पृथ्वी पर अपने को तुच्छ समझ कर झुक कर चलते हैं।

क़ुर्आन शरीफ़ में दूसरे स्थान पर है:—

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا
لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا
فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا ط-
(القصص-٤-٩)

तिल + कद्दारुल + आख़िरतु नज + अलुहा लिल्लज़ी ÷ न + लादुरदि + न + उलवंन + फ़िल अर्ज़ि वला फ़सादा।
(अल + क़ + सस रुकू६)

अर्थ यह है :—प्रलोक (आख़िरत) के इस घर यानी जन्नत का हक़दार हम उन्हीं को करें गे जो दुनिया में बड़ाई नहीं चाहते और उपद्रव करना (फ़साद करना) नहीं चाहते।

एक हदीस में है कि :—

"जिसने विनय (आजिज़ी) धारण की (इख़तियार की) अल्लाह तआला उसके पद (दरजे) इतने ऊँचे करे गा कि उसको "आला इल्ली यीन" में पहुँचाए गा (आला इल्लीयीन जन्नत का सब से ऊँचा स्थान है)

और घमण्ड अल्लाह तआला को इतना ना पसन्द है कि एक हदीस में आया है कि :—

जिस के दिल में राई के दाने के बराबर भी घमण्ड होगा तो अल्लाह तआला उसको औंधे मुंह नर्क में डालेगा।

दूसरी हदीस में है कि :—

जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी घमण्ड होगा वह जन्नत में न जा सकेगा ।

एक और हदीस में है कि:—

घमण्ड से बचो। घमण्ड ही वह पाप है जिस ने सबसे पहले शैतान को तबाह किया ।

अल्लाह तआला हम सब को इस शैतानी स्वभाव से बचाएँ और हमको विनय (आजिज़ी) और दीनता (इनकिसारी) प्रदान करें (बख़्शें) जो कि उसको पसन्द है और जोकि परहेज़गार का धर्म है। लेकिन यहाँ हम को यह याद रखना चाहिए कि हमारी दीनता (इनकिसारी) और हमारी विनय (आजिज़ी) अपने बारे में और अपने लिये होना चाहिये' सच्चाई और धर्म के लिये हमको हिम्मत ताक़त और मज़बूती से काम लेना चाहिये ऐसे समय के लिये अल्लाह और उसके रसूल का आदेश यही है। मोमिन की शान यही है कि वह अपने को तुच्छ और नीचा समझे और सच्चाई पर साहस (हिम्मत) के साथ जमा रहे और किसी के डर से सच्चाई के बारे में कमज़ोरी और ढीला पन न दिखाए ।

हिम्मत और बहादुरी

इस दुनिया में आदमी पर तकलीफ़ और मेहनत के समय पड़ते हैं । कभी कोई रोग लग जाता है तो कभी ग़रीबी का सामना करना पड़ता है कभी ऐब और शरारत करने वाले दुश्मन दुःख देते हैं कभी और तरह-तरह की बातें पैदा हो जाती है। ऐसी हालतों के लिये इसलाम की विशेष शिक्षा यह है कि

अल्लाह के बन्दे दिल को पोढ़ा रक्खें और हिम्मत से काम लें और सैकड़ों दुःख और कड़ियाँ हों फिर भी सच्ची राह न छोड़ें और ईमानदारी पर जमें रहें। ऐसे लोगों के लिये पवित्र क़ुर्आन यह शुभ (अच्छी) समाचार (ख़बर) सुनाता है:—

वल्लाहु युहिब्बुस्साबिरीन وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ

अर्थ यह है: — और अल्लाह धैर्य रखने वालों (सब्र करने वालों) से (जमे रहने वालों से) प्रेम रखता है।)

दूसरी आयत में है —
इन्नल्ला + ह + मअस्सबिरीन। اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ

अर्थ यह है: — अल्लाह बेशक धैर्य रखने वालों (सब्र करने वालों) (जमे रहने वालों) के साथ है। एक और आयत में उन ईमान वालों की बड़ी प्रशन्सा (तारीफ़) की गई है जो दुःख और कठिनाई के समय पर ईमानदारी और सच्चाई के लिये लड़ाई में जमें रहें और जान बचा कर न भागें।

वस्साबिरी + न + फ़िल बासाइ वज़्ज़राइ वहीनल + बास। उलाइकल्लज़ी + न + स + सदक़ू व + उलाइ + क + हुमुल + मुत्तक़ून ।

وَالصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَاۤءِ وَالضَّرَّاۤءِ
وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰۤئِكَ الَّذِيْنَ
صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰۤئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ

अर्थ यह है:— और जो लोग कष्ट और दुःख और लड़ाई के समय पर जमे रहने वाले हैं वही हैं जो सच्चे हैं और वहीं हैं जो अल्लाह से डरने वाले हैं।

एक हदीसमें है कि:—सब्र के प्रदान किये जाने से (दिये जाने से) उच्चतर (अधिक ऊँची) कोई देन नहीं है।

दूसरी हदीस में है कि:—सब्र आधा ईमान है। इस हदीस को जमउल फ़वायद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से नक़्ल किया गया है (बयान किया गया है।) और बे सबरी और डरपोकी इस्लाम की निगाह में बहुत ही बुरे ऐब हैं जिससे हुज़ूर अपनी प्रार्थनाओं में अल्लाह तआला की शरण (पनाह) माँगा करते थे। अल्लाह तआला हम सब को भी सब्र और हिम्मत प्रदान करें (दें) और बेसबरी और बे हिम्मती से अपने शरण (अपनी पनाह) में रक्खें।

दिल की सच्चाई और नियत का सुधार

दिल का सच्चा होना जिसको "इख़लास" कहते हैं और नियत का ठीक होना यह दो गुण सारे इस्लामी स्वभावों बल्कि पूरे इस्लाम का निचोड़ और तत्व (ख़ुलासा) हैं।

"**इख़लास**" का अर्थ यह है कि हम जो कार्य (काम) भी करें वह केवल अल्लाह के लिये और उसी को ख़ुश करने की इच्छा से करें और इसके अलावा हमारा और कोई मनोरथ (इच्छा) और प्रयोजन और उद्देश्य (मक़सद और ग़रज़) न हो।

इसलाम की जड़ "**तौहीद**" है। "तौहीद" का अर्थ है "एक खुदा ही को पूजना" और "तौहीद" बिना "इख़लास के पूरी नहीं हो सकती यानी पूरी तौहीद यही है कि हमारा हर काम अल्लाह के बताए हुए नियम के अनुसार हो और अल्लाह ही के लिये हो और हम उससे अल्लाह ही की खुशी चाहते हों और उसका बदला अल्लाह ही से चाहते हों।

हदीस में है कि :—

जिसने अल्लाह के लिये प्रेम किया और अल्लाह ही के लिये दुश्मनी की और अल्लाह ही के लिये दिया और अल्लाह के लिये देने से इनकार किया उसने अपना ईमान पूरा कर लिया।

अर्थ यह है कि जिसने अपनी "नातेदारी" अपने संबंध और अपने व्यवहारों को केवल अल्लाह ही की रज़ामन्दी के आधीन कर लिया यानी अपने इन सब में अपने मन की इच्छा या किसी दूसरी बात का विचार छोड़ दिया वही अल्लाह की निगाह में पूरा मोमिन है।

एक दूसरी हदीस में है कि :—

अल्लाह तुम्हारी शक्ल व सूरत और तुम्हारे शरीरों (जिस्मों) को नहीं देखता बल्कि तुम्हारे दिलों को देखता है। यानी अल्लाह तआला की ओर से बदला देने का व्यवहार "इख़लास" और दिल की नियत (इच्छा) के अनुसार होगा।

एक और हदीस में है कि :-

लोगों अपने कामों में "इख़लास" पैदा करो। अल्लाह तआला वही काम क़बूल करता है जो "इख़लास" से हो।

आख़िर में एक हदीस और लिखी जाती है जिसको सुनकर हम सब को काँप जाना चाहिए। हदीस की कुछ रिवायतों में है कि हज़रत अबूहुरैरा (अल्लाह उनसे राज़ी हो) जब इस हदीस को सुनते थे तो कभी-कभी बेहोश होकर गिर पड़ते थे। वह हदीस यह है कि:—क़ियामत में सबसे पहले पवित्र क़ुर्आन के

कुछ विद्वान (आलिम), कुछ शहीद और कुछ धनवान अल्लाह तआला के सामने लाये जायँगे अल्लाह तआला उनसे पूछेगा कि तुमने अपने जीवन में हमारे लिये क्या किया ? क़ुर्आन का विद्वान कहेगा कि मैंने अपने जीवन भर तेरी किताब को पढ़ा पढ़ाया। उसको खुद सीखा और दूसरों को सिखाया और यह सब तेरे लिये किया जवाब मिलेगा कि तू झूठा है। तूने तो यह सब कुछ अपने नाम के लिये किया था जो दुनिया में तुझको मिल चुका। फिर धनवान से पूछा जायगा कि हमने तुझको धन दिया था। तूने हमारे लिये क्या किया। वह कहेगा कि सवाब के सभी कामों में और भलाई के सभी मार्गों में तेरी खुशी के लिए खर्च किया। जवाब मिलेगा कि तू झूठा है तूने दुनिया में यह खर्च इसलिये जी खोलकर किया था कि तेरा नाम फैले और तू सखी दाता कहलाया जाय और लोग तेरी प्रशंसा करें सो दुनिया में यह सब कुछ तुझे मिल चुका। फिर इसी तरह शहीद से पूछा जायगा। वह कहेगा तेरी दी हुई सबसे क़ीमती चीज जान थी मैंने उसको भी तेरे लिये बलिदान कर दिया। जवाब मिलेगा कि तू झूठा है। तूने लड़ाई में इसलिये भाग लिया था कि तेरी बहादुरी की चर्चा हो और तेरा नाम हो सो यह सब तुझे मिल चुका और दुनिया में तेरी बहादुरी की चर्चा हो चुकी। फिर इन तीनों के लिये आदेश होगा कि इनको औंधे मुँह घसीट कर नर्क में डाल दिया जाय और यह लोग नर्क में डाल दिये जायँगे।

भाइयो! हमें चाहिए कि हम अपने कामों को इस हदीस की रौशनी में देखें और अपने दिलों और नियतों में "इख़लास" पैदा करने की कोशिश करें। हे अल्लाह ! हम सबको सच्चाई "इखलास" और खरापन दीजिये हमारी इच्छाओं और विचारों का सुधार कीजिये और हमको अपने सच्चे बन्दों में से कर दीजिये। आमीन

—:o:—

इस्लाम का दसवाँ पाठ

हर चीज से अधिक अल्लाह व रसूल और धर्म का प्रेम

भाइयो ! इस्लाम जिस तरह हमको अल्लाह व रसूल पर ईमान लाने, नमाज़ पढ़ने, रोज़ह रखने, हज करने और ज़कात देने आदि (वग़ैरह) की शिक्षा देता है और बहुत ज़ोर देते हुए ईमानदारी, परहेज़गारी, अच्छे स्वभावों और अच्छे कामों का आदेश देता है उसी प्रकार इस्लाम की एक ख़ास शिक्षा यह भी है कि हम दुनिया की हर चीज़ से ज़्यादह यहाँ तक कि अपने माँ बाप और बीबी बच्चों और जान और माल और इज़्ज़त और आबरू से भी ज़ियादह ख़ुदा और उसके रसूल से और उसके पवित्र धर्म से प्रेम करें यानी अगर कभी ऐसा टेढ़ा समय पड़ जाय कि धर्म पर जमे रहने और अल्लाह व रसूल के आदेशों पर चलने के कारण हमको जान, माल, इज़्ज़त और आबरू का डर हो तो उस समय भी हम अल्लाह व रसूल को और धर्म को न छोड़ें। जान, माल और इज़्ज़त और आबरू पर जो भी बन जाय बन जाने दें। पवित्र क़ुर्आन और हदीस में कई स्थानों पर आया है कि जो लोग अपना मुसलमान होना प्रकट करें (ज़ाहिर करें) लेकिन उनको अल्लाह व रसूल के साथ और धर्म के साथ गहरा प्रेम और सम्बन्ध न हो वह असली मुसलमान नहीं हैं बल्कि वह अल्लाह की ओर से कड़े दण्ड के योग्य हैं (क़ाबिल हैं)

पवित्र क़ुर्आन में है कि :—

क़ुल इन का + न + आबाउकुम व अब + नाउकुम + वइख़ + वानु- कुम व अज़ + वाजुकुम व अशीरतु- कुम वअम + वालुनिक् + त‌ःफ़ + तुमूहा वतिजारतुन तख़्शौ + न कसा + दहा + व + मसाकि + नु तर + ज़ौ + नहा + अहब्ब इलैकुम मिनल्लाहि व + रसूलिही + वजि- हादिन + फ़ी + सबीलि ही + फ़ + तरब्ब सू + हत्ता + यातियल्लाहु बिअम + रिह + वल्लाहु ला + यहदिल + क़ौमल फ़ासि कीन।

(सूरए तौबह रूकू ३)

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَاۤؤُكُمْ وَاَبْنَاۤؤُكُمْ
وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَ
عَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ ِۨاقْتَرَ
فْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ
كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَاۤ
اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ
وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا
حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ وَاللّٰهُ لَا
يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۠ -

(سورۂ توبہ-ع-۳)

अर्थ यह है :- हे रसूल तुम इन लोगों से कह दो कि अगर तुम्हारे माँ बाप, तुम्हारी सन्तान (औलाद), तुम्हारे भाई बिरादर, तुम्हारी स्त्रियाँ, तुम्हारा कुनबा, वंश, तुम्हारा माल और धन जिसे तुमने कमाया है और तुम्हारा व्यापार जिसमें तुम टोटा आ जाने को डरते हो और तुम्हारे रहने के घर जिनको तुम पसन्द करते हो, तो अगर यह सब चीज़ें तुमको अल्लाह से, उसके रसूल से और उसके दीन के लिये कोशिश करने से अधिक (ज्यादह) प्यारी है तो अल्लाह की ओर से निर्णय (फ़ैसला) हो जाने की

राह देखो और याद रक्खो कि अल्लाह आज्ञा न मानने वालों को सीधी राह नहीं दिखलाता है।

इस आयत से ज्ञात हुआ (मालूम हुआ) कि जो लोग अल्लाह व रसूल और धर्म से अधिक अपने माता, पिता, स्त्री, बच्चों और धन आदि से प्रेम रखते हों और जिनको अल्लाह व रसूल की ख़ुशी और दीन की सेवा और उन्नति (तरक्क़ी) से अधिक इन चीज़ों की चिन्ता हो (फ़िक्र हो) वह अल्लाह के बड़े नाफ़र्मान हैं और उसके क्रोध (ग़ुस्से) के पात्र (हक़्क़दार) हैं।

एक प्रसिद्ध (मशहूर) और शुद्ध (सहीह) हदीस में है :—

ईमान की मिठास और दीन का स्वाद उसी को मिलेगा जिसमे तीन बातें इकट्ठा हों। पहली बात यह कि अल्लाह व रसूल का प्रेम उसको सब चीज़ों से अधिक हो। दूसरी बात यह कि जिससे भी प्रेम करे केवल अल्लाह के लिये करे यानी असली और सच्चा प्रेम केवल अल्लाह ही से हो। तीसरी बात यह कि ईमान की ओर से कुफ़्र की ओर जाना उसके लिये आग में डाले जाने से अधिक कठिन बात हो।

इससे ज्ञात हुआ (मालूम हुआ) कि अल्लाह व रसूल की निगाह में असली और सच्चे मुसलमान वही हैं जिनको अल्लाह व रसूल का और इस्लाम का प्रेम दुनिया के सब लोगों और सब चीज़ों से अधिक हो यहाँ तक कि अगर वह किसी से और भी प्रेम करें तो अल्लाह ही के लिये करें और दीन से उनको ऐसा सम्बन्ध (लगाव) हो कि इस्लाम को छोड़कर कुफ़्र का धर्म स्वीकार (क़बूल) करना उनपर ऐसा भारी और उनके लिये

ऐसा कठिन हो जैसे जलती और भड़कती हुई आग में डाल दिया जाना।

एक और हदीस में हुज़ूर ने फ़रमाया :—

तुम में से कोई आदमी उस समय तक पूरे तौर से मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि उसको मेरे साथ प्रेम माँ बाप और सन्तान (औलाद) से और दुनिया के सब लोगों से अधिक न हो।

भाइयो ! ईमान सचमुच इसी का नाम है कि आदमी बिलकुल अल्लाह व रसूल का हो जाय। और वह अपने सब नातों और सम्बन्धों को और अपनी सब इच्छाओं को अल्लाह व रसूल के प्रेम पर और इस्लाम की राह में बलिदान कर सके जिस तरह पवित्र सहाबा (सत-संगियों) ने कर दिखाया और आज भी अल्लाह के सच्चे और "इख़लास" वाले बन्दों की यही दशा (हालत) है उनकी गिनती बेशक थोड़ी है। अल्लाह तआला हम सबको ऐसे ही बन्दों के साथ और उन्ही जैसा कर दे। आमीन !

—:o:—

इस्लाम का ग्यारहवाँ पाठ

अल्लाह के सच्चे दीन की सेवा करना और उसकी ओर बुलाना।

भाइयो! जिस तरह हमारे लिये यह आवश्यक (ज़रूरी) है कि अल्लाह और रसूल पर ईमान लाएँ और उनके बतलाए हुए नेकी और परहेज़गारी के उस सीधे और साफ़ रास्ते पर चलें जिसका नाम इस्लाम है इसी तरह हमारे लिये यह भी अनिवार्य (फ़र्ज़) है कि अल्लाह के जो बन्दे उस रास्ते की जानकारी नहीं रखते या अपने दिल के टेढ़े होने के कारण इस पर नहीं चल रहे हैं उनको भी इस्लाम की बातें बताने और उन पर चलाने की कोशिश करें यानी जिस तरह अल्लाह ने हमारे लिये यह अनिवार्य किया है कि हम उसके अच्छे और परहेज़गार बन्दे बनें उसी तरह उसने यह भी अनिवार्य किया है कि इस काम के लिये हम उसके दूसरे बन्दों में भी कोशिश करें। इसी का नाम दीन की ओर बुलाना है। अल्लाह तआला की निगाह में यह काम इतना बड़ा है कि उसने हज़ारों पैग़म्बर संसार में इसी काम के लिये भेजे और उन पैगम्बरों ने तरह-तरह की कठिनाइयाँ झेल कर और दुःख उठाकर इस्लाम की सेवा करने का और उसकी ओर बुलाने का यह कार्य पूरा किया और लोगों के सुधार के लिये और उनको ठीक रास्ता दिखाने के लिये कोशिश की। अल्लाह तआला उन पर और उन का साथ देने वालों पर बेगिनती रहमतें उतारे।

पैग़म्बरी का यह काम ख़ुदा के आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पूरा हो गया और अल्लाह तआला ने उन्हीं की ज़बान से अपना यह निर्णय (फ़ैसला) भी सबको सुना दिया कि इस्लाम की शिक्षा के लिये, उसकी ओर बुलाने के लिये और लोगों के सुधार और उनको सीधा रास्ता दिखाने के लिये आगे अब कोई नया पैग़म्बर नहीं भेजा जायगा बल्कि अब क़ियामत तक यह काम उन्हीं लोगों को करना होगा जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाये हुए सच्चे इस्लाम को स्वीकार (क़बूल) कर चुके हों और उनके धर्म शास्त्र (शरीअत) को मान चुके हों।

सारांश (ख़ुलासा) यह कि पैग़म्बरी का दर बन्द होने के बाद इस्लाम की ओर बुलाने, लोगों का सुधार करने और लोगों को सीधा रास्ता दिखाने के काम का पूरा बोझ अब हुज़ूर की उम्मत (नाम लेवाओं) के ऊपर डाल दिया गया है।

सच यह कि यह इस उम्मत की बड़ी उत्तमता है बल्कि पवित्र क़ुर्आन में इसी काम, इसी सेवा और इस बुलावे को इस उम्मत के पैदा किये जाने का उद्देश्य (मक़सद) बताया गया है। यानी यह उम्मत पैदा ही इसी काम के लिये की गई है।

कुन्तुम खै + र + उम्मतिन + उख़रिजत लिन्नासि तामुरू + न + बिलमारूफ़ि वतन + हौ + न + अनिल + मुन + करि, वतूमिनू + न + बिल्लाह	كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ
सूरए आले इम्रान (रुकू १२)	(آل عمران ع-١٢)

अर्थ यह हैं:—

हे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत तुम सबसे ऊँचे वह गरोह हो जो इस संसार में पैदा किया गया है आदमियों के सुधार के लिये। तुम आज्ञा देते हो नेकी करने के लिये और रोकते हो बुराई से। और अल्लाह पर सच्चा ईमान रखते हो।

इस आयत से ज्ञात हुआ (मालूम हुआ) कि मुहम्मदी उम्मत दुनिया के दूसरे समाजों और दूसरे गरोहों में इसीलिये उत्तम थी कि खुद ईमान और नेकी पर चलने के साथ-साथ दूसरों को भी नेकी के रास्ते पर चलाने और बुराइयों से बचाने की कोशिश करना उसकी विशेष सेवा और उसका प्रमुख (ख़ास) कर्तव्य था और इसी कारण उसको सबसे ऊँची और उत्तम उम्मत ठहराया गया था। इसी से यह भी ज्ञात (मालूम) हो गया कि अगर इस्लाम की ओर बुलाने और सीधी राह दिखाने और लोगों का सुधार करने का काम करना छोड़ दें तो फिर वह इस बड़ाई और उत्तमता के स्थान पर नहीं रह सकती बल्कि बहुत अपराधी है कि अल्लाह तआला ने इतने बड़े काम का बोझ उस पर रक्खा और उसने उसको उतार फेंका इसकी उदाहरण (मिसाल) बिलकुल ऐसी है कि कोई राजा सिपाहियों के किसी दल को यह काम सौंपे कि वह नगर में बुराइयों को रोके लेकिन वह सिपाही इस काम को न करें बल्कि वह खुद ही वह सब बुराइयाँ करने लगे जिनकी रोकथाम का काम उनको सौंपा गया था तो यह सिपाही किसी पारितोषिक (इनआम के अधिकारी (हक़दार) तो क्या होंगे, नौकरी से अलग करके कड़े दण्ड के अधिकारी होंगे। बल्कि अगर उनको दूसरे अपराधियों से अधिक दण्ड दिया जाय तो ठीक होगा। अफ़सोस की बात है कि इस समय इस्लामी

उम्मत की यही दशा है। इस्लाम की सेवा, उसकी ओर बुलाना, दुनिया का सुधार, और लोगों को सीधी राह दिखाना, इन कामों का तो नाम ही लेना व्यर्थ (बेकार) है जबकि ख़ुद मुसलमानों में सौ में दस पाँच भी ऐसे न निकलेंगे जिन के अन्दर ईमान और तक़वा (परहेज़गारी) हो। जो ख़ुद नेकियाँ करते हों और बुराइयों से दूर रहते हों। ऐसी हालत में हमारा सब से पहला काम यह है कि इस्लाम की ओर बुलाने, सुधार करने और सीधा रास्ता दिखाने का काम पहले इसी उम्मत के उन लोगों में किया जाय जो इस्लाम व ईमान, नेकी व परहेज़गारी के रास्ते से दूर जा पड़े हैं। इसका एक कारण तो यह है कि जो लोग अपने को मुसलमान कहते और कहलाते हैं उनकी इस्लामी हालत चाहे कैसी ही बिगड़ चुकी हो फिर भी वह इस्लाम, ईमान, ख़ुदा, रसूल और ऐसी ही दीन की बहुत सी बातों के साथ एक लगाव, एक नाता और थोड़ा बहुत प्रेम रखते हैं और इस्लामी (सोसाइटी) और बिरादरी का एक अंग बन चुके हैं इसलिये हमारे लिये बहुत आवश्यक है कि हम उनके सुधार की और उनको सीधा रास्ता दिखाने की चिन्ता अधिक करें जिस तरह अपनी सन्तान (औलाद) और अपने नातेदारों की देखभाल दूसरे लोगों से अधिक आवश्यक होती है।

एक दूसरा कारण यह भी है कि दुनिया के लोग मुसलमानों की यह गिरी हुई हालत देख कर इसलाम की उत्तमता और उसके गुणों को समझ नहीं सकते बल्कि उलटे उससे घिन करने लगते हैं। सदा से साधारण (मामूली और आम) लोगों का यही नियम है कि वह किसी धर्म के मानने वालों की दशा और उनके स्वभावों और कामों को देख कर उस धर्म के बारे में अच्छी या बुरी राय बनाया करते हैं।

जिस समय में मुसलमान, इस्लाम के आदेशों पर पूरी तरह चलते थे तो दुनिया के लोग केवल उनको देख कर इस्लाम की ओर खिचते थे और पूरे-पूरे गिरोह और पूरी-पूरी जातियाँ इस्लाम स्वीकार (क़बूल) कर लेती थीं लेकिन जबसे मुसलमानों में अधिक संख्या (तादाद) ऐसे लोगों की हो गई जो अपने को मुसलमान तो कहते हैं लेकिन उनके काम और स्वभाव इस्लामी नहीं हैं और उनके दिल ईमान और तक़व के प्रकाश (रोशनी) से ख़ाली हैं, उस समय से दुनिया इस्लाम के बारे में बुरे विचार रखने लगी है।

सारांश (ख़ुलासा) यह कि हमको यह सच्ची बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये कि इस्लामी उम्मत का रहन सहन, स्वभाव, व्य-वहार और उनके जीवन का रंग ढंग ही वह चीज़ें है जो दूसरों के लिये इस्लाम धर्म को समझने का काम देती है। अगर यह सब चीज़ें अच्छी होंगी तो दुनिया इस्लाम के बारे में अच्छा विचार बनाएगी और आप से आप इस्लाम की ओर लपकेगी और अगर मुसल-मानों के जीवन का रंग ढंग और उनके काम और व्यवहार बुरे होंगे तो फिर दुनिया इस्लाम ही को बुरा जानेगी और फिर अगर इस्लाम की ओर बुलाया भी जायगा तो दुनिया लपकने के बजाय उससे भागेगी दूसरों में इस्लाम की ओर बुलाने का काम भी जभी सफ़ल हो सकता है जब पहले ख़ुद मुसलमानों में नेकी और परहेज़गारी का चलन हो जाय इस लिये यों भी यही आवश्यक है कि पहले सुधार और सीधा रास्ता दिखाने का काम मुसलमानों ही में किया जाय और पूरी ताक़त इस कोशिश में लगा दी जाय कि मुसलमानों का जीवन इस्लाम व ईमान, नेकी व परहेज़गारी के साँचे में ढल जाय। पवित्र क़ुरआन में इस काम को यानी लोगों के सुधार को और उनको सीधा रास्ता दिखाने को और उनमें नेकी और परहेज़गारी फैलाने को "जिहाद" यानी अल्लाह

तआला के रास्ते में जान लड़ा देना भी कहा गया है बल्कि "जिहादे कबीर" यानी बड़ा जिहाद कहा गया है और इसमें कोई शक नहीं कि अगर यह काम सच्चाई और अच्छाई के साथ केवल अल्लाह की ख़ुशी के लिये किया जाय तो यह अल्लाह की निगाह में बहुत बड़ा जिहाद है बहुत से लोग समझते हैं कि "जिहाद" केवल उस लड़ाई का नाम है जो धर्म के नियम के अनुसार अल्लाह के रास्ते में लड़ी जाय लेकिन ठीक बात यह है कि इस्लाम की ओर बुलाने के लिये और ख़ुदा के बन्दों के सुधार के लिये जिस समय जो कोशिश की जा सकती हो वही उस समय का विशेष "जिहाद" है। पवित्र रसूल (उन पर लाखों सलाम) नबी होने पर बारह तेरह साल तक मक्के शरीफ़ के पवित्र नगर में रहे। इस पूरी मुद्दत में आपका और आपके सतसंगियों का "जिहाद" यही था कि दुश-मनी और कठिनाइयों के बीच में सच्चे दीन पर पूरी तरह जमे रहे और दूसरों का सुधार करने और उनको सीधी राह दिखाने की कोशिश करते रहे और ख़ुदा के बन्दों को खुले छुपे जैसे भी बना दीन की ओर बुलाते रहे।

साराँश (ख़ुलासा) यह कि अल्लाह को भूले हुए और रास्ते से भटके हुए बन्दों को अल्लाह से मिलाने की और सीधी राह पर चलाने की कोशिश करना और इस रास्ते में अपना समय और धन लगाना और अपना चैन और सुखभेंट चढ़ाना यह सब अल्लाह के यहाँ "जिहाद" ही में गिना जाता है बल्कि अपने समय का विशेष "जिहाद" यही है।

सूरए फ़ुर्क़ान की इस आयत "व जाहिदहुम बिही जिहादन कबीरा। के बारे में तफ़सीर। وجاهدهم به جهادا كبيرا

(अर्थ) लिखने वालों की राय यही है कि इससे इस्लाम

की ओर बुलाना और दीन पहुँचाना समझा गया है। इस कार्य के करने वालों को आख़िरत में जो बदला और सवाब मिलने वाला है और न करने वालों के लिये अल्लाह तआला के ग़ुस्से का जो डर है उसका कुछ अन्दाज़ा नीचे लिखी हुई आयतों और हदीसों से हो सकता है:—

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (अल्लाह तआला उनसे ख़ुश हों) का ब्यान है कि पवित्र रसूल ने (उनपर सलाम हो) फ़रमाया :—

जो आदमी सीधी राह की तरफ़ लोगों को बुलाए और नेकी पर चलने के लिये उनसे कहे तो जो लोग इस बुलाने वाले की बात मान कर जितनी नेकियाँ और भलाइयाँ करेंगे और इन नेकियों का जितना सवाब इन सब करने वालो को मिलाकर मिलेगा उतना ही सवाब अकेले उसको भी मिलेगा जिसने उनको नेकी की ओर बुलाया और इसके कारण ख़ुद नेकी करने वालों के सवाब में कोई कमी न होगी।

इस हदीस से ज्ञात हुआ (मालूम हुआ) कि अगर मान लिया जाय कि आपके बुलाने और कोशिश करने से दस बीस आदमियों का भी सुधार हो गया और वह ख़ुदा व रसूल को पहचानने लगे और इस्लाम के रास्ते पर चलने लगे, नमाज़ पढ़ने लगे और इसी तरह दूसरे फ़र्ज़ अदा करने लगे और पापों और बुरी बातों से बचने लगे तो इन कामों का जितना सवाब उन सबको मिलेगा उन सब के जोड़ के बराबर अकेले आप को मिलेगा। अगर आप सोचें तो आपको मालूम होगा कि इतना सवाब कमाने का कोई रास्ता है ही नहीं कि एक आदमी को सैकड़ों आदमियों की नेकियों और इबादतों का सवाब मिल

जाय। एक दूसरी हदीस में है कि पवित्र रसूल ने हज़रत अली (अल्लाह उनसे ख़ुश हो) से फ़रमाया कि:—

हे अली ! अल्लाह की क़सम अगर तुम्हारी कोशिश से एक आदमी को भी सीधा रास्ता मिल जाय तो तुम्हारे लिये यह बहुत से लाल ऊँटों के मिलने से अधिक अच्छा है (अरब के लोग लाल ऊँटों को बड़ा धन समझते थे।)

यह सच्ची बात है कि अल्लाह के बन्दों के सुधार और उनको सीधी राह दिखाना जैसा कि पहले कहा गया है बड़े ऊँचे दरजे की सेवा और नेकी है और यह पैग़म्बरों का विशेष काम ड्यूटी है। फिर भला दुनिया की बड़ी से बड़ी दौलत को उसके सामने क्या क़ीमत हो सकती है।

पवित्र रसूल ने (उन पर लाखों सलाम) एक और हदीस में लोगों के सुधार और उनको सीधी राह दिखाने के महत्व को एक उदाहरण (मिसाल) से समझाया है। आपकी हदीस का ख़ुलासा यह है।

मान लो कि एक नाव है जिसमें नीचे ऊपर दो दरजे हैं और नीचे के दरजे वाले यात्रियों को पानी ऊपर के दरजे से लाना पड़ता है जिससे ऊपर वाले यात्रियों को कष्ट (तकलीफ़) होती है और वह उनपर नाराज़ होते हैं तो अगर नीचे वाले यात्री अपनी मूर्खता और ग़लती से नीचे ही से जल प्राप्त करने के लिये नाव के निचले भाग में छेद करने लगें और ऊपर के दरजे वाले उनको इस ग़लती से रोकने की कोशिश न करें तो नतीजा यह होगा कि नाव सभी को लेकर डूब जायगी और अगर ऊपर वाले यात्रियों ने समझा बुझा कर नीचे के दरजे

वालों को इस काम से रोक दिया तो वह उनको भी बचा लेंगे और ख़ुद भी बच जायंगे। हुज़ूर ने फ़रमाया बिलकुल इसी तरह पापों और बुराइयों की भी दशा (हालत) है। अगर किसी जगह के लोग पापों और बुराइयों में फँसे हुए हों और वहाँ के समझदार और भले लोग उनके सुधार और उनको सीधी राह दिखाने की कोशिश न करें तो नतीजा यह होगा कि पापियों और अपराधियों के कारण ख़ुदा की ओर से दण्ड उतरेगा और फिर सभी उसकी लपेट में आ जायँगे और अगर उनको पापों और बुराइयों से रोकने की कोशिश कर ली गई तो फिर सभी दण्ड से बच जायँगे।

एक और हदीस में है :—

कि पवित्र रसूल ने (उन पर लाखों सलाम) बड़ा ज़ोर देते हुए क़सम खाकर फ़रमया:—

मैं उस अल्लाह की क़सम खाता हूँ कि जिसके अधिकार में मेरी जान है कि तुम अच्छी बातों और नेकियों के लिये लोगों से कहते रहो और बुराइयों से उनको रोकते रहो। याद रक्खो कि अगर तुमने ऐसा न किया तो हो सकता है कि अल्लाह तुम पर कोई कड़ा दण्ड डाल दे और फिर तुम उससे दुआएँ करो और तुम्हारी दुआएँ भी उस समय न सुना जायँ।

भाइयो! इस ज़माने के कुछ ख़ुदा तक पहुँचे हुए पाक साफ़ दिल वाले सन्तों का विचार है कि मुसलमानों को एक मुद्दत से कठिनाइयाँ, कष्ट और अपमान (ज़िल्लत) घेरे हुए हैं और जिन उलझनों में वह फँसे हुए हैं वह हज़ारों प्रार्थनाओं (दुआओं)

पाठों (वज़ीफ़ों) और जापों से भी नही टल रही हैं इसका विशेष कारण यही है कि हम दीन की सेवा के, दीन की ओर बुलाने के, लोगों के सुधार के और उनको सीधी राह दिखाने के काम को छोड़े हुए है जिसके लिये हम पैदा किये गए हैं और पैगम्बरी समाप्त हो जाने के कारण जिसके हम पूरे तौर पर ज़िम्मेदार बनाए गए है और दुनिया का भी ऐसा ही नियम है कि जो सिपाही अपनी विशेष डिउटी पूरी न करे उसको अलग कर दिया जाता है और बादशाह जो दण्ड चाहता है उसको देता है।

आओ हम सब पक्का इरादा करें कि हम सब यह डिउटी और कर्तव्य (फ़र्ज़) पूरा करेंगे। अल्लाह तआला हमारी सहायता करें अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि :—

अल्लाह उन लोगों की अवश्य सहायता करेगा जो उसके दीनकी सहायता करेंगे।

—०—

इसलाम का बारहवाँ पाठ

दीन पर मज़बूती के साथ जमे रहना

ईमान लाने के बाद अल्लाह तआला की ओर से बन्दे पर जो ज़िम्मेदारी आ जाती है उनमें से एक बड़ी ज़िम्मेदारी यह है कि बन्दा पूरी मज़बूती के साथ और पूरी हिम्मत के साथ इस्लाम पर जमा रहे और ज़माने की हालत चाहे जैसी हो जाय और उसके पैरों को कितना ही डगमगाना चाहे लेकिन बन्दा पहाड़ की तरह अपनी जगह पर जमा रहे और किसी दशा में इस्लाम की रस्सी को हाथ से छोड़ने के लिये तय्यार न हो इस का नाम "इसतिक़ामत" है क़ुर्आन शरीफ़ में ऐसे लोगों के लिये बड़े पारितोषिकों (इनआमों) और ऊँचे पदों का बयान किया गया है।

एक जगह पर कहा गया है कि :—

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ
ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ
الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا
وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ
تُوعَدُونَ ۝ نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ

इन्नल्लज़ी+न+क़ालू रब्बुन-ल्लाहु सुम्मस्तक़ामू त+तनज़्ज़लु अलैहिमुल+मलाइकतु अल्ला तख़ाफ़ू वला तह+ज़नू व अब+शिरू बिल+जन्नतिल्लती कुन्तुम तूअदून। नह+नु औलियाउकुम फ़िल+हया+तिद्दुनिया वफ़िल आख़िर+रति।

व+लकुम फ़ीहा मा तश + तही अन+फ़ुसुकुम व + लकुम फ़ीहा मा+तद्दऊन। नुज़ुलम+मिन+ग़फ़ूरिर्रहीम ।

(हामीम सज्दह रुकू ४)

وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ۝ نُزُلًا مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ ۝

(حٰمٓ السجدة ۔ ع ۔ ۴)

अर्थ यह है:—जिन लोगों ने दिल से इस्लाम को स्वीकार (क़बूल) करके बचन दे दिया कि हमारा पालन हार केवल अल्लाह है और हम केवल उसी के बन्दे हे और फिर वह अपने इस बचन पर ठीक ठीक और पक्के तौर पर जमे रहे यानी अपने बचन को पूरा करते रहे और उससे कभी न हटे उन पर अल्लाह की ओर से फ़रिश्ते यह सँदेश लेकर उतरेंगे कि कुछ चिन्ता न करो और किसी बात का अफ़सोस न करो और उस जन्नत के प्राप्त होने से ख़ुश रहो जिसका तुमको बचन दिया गया था। हम तुम्हारे सहायक हैं दुनिया के जीवन में भी और आख़िरत में भी और तुम्हारे लिये उस जन्नत में वह सब कुछ होगा जो तुम्हारा जी चाहेगा और तुम्हें वह सब कुछ मिलेगा जो तुम माँगोगे। यह सत्कार (आदर) होगा तुम्हारे क्षमा करने वाले और दया करने वाले पालनहार की ओर से।

सुब हानल्ला ! दीन पर पूरी मज़बूती से जमे रहने वालों और बन्दा होने का हक़ अदा करने वालों के लिये इस आयत में कितनी बड़ी "बशारत" (शुभ समाचार) है। सच तो यह है कि अगर जान और माल सब कुछ भेंट चढ़ाकर भी किसी को यह पद (दर्जा) मिल जाय तो वह बड़ा भाग्यवान है।

एक हदीस में है कि :—

पवित्र रसूल से एक सहाबी (सतसंगी ने) निवेदन (अर्ज़) किया कि हज़रत मुझे हर तरह से पूरा कोई ऐसा उपदेश दीजिये (नसीहत कीजिये) कि आप के बाद फिर किसी से कुछ पूछने की ज़रूरत न पड़े। आपने फ़रमाया कि कहो बस अल्लाह मेरा रब (पालन हार) है और इस पर पूरे तौर पर जमे रहो (और इसके अनुसार आज्ञाओं पर चलते हुए जीवन बिताते रहो)।

पवित्र क़ुर्आन में हमको सीधी राह दिखाने के लिये अल्लाह तआला ने अपने कई सच्चे बन्दों की ऐसी नसीहत से भरपूर कहानियाँ सुनाई हैं जो बड़ी ही कड़ी कठिनाई में दीन पर जमे रहे और बड़े से बड़ा लालच और कड़े से कड़े कष्टों का डर भी उनको दीन से नहीं हटा सका। इनमें से एक कहानी तो उन जादूगरों की है जिन्हें फ़िरऔन ने हज़रत मूसा (उनपर सलाम हो) से मुक़ाबिला करने के लिये बुलाया था और बड़े पारितोषिक (इनआम) और आदर का उनको बचन दिया था लेकिन ठीक मुक़ाबिले ही के समय जब हज़रत मूसा (उन पर सलाम हो) के धर्म की सच्चाई उन पर खुल गई तो न तो उन्होंने इसकी परवाह की कि फ़िरऔन ने जिस पारितोषिक आदर और ऊँचे ऊँचे पदों (उहदों) का बचन हमको दिया है वह हमको न मिलेंगे, और न इसकी परवाह की कि फ़िरऔन हमको कितना बड़ा दण्ड देगा। ख़ुलासा यह कि उन्होंने हर प्रकार के डर से बे परवाह होकर भरे जनसमूह (मजमे) में पुकार कर कह दिया :—

आमन्ना बिरब्बि हारू+न+ वमूसा। "آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَىٰ"

यानी हारून और मूसा जिस पालनहार की पूजा की ओर बुलाते हैं हम उस पर ईमान ले आए फिर जब ख़ुदा के दुश्मन फ़िरऔन ने उनको धमकी दी कि मैं तुम्हारे हाथ पाँव कटवा के सूली पर लटकवा दूँगा तो उन्होंने पूरे ईमान की ताक़त से जवाब दिया :—

فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ اِنَّمَا تَقْضِىْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَاؕ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا

(سورۂ طٰہٰ ـ ع ـ ۳)

फ़क़्‌+ज़िमा +अन + त + क़ाज़ । इन्नमा तक़्ज़ी + हाज़िहिल हया + तिद्दुनिया । इन्ना + आमन्ना बिरब्बिना लियग़ + फ़ि + र + लना ख़ता + याना ।

सूरए ताहा रुकू ३

अर्थ यह है :—तुझे जो आज्ञा देनी हो दे डाल । तू अपनी आज्ञा केवल इसी कुछ दिन रहने वाली दुनिया की ज़िन्दगी में ही तो चला सकता है और हम तो अपने सच्चे रब (पालनहार) पर ईमान इसलिये लाए हैं कि वह हमारे पाप क्षमा कर दे । और इससे भी अधिक उपदेश देने वाली कहानी ख़ुद फ़िरऔन की पत्नी की है । आप जानते है कि फ़िरऔन मिश्र देश का अकेला महाराजा था और उसकी यह पत्नी मिश्र देश की रानी होने के साथ फ़िरऔन के दिल की भी मालिक थी । बस इससे अन्दाज़ा लगाइये कि फ़िरऔन की पत्नी को दुनिया का कितना आदर और चैन प्राप्त था लेकिन जब हज़रत मूसा (उन पर सलाम हो) के धर्म और उनके बुलाव की सच्चाई अल्लाह की उस बन्दी पर खुल गई तो उसने बिल-कुल इसकी परवाह न की कि फ़िरऔन मुझ पर कैसे-कैसे अत्याचार करेगा और दुनिया के इस चैन के स्थान पर मुझे

कितनी कठिनाइयां और कैसे कष्ट झेलने पड़गे। इन सब बातों से बिलकुल बे परवाह होकर उसने अपने ईमान को छुपाया नहीं और फिर ईमान और सच्चाई के रास्ते में अल्लाह की उस बन्दी ने ऐसे-ऐसे दुःख झेले जिनको सोच कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं और कलेजा मुँह को आता है। फिर अल्लाह तआला की ओर से उनको यह पद मिला कि पवित्र क़ुर्आन में बड़े आदर के साथ उनका बयान किया गया और मुसलमानों के लिये उनका दुःख झेलना और अपने चैन को भेंट चढ़ाना नमूना बनाया गया।

पवित्र क़ुर्आन में हैं :—

व+ज़+र बल्लाहु + म+ सलिल्लज़ी+न+आ + मनुम+ र+अ+त+फ़िरऔ+न+इज़+ क़ालत+रब्बिल+निली इन+द+ क+बैतन+फ़िल+ जन्नति वन-ज्जिनी मिन फ़िरऔ+न + व+ नज्जिनी मिनल+क़ौमिज़्ज़ालिमीन।

(सूरए तहरीम। रुकू २)

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا
امْرَاَةَ فِرْعَوْنَ اِذْ قَالَتْ رَبِّ
ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ
وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ
مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝

(سورۂ تحریم۔ ع ۲)

अर्थ यह है :—और ईमान वालों के लिये अल्लाह तआला एक उदाहरण (मिसाल) देते हैं फ़िरऔन की पत्नी (बीबी) की (जिनका नाम आसिया है।) जबकि उसने प्रार्थना (दुआ) की कि हे मेरे रब पालनहार) तू मेरे वास्ते जन्नत में अपने पास एक घर बनादे और मुझे फ़िरऔन की शरारत और अत्याचार (ज़ुल्म) और उसके बुरे कामों से छुटकारा दे और इस अत्याचार करने वाले गरोह से भी मुझे बचा ले।

सुबहानल्लाह ! (पवित्र है अल्लाह) कैसा ऊँचा दर्जा है बीबी आसिया का कि अल्लाह तआला ने उनका नमूना पूरी उम्मत यानी हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (उनसे अल्लाह ख़ुश हो) से लेकर क़ियामत तक के सब मुसलमानों क सामने रक्खा।

पवित्र हदीस में है कि :—

पवित्र मक्का नगर में जब मूर्ति पूजा करने वालों ने मुसलमानों को बहुत सताया और उनका अत्याचार बहुत बढ़ गया तो कुछ सहाबा (सतसंगियों) ने रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निवेदन किया (अर्ज़ किया) कि हुज़ूर अब इन ज़ालिमों के अत्याचार सीमा (हद) से बढ़े जा रहे हैं इसलिये आप अल्लाह तआला से प्रार्थना करें तो हुज़ूर ने जवाब दिया कि तुम अभी से घबरा गये। तुमसे पहले सच्चाई के रास्ते पर चलने वालों के साथ यहाँ तक अत्याचार हुआ है कि लोहे की धारदार नुकीली कँघियाँ उनके सरों में चुभोकर खैंच दी जाती थीं और किसी के सर पर आरा चला के बीच से दो टुकड़े कर दिये जाते थे लेकिन ऐसे ऐसे अत्याचार भी उनको अपने सच्चे धर्म से नहीं फेर सकते थे और वह अपना दीन नहीं छोड़ते थे।

अल्लाह तआला हम कमज़ोरों को भी अपने इन सच्चे बन्दों की हिम्मत और उनकी मज़बूती का कोई अंश (हिस्सा) प्रदान करें (बख्श दें) और अगर ऐसा कोई समय भाग्य से आ ही जाय तो अपने इन सच्चे बन्दों के पीछे चलने की सहायता प्रदान करें।

कैसी सुन्दर रीति बनाई,
चरणों में मिट जाने की।
अपने लाल लहू में रँगकर,
अपने प्राण गँवाने की॥
करुणामय की रहमत से इन,
पाक शहीदों पर सूफ़ी।
आज्ञा हो ठंडे झोंको को,
दया पुष्प बरसाने की॥

—:०:—

इस्लाम का तेरहवाँ पाठ

दीन के लिये कोशिश, दीन की सहायता और रक्षा

ईमान वालों से अल्लाह तआला की एक विशेष माँग और उनको एक विशेष आदेश यह भी है कि जिस सच्चे दीन को और अल्लाह की इबादत वाले जिस अच्छे नियम को उन्होंने सच्चा और अच्छा समझकर पकड़ा है वह उसको जीवित और हरा भरा रखने के लिये और उसको अधिक से अधिक रिवाज देने के लिये जो कोशिश वह कर सकते हों अवश्य (ज़रूर) करें। दीन की विशेष भाषा में इसका नाम "जिहाद" है यानी दीन के लिये जान तोड़ कोशिश करना। जैसी दशा हो "जिहाद" की भी वैसी शक्ल हो जाती है जैसे किसी ज़माने में ऐसी दशा हो जाय कि दीन पर जमे रहना ख़ुद अपने लिये, अपने घर वालों के लिये, और दूसरे मुसलमानों के लिये कठिन हो जाय और दुःखों और कष्टों का सामना हो जाय तो ऐसी दशा में ख़ुद अपने व अपने घर वालों के और दूसरे मुसलमानों के दीन पर जमे रहने की कोशिश करना और मज़बूती से दीन पर जमे रहना बहुत बड़ा "जिहाद" है। इसी तरह अगर किसी ज़माने में मुसलमान कहलाने वाली जाति अनपढ़ और नादान होने के कारण अपने दीन से दूर होती चली जा रही हो तो उसके सुधार का और उसकी शिक्षा (तालीम) और दीक्षा (तरबियत) की कोशिश

करना और इसमें अपनी जान खपाना और अपना धन लगाना भी "जिहाद" ही का एक रूप है। इसी तरह अल्लाह के जो बन्दे अल्लाह के सच्चे दीन से अनजान हैं तो प्रेम और हमदर्दी के साथ उन तक अल्लाह का दीन पहुँचाना और उनमें इस्लाम की जानकारी पैदा करना और इस काम के लिये दौड़धूप और मेहनत करना भी "जिहाद" ही की एक शक्ल है।

अगर ऐसा ज़माना आजाय कि इस्लामी समाज के हाथ में राजनैतिक (हुकूमत की) ताक़त हो और दीन की माँग यही हो कि उसके लिये राजनैतिक ताक़त से काम लिया जाय तो दीन की रक्षा और सहायता के लिये हुकूमत की ताक़त को काम में लाना "जिहाद" है। लेकिन उसके जिहाद होने और उससे सवाब मिलने की दो शरतें हैं। एक यह कि यह काम दुनिया के किसी लाभ के लिये या दूसरी जाति से दुशमनी के कारण ना किया गया हो बल्कि यह काम केवल अल्लाह की आज्ञा पूरी करने और दीन की सेवा और सहायता करने ही के लिये किया गया हो दूसरी शर्त यह है कि अल्लाह तआला के आदेशों का पूरा-पूरा पालन किया गया हो। इन दो शर्तों को पूरा किये बिना अगर राजनैतिक ताक़त से काम लिया जायगा तो वह "जिहाद" न होगा उपद्रव (फ़साद) होगा।

इसी तरह अत्याचार करने वाले राजाधिकारियों (हाकीमों) के सामने चाहे वह राजाधिकारी मुसलमान हो या दूसरे धर्म वाले हों सच्ची बात कहना जिहाद का एक विशेष रूप है। जिसको हदीस में **"अफ़ज़लुल जिहाद"** फ़रमाया गया है यानी जिहादों में सबसे ऊँचा जिहाद।

दीन के लिये कोशिश करने और उसकी सहायता और रक्षा करने के यह सभी काम जिनका अभी ऊपर बयान हुआ अपने-अपने समय पर इस्लाम के अनिवार्य काम हैं और इन सब पर 'जिहाद' का नाम लागू है अब इस तरह के कामों की बड़ाई और अच्छाई जानने के लिये कुछ आयतें और हदीसें सुन लीजिये।

वजाहिदू फ़िल्लाहि हक्क़ + जिहादिही हुवजन + तबाकुम।
(सूरतुलहज रूकू १०)

وَجَاهِدُوْا فِى اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ هُوَاجْتَبٰكُمْ -

(سورۃ الحج - ع - ١٠)

अर्थ यह है:—और कोशिश करो अल्लाह के रास्ते में जैसा कि उसका हक़ है। उसने अपने धर्म के लिये तुमको चुना है।

या एय्युहल्लज़ी + न + आ + मनू + हलअदुल्लुकुम अलातिजा + रतिन तुन्जीकुम मिन अज़ाबिन अलीम तूमिनू + न + बिल्लाहि + व + रसूलिही वतुजाहिदू + न + फ़ी + सबालिल्लाहि विअम्वालिकुम + वअन + फ़ुसिकुम ज़ालिकुम + ख़ैरुल्लकुम + इन + कुन्तुम + ता + लमून। यग़ + फ़िर + लकुम + ज़नु + बकुम + वयुदखिलकुम + जन्नातिन + तज + री मिन + तह + तिहलअन + हारु + व मसाकि + न + तय्यि + बतन + फ़ी + जन्नाति + अदन् + ज़ालिकल + फ़ौज़ुल अज़ीम।
(सूरए सफ़ रकू २)

يا أيها الذين أمنوا هل أدلكم وعلى تجارة تنجيكم ومن عذاب أليم . تؤمنون بالله ورسوله و تجاهدون فى سبيل الله بأموالكم و أنفسكم و ذلكم خيرولكم إن كنتم تعلمون . يغفرلكم ذنوبكم و يدخلكم جنت تجرى من تحتها الأنهار و مساكن طَيِّبَةً فِىْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ۚ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ -

(سورۃ صف - ع - ٢)

अर्थ यह है :—हे ईमान वालो क्या मैं तुम्हें एक ऐसे व्यापार का पता दे दूँ जो तुमको दुःख भरे दण्ड से बचा ले। वह यह है कि अल्लाह और उसके रसूल पर तुम अपने यक़ीन को पक्का करो और उसके रास्ते में अपने धन और अपने जी जान से कोशिश करो। यह बहुत अच्छा सौदा है तुम्हारे लिये अगर तुम्हें समझ बूझ हो (अगर तुमने ऐसा किया तो) वह तुम्हारे अपराध क्षमा कर देगा और तुमको आख़िरत की उन फुलवाड़ियों में जगह देगा जिनके नीचे नहरें चलती होंगी और जन्नत के सुन्दर घरों में तुमको बसाएगा। यह तुम्हारी बड़ी सफ़लता है।

पवित्र हदीस में है कि :—

हुज़ूर ने एक दिन व्याख्यान दिया (वाज़ कहा) उसमें फ़रमाया :—

अल्लाह पर पूरा यक़ीन रखना और दीन के लिये कोशिश करना सबसे ऊँचा काम है।

एक और हदीस में है कि :—

जिस बन्दे के पाँव पर ख़ुदा की राह में चलने के कारण धूल लगी, यह नहीं हो सकता है कि फिर उसको नर्क की आग छू सके।

एक और हदीस में है कि :—

तुम में से किसी का ख़ुदा की राह में खड़ा होना और भाग लेना अपने घर के कोने में रहकर सत्तर साल नमाज़ पढ़ने से अच्छा है।

अल्लाह तआला हम सबको इस योग्य (क़ाबिल) बनाए कि हम भी दीन की सहायता और रक्षा का यह सवाब प्राप्त कर सकें।

—१—

इस्लाम का चौदहवाँ पाठ

शहादत की बड़ाई और शहीदों का ऊँचा दर्जा

सच्चे दीन इस्लाम पर जमे रहने के कारण अगर अल्लाह के किसी बन्दे या बन्दी को जान से मार डाला जाय या दीन की कोशिश और रक्षा में किसी भाग्यवान की जान चली जाय तो इस्लाम की विशेष भाषा में उसको "शहीद" कहते हैं और अल्लाह के यहाँ ऐसे लोगों का बहुत ऊँचा दर्जा है। ऐसे लोगों के बारे में पवित्र क़ुरआन में कहा गया है कि उनको कभी भी मरा हुआ न समझो बल्कि (शहीद) हो जाने के बाद अल्लाह की ओर से इनको विशेष जीवन मिलता है और इनपर तरह-तरह की नेमतों की वर्षा होती रहती है।

वला + तह + सबन्नल्लज़ी + न + क़ुतिलू + फ़ी + सबीलिल्लाहि अम्वातन + बल + अहयाउन इन + द + रबिऽहिम युर + ज़क़ून।
(सूरए आल इमरान रुकू-१७)

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا بَلْ اَحْيَاءٌ
عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ۙ
(سورۂ آل عمران۔ ع۔ ١٧)

अर्थ यह है :—जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाँय उनको कभी भी मरा हुआ न समझो बल्कि वह जीवित हैं अपने पालनहार के पास। उनको तरह-तरह की नेमतें दीं जाती हैं।

शहीदों पर अल्लाह तआला का कैसा-कैसा प्यार होगा और उनको कैसे - कैसे पारितोषिक (इनआम) मिलेंगे । इसका अन्दाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस हदीस से किया जा सकता है :—

जन्नतियों में से कोई भी यह न चाहेगा कि उसको फिर दुनिया में लौटाया जाय चाहे उनसे कहा भी जाय कि तुमको पूरी दुनिया दे दी जायगी लेकिन शहीद इसकी इच्छा करेंगे कि एकबार नहीं उनको दसबार फिर दुनिया में भेजा जाय ताकि हर-बार वह अल्लाह के रास्ते में शहीद हो कर आएँ । उनकी यह इच्छा शहादत के ऊँचे दर्जे और शहादत के विशेष पारितोषिक (इनाआम) देखकर होगी ।

शहादत की इच्छा और उसकी लालसा में खुद रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह दशा थी !

कि एक हदीस में यह फ़रमाया .—

क़सम उसकी कि जिसके बश में मेरी जान है कि मेरा जी चाहता है कि मैं अल्लाह की राह में मारा जाऊँ कि मुझे ज़िन्दा कर दिया जाय और फिर मैं मारा जाऊँ और फिर मुझे ज़िन्दा किया जाय और फिर मैं मारा जाऊँ ।

एक हदीस में है :—

शहीद को अल्लाह की ओर से छ पारितोषिक (इनाआम) मिलते हैं एक यह कि उसको तुरन्त ही छुटकारा (नजात) मिल जाती है और उसको जन्नत में मिलने वाला उसका महल और स्थान दिखा दिया जाता है । दूसरे यह कि क़ब्र

के दण्ड से उसको बचा दिया जाता है। तीसरे यह कि क़ियामत के दिन की घबराहट और बेचैनी से उसको बचा लिया जायगा। जिसमें वहाँ सब फंसे होंगे (उसको छोड़कर जिसको अल्लाह चाहे।) चौथे यह कि क़ियामत में उसके सिर पर आदर व सम्मान का एक ऐसा ताज रक्खा जायगा जिसमें का एक याक़ूत दुनिया और दुनिया की सारी दौलत से अच्छा होगा। पाँचवें यह कि जन्नत की हूरों यानी: बे बियाही सुन्दर जवान स्त्रियों में से ७२ के साथ उसका विवाह कर दिया जायगा। छठे यह कि उसके नातेदारों में से सत्तर के बारे में उसकी सिफ़ारिश स्वीकार की जायगी। (क़बूल की जायगी)।

एक हदीस में है।

शहीद होने वाले के सब पाप क्षमा कर दिये जाते हैं। अलबत्ता अगर किसी का कर्ज़ा उसके ऊपर होगा तो उसका बोझ लदा रहेगा। याद रक्खो कि सवाब और बड़ाई केवल उसी समय नहीं जब दीन की राह में आदमी जान से मार ही डाला जाय बल्कि दीन के कारण अगर किसी ईमान वाले को सताया गया, निरादर किया गया, मारा-पीटा गया या उसका धन लूटा गया या किसी और तरह का नुक़सान उसको पहुँचाया गया तो इस सबका भी अल्लाहतआला के वहाँ बहुत बड़ा सवाब मिलेगा और अल्लाह तआला ऐसे लोगों को ऐसे बड़े दर्जे देगा कि बड़े-बड़े इबादत और तपस्या करने वाले इनको लालच भरी आँखों से देखेंगे जिस तरह दुनिया के राज्य में उन सिपाहियों का बड़ा आदर होता है और उनको बड़े-बड़े पारितोषिक (इनआम) और पदवियाँ (ख़िताब) दिये जाते हैं जो अपने राज्यों की भक्ति

(वफ़ादारी) और सेवा में चोटें खाएँ, मारे पीटे जाँय, घायल हों और फिर भी राज्य भक्त रहें। इसी प्रकार अल्लाह के यहाँ भी उन बन्दों का विशेष सम्मान है जो अल्लाह के दीन पर चलने और दीन पर जमे रहने के अपराध में या दीन की उन्नति और हरियाली के लिए कोशिश करने के सम्बन्ध में मारे पीटे जाँय या अपमानित किये जायँ या दूसरी तरह के नुक़सान उठाएँ। क़ियामत के दिन जब ऐसे लोगों को विशेष पारितोषिक (इनआम) बटेंगे और अल्लाह तआला विशेष सवाब और आदर से उनका पद बढ़ाएँगे तो दूसरे लोग पछताएँगे कि क्या अच्छा हुआ होता कि दुनिया में हमारे साथ भी ऐसा ही किया गया होता, दीन के लिये हमारी मर्यादा भी मिटाई गई होती, हम मारे पीटे गये होते, हमारे शरीर को घायल किया गया होता ताकि इस समय हमको भी यही सवाब और पारितोषिक (इनआम) मिलते।

हे अल्लाह यदि हमारे लिये कभी ऐसी परीक्षाएँ (इमतिहान) होनहार हों तो हमको जमें हुए रखना और अपनी दया और सहायता से हमको अलग न रखना।

—:o:—

इसलाम का पन्द्रहवाँ पाठ ।

मरने के बाद ।

बरज़ख़, क़ियामत, आख़िरत ।

इतनी बात तो सब जानते और मानते हैं कि जो इस दुनिया में पैदा हुआ उसको किसी न किसी दिन अवश्य मरना है लेकिन अपने आप यह बात किसी को भी मालूम नहीं और न कोई इसको जान सकता है कि मरने के बाद क्या होता है और क्या होगा। यह बात केवल अल्लाह ही को मालूम है और उसके बतलाने से पैग़म्बरों को मालूम होती है और पैग़म्बरों के बतलाने से हम जैसे सभी आदमियों को मालूम हो जाती है। अल्लाह के हर पैग़म्बर ने अपने-अपने समय में अपनी जाति और अपनी उम्मत को अच्छी तरह बतलाया था कि मरने के बाद किन-किन मनज़िलों से तुमको गुज़रना होगा और दुनिया में किये हुए तुम्हारे कामों का बदला और दण्ड तुमको हर मनज़िल में किस तरह मिलेगा। अल्लाह के आख़िरी पैग़म्बर यानी हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चूँकि ख़ुदा के आख़िरी नबी और रसूल हैं और उनके बाद क़ियामत तक कोई पैग़म्बर अब आने वाला नहीं है इसलिये आपने मरने के बाद की सब मनज़िलों का बयान अच्छी तरह फैला कर किया है। अगर उस सबको इकट्ठा किया जाय तो एक बहुत बड़ी पुस्तक तय्यार

हो जाय। पवित्र क़ुर्आन में और हुज़ूर की हदीसों में जो कुछ इसके बारे में बयान किया गया है। उसका ख़ुलासा यह है कि:—

मरने के बाद तीन मनज़िलें आने वाली हैं। पहली मनज़िल मरने के समय से लेकर क़ियामत के आने तक की है। इसको **"आलमे बरज़ख"** यानी बीच का ज़माना कहते हैं। मरने के बाद आदमी का शरीर धरती में तोप दिया जाय चाहे नदी में बहा दिया जाय चाहे जला कर राख कर दिया जाय लेकिन उसकी आत्मा (रूह) किसी दशा में भी मरती नहीं, केवल इतना होता है कि वह हमारी इस दुनिया का स्थान छोड़ कर एक दूसरे संसार में चली जाती है। वहाँ अल्लाह के फ़रिश्ते दीन धर्म के बारे में उससे पूछ-ताछ करते हैं। अगर वह सच्चा ईमान वाला है तो ठीक जवाब देता है जिस पर फ़रिश्ते उसको शुभ समाचार सुना देते हैं कि तू क़ियामत तक चैन और सुख से रहे और अगर वह ईमान वाला नहीं होता बल्कि वह इसलाम का न मानने वाला यानी काफ़िर होता है या बाहर से मुसलमान लगने वाला और भीतर से काफिर होता है यानी मुनाफ़िक़ होता है तो उसी समय से बड़े दण्ड और दुख में डाल दिया जाता है जिसका सिलसिला क़ियामत तक लगा रहता है यही **"बरज़ख"** की मनज़िल है जिसकी मुद्दत मरने के समय से क़ियामत तक की है। इसके बाद दूसरी मनज़िल क़ियामत और हश्र की है।

क़ियामत का अर्थ यह है कि एक समय ऐसा आएगा कि अल्लाह की आज्ञा से यह सारी दुनिया बिलकुल मिटा दी

जायगी। जिस तरह किसी बड़े भूँचाल से ज़मीन का कोई भाग नष्ट हो जाता है इसी तरह उस समय सारी दुनिया उथल पुथल हो जायगी और सब चीज़ों पर एक बारगी मौत छा जायगी फिर एक लम्बा समय बीतने पर अल्लाह तआला जब चाहेंगे सबको फिर जीवित करेंगे। उस समय सारी दुनिया के अगले पिछले लोग सब ज़िन्दा हो जायँगे। और उनकी दुनिया की ज़िन्दगी का पूरा हिसाब होगा। इस जांच और हिसाब में अल्लाह के जो बन्दे मुक्ति (नजात) और जन्नत) के अधिकारी (हक़दार) निकलेंगे उनके लिये जन्नत की आज्ञा दे दी जायगी और जो अत्याचारी और पापी अल्लाह के दण्ड और नर्क के योग्य होंगे उनके लिये नर्क की आज्ञा सुना दी जायगी। यह मनज़िल मरने के बाद की दूसरी मनज़िल है जिस का नाम क़ियामत और हश्र है इसके बाद जन्नती सदा के लिये जन्नत में चले जायँगे जहाँ केवल सुख और चैन होगा और ऐसे मज़े और आराम होंगे जो इस दुनिया में किसी ने देखे सुने न होंगे और दोज़खी नर्क में डाल दिये जायँगे, जहाँ उनको बड़े-बड़े दण्ड दिये जायँगे और उनको बड़े दुख और कष्ट उठाने पड़ेंगे। अल्लाह तआला हम सबको उससे बचाएँ। यह जन्नत और दोज़ख ही मरने के बाद की तीसरी और आख़िरी मनज़िल है। फिर लोग हमेशा अपनी कमाई के अनुसार जन्नत या दोज़ख में रहेंगे। इस तीसरी और आख़िरी मनज़िल का नाम आख़िरत है।

मरने केबाद के बारे में अल्लाह के पैग़म्बरों ने और विशेष कर आख़िरी पैग़म्बर यानी हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो कुछ बतलाया है और पवित्र क़ुर्आन और हदीस में जो कुछ बतलाया गया है उसका ख़ुलासा

यही है जो ऊपर लिखा गया है अब कुछ आयतें और हदीसें भी सुन लीजिये।

कुल्लु + नफ़ + सिन + ज़ाइ + क़तुल + मौत + वइन्नमा + तुव- + फ़्फ़ौ + न + उजू + रकुम + यौमल + क़ियामह।

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۝

(सूरए आल इमरान रुकू १६)

(سورۂ آل عمران - ع - ۱۹)

अर्थ यह है:—हर जान रखने वाले को मौत का मज़ा चखना है और तुम्हारे कामों का बदला क़ियामत के दिन पूरा-पूरा दिया जायगा।

कुल्लु + नफ़सिन + ज़ाइ + क़तुल + मौति + सुम्म + इलैना + तुर + जऊन। (अंकबूत रुकू ६)

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝ - (عنکبوت - ع - ٦)

अर्थ यह है:—हर प्राणी (जानदार) को मौत का मज़ा अवश्य चखना है और फिर तुम सब हमारी ओर लौटोगे।

क़ियामत और उसके भयानक होने का बयान पवित्र कुर्आन में सैकड़ों स्थानों पर किया गया है। कुछ आयतें हम यहाँ भी लिखते हैं:—

या + एय्यु + हन्नासत्तक़ू + रब्बकुम + इन्न + ज़ल + ज़ + लतिस्सा + अति शैउन + अज़ीम। यौ + म + तरौ + नहा + तज़ + हलु कुल्लु + मुर + ज़िअ- तिन + अम्मा अर + ज़अत + व + त + ज़उ + कुल्लु ज़ाति + हम + लिन + हम + लहा + व +

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ۝ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ

तरन्ना + स + सुकारा + व माहुम बि सुकारा + वलाकिन्न अज़ा + बल्लाहि शदीद।	سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ۝
(अल हज्ज रुकू १)	(الحج-ع-١)

अर्थ यह है :—हे लोगो अपने रब (पालनहार) से डरो। क़ियामत का भूँचाल बड़ी भयानक चीज़ है जिस दिन तुम उसे देखोगे उस दिन हर दूध पिलाने वाली माँ अपने दूध पीते प्यारे बच्चे को भूल जायगी और जिनके पेट में बच्चे होंगे वह बच्चे गिर जायँगे। और तुम सब लोगों को नशे की सी दशा में देखोगे और सचमुच वह नशे में न होंगे बल्कि अल्लाह तआला का दण्ड बहुत कड़ा है। बस उसी के डर से लोग मूर्छित हो जायँगे। और सूरए मुज़्ज़म्मिल में क़ियामत ही के बारे में बतलाया गया है कि :—

यौ + म + तर + जुफ़ुल + अर + ज़ु वल + जिबालु + वका + नतिल जिबालु + कसीबम्महीला।	يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ۝

अर्थ यह है:—जब धरती और पहाड़ों पर कपकपाहट होगी और पहाड़ बहती हुई रेत के समान हो जायँगे।

और इसी सूरे में क़ियामत ही के बारे में कहा गया है :—

यौमँय्यंज + अलुल + विल + दा + न + शीबा।	يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا ۝

अर्थ यह है :—वह दिन बच्चों को बूढ़ा बना देगा।

और सूरए अबस में कहा गया है :—

फ़इज़ा जाअतिस्साख़्ख़ह ।
यौ+म+यफ़िरु॑ल+मउ॑+
मिन अख़ीह। व उम्मिही व अबीह।
वसाहि+ बतिही व + बनीह।
लिकुल्ल लिम+रिइस+मिन्हुम÷
यौ+मइज़िन शानुँ य्युग़नीह ।
वजूहुँ य्यौ + मइज़िम मुस+
फ़िरह। ज़ाहि+कतुम्मुस्तब शिरह।
व वुजूहुँ य्यौ+मइज़िन अलैहा+
ग़+ब+रह+तर+ हक़ुहा क़+
त+रह। (सूरए अबस)

فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ۝ يَوْمَ
يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ۝ وَاُمِّهٖ وَ
اَبِيْهِ ۝ وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ ۝ لِكُلِّ
امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ۝
وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۝ ضَاحِكَةٌ
مُّسْتَبْشِرَةٌ ۝ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا
غَبَرَةٌ ۝ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ (سورهٔ عبس)

अर्थ यह है :—जब आएगी कानों के परदे फाड़ने वाली वह आवाज़ यानी जिस समय क़ियामत का नरसिंघा फूँका जायगा उस दिन भागेगा आदमी अपने भाई से और अपनी माँ से और अपने बाप से और अपनी पत्नी और अपनी सन्तान से। उनमें से हर एक के लिये उस दिन ऐसी चिन्ता होगी जो उसको दूसरों से बे परवाह बना देगी यानी हर आदमी अपनी चिन्ता में ऐसा डूबा हुआ होगा कि माँ बाप पत्नी सन्तान और बहिन भाई की बिलकुल परवाह न करेगा बल्कि उनसे भागेगा। बहुत से चेहरे उस दिन चमकते होंगे, हँसते हुए, ख़ुशी से खिले हुए, और बहुत से मुख उस दिन धूल में अटे होंगे और उन पर सियाही छाई होगी।

क़ियामत के दिन ख़ुदा के सामने सब लोग जायँगे कोई भी कहीं छुप नहीं सकेगा।

सूरए "अलहाक़्क़ह" में कहा गया है:—

यौ + मइज़िन तू + रज़ू + न + ला + तख़ + फ़ा + मिन + कुम + ख़ाफ़ियह ।

(सूरतुलहाक़्क़ह)

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ (سورة الحاقہ)

अर्थ यह है :—जब तुम सब ख़ुदा के सामने लाए जाओगे, तुम में से कोई छुपने वाला छुप नहीं सकेगा ।

और सूरए कहफ़ में कहा गया है :—

वयौ + म + नुसय्यिरुल + जिबा + ल व + तरल + अर + ज़ + बारि + ज + तौं व + हशर + नाहुम + फ़लम नुग़ादिरमिन हुम + अ + ह + दा । व उरिज़ू + अला + रब्बि + क सफ़्फ़ा + लक़द + जोतु मूना + कमा + ख़ + लक़ना कुम औं + व + ल + मर्रतिन बल + ज़अमतुम लन + नज + अल्लकुम + मौइदा । ववुज़िअल किताबु + फ़ + तरल मुजरिमी + न + मुशफ़िक़ी + न + मिम्मा फ़ीहि + व + यक़ूलू + न या + वै + ल + त + ना + मा लिहा ज़ल + कि ताबि + ला यग़ादिरू सग़ी + रतौं + वला कबी + रतन + इल्ला अह + साहा व + जदू + मा अमिलू + हाज़िरा । वला + यज़ + लिमु + रब्बु + क + अ + ह + दा

(अलकहफ़ रुकू ६)

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۝ وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ۝ وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً إِلَّا أَحْصٰهَا وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ۝ (الكهف - ع - ٦)

अर्थ यह है :—उस दिन हम पहाड़ों को हटा देंगे यानी पहाड़ अपनी जगह जमे न रह सकेंगे बल्कि वह गिर जायँगे और चूर-चूर हो जायँगे और तुम पृथ्वी को खुली हुई देखोगे यानी न उस पर नगर बसे हुए रहेंगे न बस्तियाँ न फुलवाड़ियाँ बल्कि सारी भूमि एक खुला मैदान हो जायगी और फिर हम सब आदमियों को दोबारा ज़िन्दा करेंगें और उनमें से एक को भी न छोड़ेंगे और वह सब क़तारों में अपने रब (पालनहार) के सामने लाए जायँगे और उनसे कहा जायगा कि देखो तुम दोबारा ज़िन्दा होकर हमारे सामने आगए जैसा कि हमने पहली बार तुमको पैदा किया था लेकिन तुम यह समझ रहे थे कि हम तुम्हारे सामने कोई इस तरह का समय न लाएँगे और उनका "आमालनामा" यानी "कर्म पत्र" जिसमें उनके सब अच्छे बुरे काम लिखे होंगे, उनके सामने रख दिया जायगा और तुम पापियों को देखोगे कि अपने "आमालनामे" यानी "कर्म पत्र" से डरते हुए कहते होंगे कि "हाय हमारा बुरा भाग्य ! इस कर्म पत्र की दशा तो बड़े अचम्भे की चीज़ है न इसमें लिखे जाने से हमारा कोई छोटा काम छूट गया है और न कोई बड़ा काम। इसमें तो सब कुछ लिखा हुआ है।" जो कुछ उन्होंने दुनिया में किया था वह सब अपने कर्म पत्र में लिखा हुआ पाएँगे, और तुम्हारा पालनहार किसी पर अत्याचार नहीं करेगा।

क़ियामत में आदमी के हाथ पाँव और उसके सब अंग उसके कामों की गवाही देंगे।

सूरए **"यासीन"** में बताया गया है:—

अल + यौ + म + नख़ + तिमु + अला अफ़ + वाहिहिम + वतुकल्लि-मुना ऐदीहिम वतश + हदु + अर + जुलुहुम + बिमा कानू यक + सिबून
(यासीन रुकू ४)

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ (يٰسٓ ع-٤)

अर्थ यह है :—आजके दिन हम उनके मुँह पर मुहर लगा देंगें और उनके हाथ पाँव बोलेंगे और जो कुछ वह किया करते थे उसकी गवाही देंगे। सारांश (खुलासा) यह है कि क़ियामत में जो कुछ होगा पवित्र क़ुर्आन ने बहुत खोल-खोल कर उस सबको बयान किया है यानी पहले भूँचालों और धमाकों का होना। फिर सारी दुनिया का मिट जाना, यहाँ तक कि पहाड़ों का भी चूर-चूर हो जाना फिर सब आदमियों का ज़िन्दा किया जाना, फिर हिसाब के लिये **"हश्र"** के मैदान में इकट्ठा होना, और वहाँ हर एक के सामने उसके **"आमालनामे"** (कर्म पत्र) का आना और ख़ुद आदमी के अँगों का उसके ख़िलाफ़ गवाही देना फिर दण्ड या क्षमा का फ़ैसला होना और उसके बाद लोगों का जन्नत या दोज़ख़ में जाना—यह सब बातें पवित्र क़ुर्आन की कुछ सूरतों में तो इतने फैलाव से बयान की गई हैं कि उनके पढ़ने से क़ियामत का नक़्शा आँखों के सामने फिर जाता है।

जैसा एक हदीस में भी आया है कि :—

जो आदमी चाहे कि क़ियामत का नक़्शा इस तरह देखे

कि जैसे वह उसकी आँखों के सामने है तो वह पवित्र कुर्आन की सूरतें ।

"इज़श्शम्सु कूविरत إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ

इज़स्समाउन्फ + तरत । إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ

और इज़स्समाउन्शक़्क़त पढ़े । إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ

अब हम बर्ज़ख़ और क़ियामत के बारे में कुछ हदीसें भी लिखते हैं :—

हज़रत अब्दुल्लाह सुपुत्र उमर (अल्लाह दोनों से राज़ी हो) का बयान है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :—

तुम में से कोई जब मर जाता है तो उसको जो स्थान क़ियामत के बाद जन्नत या दोज़ख उसके कामों के अनुसार मिलने वाला होता है वह हर दिन सवेरे और शाम को उसके सामने लाया जाता है और उससे कहा जाता है कि यह है तेरा ठिकाना जहाँ तुझे पहुँचना है । एक और हदीस में है कि :

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार वाज़ बयान करते हुए क़ब्र की जाँच और वहाँ का समाचार सुनाया तो सब मुसलमान जो मौजूद थे चीख़ उठे ।

'बहुत सी हदीसों में क़ब्र का बयान' क़ब्र का सवाल जवाब और फिर वहाँ के दण्ड का खोल कर बयान किया गया है । यहाँ हम केवल यही दो हदीसें लिखते

है। अब कुछ हदीसें क़ियामत के बारे में और सुन लीजिये। एक हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ियामत का बयान करते हुए फ़रमाया :—

जब अल्लाह की आज्ञा से क़ियामत का पहला सूर फूँका जायगा तो सब जानदार बेहोश और बेजान होकर गिर जायँगे। फिर जब दूसरी बार सूर फूँका जायगा तो सब ज़िन्दा होकर खड़े हो जायँगे फिर आज्ञा दी जायगी कि तुम सब अपने रब (पालनहार) के सामने खड़े होने के लिये चलो और फिर फ़रिश्तों को आज्ञा होगी कि इनको खड़ा करो यहाँ उनसे उनकी ज़िन्दगी के बारे में पूछ होगी।

एक और हदीस में है कि :=

एक सहाबी (सतसंगी) ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलहि व सल्लम से पूछा कि :—

हे अल्लाह के रसूल! अल्लाह तआला अपनी पैदा की हुई चीज़ों को कैसे ज़िन्दा करेगा। और क्या इस दुनिया में इसकी कोई मिसाल और इसका कोई नमूना है ?

आपने फ़रमाया कि क्या कभी ऐसा नहीं हुआ कि तुम अपने देश की किसी ऐसी भूमि पर ऐसी दशा में गुज़रे हो कि वह सूखी हो और हरियाली से ख़ाली हो और फिर दोबारा ऐसी दशा में तुम्हारा गुज़र हुआ हो कि वह हरी भरी हो और लह-लहा रही हो वह सहाबी (सतसंगी) कहते हैं कि मैंने निवेदन किया (अर्ज़ किया) कि हाँ ऐसा हुआ है। आपने फ़रमाया कि बस

दोबारा पैदा करने का यह नमूना और यह उसकी मिसाल है। ऐसे ही अल्लाह तआला मरे हुवों को दोबारा ज़िन्दा करेगा।

एक और हदीस में है कि.—

रसूलुल्लाहि सल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सूरए ज़िलज़ाल की यह आयत पढ़ी:—

यौ + मइज़िन तुहद्दिसु अख़बा + रहा। يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا۔

जिसका अथ यह है कि क़ियामत के दिन पृथ्वी अपने सब समाचार बयान करेगी। फिर आप ने फ़रमाया कि तुम समझे कि इसका क्या अर्थ है? सहाबा ने निवेदन किया कि अल्लाह और उसके रसूल ही अधिक जानने वाले हैं। आपने फ़रमाया कि इसका अर्थ यह है कि क़ियामत के दिन पृथ्वी अल्लाह के हर बन्दे और बन्दी के बारे में उन कामों की गवाही देगी जो उन्होंने पृथ्वी पर किये हैं। यानी अल्लाह की आज्ञा से पृथ्वी उस दिन बोलेगी और बतलाएगी कि किस बन्दे और किस बन्दी ने किस दिन कौन सा काम मेरे ऊपर किया था।

एक और हदीस में है कि:—

आप ने क़ियामत का बयान करते हुए फ़रमाया कि अल्लाह तआला बन्दे से क़ियामत के दिन फ़रमाएँगे कि आज तू ख़ुद ही अपने ऊपर गवाह है और मेरे लिखने वाले फ़रिश्ते भी मौजूद हैं और बस यही गवाहियां काफ़ी हैं फिर ऐसा होगा कि अल्लाह तआला की आज्ञा

से बन्दे के मुँह पर मुहर लगा दी जायगी। वह ज़बान से कुछ न बोल सकेगा और उसके दूसरे अंगों हाथ पांव आदि को आज्ञा होगी कि तुम बोलो फिर वह उसके कामों का सारा समाचार सुनाएगें

एक और हदीस का खुलासा यह है कि:—

एक आदमी रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में आया और उसने निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! मेरे पास कुछ दास (ग़ुलाम) हैं जो कभी-कभी कमीनापन और शरारत करते हैं। कभी मुझसे झूठ बोलते हैं, कभी धन मार लेते हैं और मैं इन अपराधों पर कभी उन पर नाख़ुश होता हूँ कभी उनको बुरा भला कहता हूँ और कभी मार भी देता हूँ तो क़ियामत में इसका क्या नतीजा होगा? आप ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला क़ियामत में ठीक-ठीक इन्साफ़ करेगा। अगर तुम्हारा दण्ड उनके अपराधों को देखते हुए ठीक होगा तो तुम्हें न कुछ मिलेगा और न कुछ देना पड़ेगा और अगर तुम्हारे दण्ड उनके अपराधों से कम होंगे तो तुम्हारा बाक़ी हक़ दिलाया जायगा और अगर तुम्हारा दण्ड उनके अपराध से अधिक होगा तो तुम से उसका बदला तुम्हारे दासों को दिलाया जायगा। हदीस में है कि यह सुनकर वह पूछने वाला आदमी रोने और चिल्लाने लगा और उसने निवेदन किया है, हे अल्लाह के रसूल फिर तो मेरे लिये यही अच्छा है कि मैं उनको अलग कर दूँ। मैं आप को गवाह करता हूँ कि मैंने उन सबको स्वतंत्र (आज़ाद) कर दिया।

इसी हदीस में यह भी है किः—

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस आदमी को पवित्रक़ुर्आन की यह आयत भी सुनाईः—

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ

فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَّاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ

خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا وَكَفٰى بِنَا حَاسِبِيْنَ ۝

व + न + ज़उल + मवाज़ीनल + क़िस + त + लियौमिल क़िया + मात + फ़ला + तुज़ + लमु + नफ़ + सुन + शौऔं वइन + का + न + मिस्क़ा + ल + हब्बतिम + मिन + ख़र + दलिन + अतैना + बिहाव + + कफ़ा + बिना + हासिबीन ।

अर्थ यह हैः—हम क़ियामत के दिन न्याय (इन्साफ़) की तराज़ू लटकाएँगे और किसी के साथ वहाँ कोई अन्याय (बेइन्साफ़ी) न होगी और अगर किसी का कोई काम या हक़ राई के दाने के बराबर होगा तो हम उसको लाकर मौजूद करेंगे और हम हिसाब लेनेवाले काफ़ी हैं।

अल्लाह तआला हम को तौफ़ीक़ दें (हमारी सहायता करें) कि मरने के बाद और क़ियामत के बारे में पवित्र क़ुर्आन और हदीस ने जो बातें हमको बताई हैं हम उनको ध्यान में रक्खें और अपने व्यवहारों को ठीक रक्खें।

—:o:—

इस्लाम का सोलहवाँ पाठ

जन्नत और दोज़ख़

पिछले पाठ में वतलाया जा चुका है कि क़ियामत का दिन फ़ैसले का दिन होगा । फिर जो मोमिन होंगे और दुनिया में जिनके काम भी बहुत अच्छे रहे होंगे और किसी सज़ा के हक़दार न होंगे वह तो क़ियामत के समय में भी अल्लाह के अर्श के साए में और बड़े आराम से रहेंगे और बहुत जल्दी ही जन्नत में भेज दिये जायँगे और जो ऐसे होंगे कि कुछ दण्ड पाकर क्षमा किये जायँ वह क़ियामत और हश्र के दिनके कुछ कष्ट उठा कर या अधिक से अधिक कुछ समय तक दोज़ख़ में अपने पापों का दण्ड भोग कर क्षमा कर दिये जायँगे। जिनमें कण (ज़र्रह) भर भी ईमान होगा वह कभी न कभी जन्नत में पहुँच ही जायँगे और दोज़ख़ में सदा के लिये केवल वही रह जायँगे जो दुनिया से कुफ़्र और शिर्क का पाप लाद कर ले गये होंगे। खुलासा यह कि जन्नत ईमान और इबादत का प्रतिफल (बदला) है और दोज़ख़ कुफ़्, शिर्क, अच्छे कर्म (काम) न करने और आज्ञा न मानने का दण्ड है। जन्नत की नेमतों और सुखों और दोज़ख़ के दुखों और कष्टों का बयान पवित्र क़ुर्आन और हदीसों में खोल-खोल कर किया गया है।

कुछ आयतें और हदीस हम यहां भी लिखते हैं।

लिल्लज़ी + नन्तक़ौ + इन + द + रब्बिहिम जन्नातुन + तजरी + मिन + तह + तिहल + अनहारु खालिदी + न + फ़ीहा + व अज़वा-जुम + मुतह + ह + रतूँ + वरिज़्-वानुम + मिनल्लाह वल्लाहु + बसीरुम + बिल + इबाद।

(सूरए—आले इम्रान रुकू २०)

لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝

(سورۂ آل عمران ع-۲)

अर्थ यह है :—परहेज़गारों के लिये उनके रब के पास ऐसी जन्नत हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं। वह उन हो में रहेंगे और साफ़ सुथरी स्त्रियाँ हैं और अल्लाह की रज़ामन्दी है और अल्लाह अपने सब बन्दों को भली भांति देखता है।

प वत्र कुर्आन में ह —

इन्न + अस्सहाबल + जन्नतिल यौ + म + फ़ी + शग़ुलिन + फ़ाकि-हून। हुम + वअज़ + वाजुहुम + फ़ी + ज़िलालिन + अलल + अराइकि + मुत्तकिऊन। लहुम + फ़ीहा + फ़ाक़ि + हतूँ + वलहुम्मा + यद्दऊन सलामुन + क़ौलम्मिर्र-ब्बिर्रहीम।

(सूरए यासीन रुकू ४)

اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ۝ هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ۝ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ۝ سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ۝

(سورۂ یٰس ع ۴۰)

अर्थ यह है :—जन्नत वाले उस दिन अपनी चहल पहल वाले मन बहलाव में ख़ुश होंगे। वह और उनकी स्त्रियाँ साए में मसहरियों पर तकिया लगाए आराम कर रही होंगी। उनके लिये वहाँ तरह-तरह के मेवे होंगे। और वह जो कुछ माँगेंगे उनको मिलेगा। दया वाले रब कीं ओर से उनको सलाम पहुँचाया जायगा। और यह भी पवित्र क़ुर्आन में है:—

वफ़ीहा मा तश+तहीहिल+ अन्फ़ुसु + व + त+लज्जुल+ आयुनु वअन्तुम+फ़ीहा ख़ालिदून।

(सूरए ज़ुख़रुफ़ रुकू ७)

وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ
وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ وَأَنْتُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ

(سورۂ زخرف)

अर्थ यह है:—और जन्नत में वह सब कुछ है जिसको लोगों के जी चाहते हैं और आखें जिससे स्वाद लेती हैं और हे मेरे अच्छे बन्दो तुम हमेशा इसी जन्नत में रहोगे।

और सूरए मुहम्मद में जन्नत का समाचार इस तरह बयान किया गया है।

म+सलुल + जन्नतिल्लती +वुइ +दल्मुत्तक़ून। फ़ीहा + अन्हारुम्मिम्माइन ग़रि+आसिन +वअन्हारुम्मिल्ल + बनिल लम +य + तग़य्यर + तामुहू + व अन्हारुम्मिन ख़+मुरिल्लज़्ज़ति

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ
فِيهَا أَنْهَارٌ مِّن مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ
وَأَنْهَارٌ مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ
طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ

ल्लिश्शारिबीन व अन्हारुम्मिन + अ + सलिम्मुसफ़्फ़ा । व + लहुम्मिन + कुल्लिस्स + मराति + व + मग़ + फ़ि + रतुम्मिर्रब्बिहिम ।

لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۚ وَلَهُمْ مِّنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ (سورۂ محمد ع ٢)

(सूरए मुहम्मद रुकू २)

अर्थ यह है :—वह जन्नत जिस का परहेज़गारों से वादा किया गया है उसका समाचार यह है कि उसमें बहुत सी नहरें हैं पानी की जो ज़रा भी नहीं बदलेगा और बहुत सी नहरें हैं दूध की जिसका स्वाद तनिक भी बदला हुआ न होगा और बहुत सी नहरें हैं पवित्र और हलाल शराब की जो बड़ी मज़ेदार हैं पीने वालों के लिये और बहुत सी नहरें हैं साफ़ किये हुए शहद की और उनके वास्ते उस जन्नत में सब तरह के फल हैं और क्षमा है उनके रब की ।

और सूरए हिज्र में जन्नत का एक गुण यह बयान किया गया है:—

ला + यमस्सुहुम फीहा + न + सबुन ।

لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ —

(सूरए हिज्र) (سورۂ حجر)

अर्थ यह है :—जन्नत वालों को वहाँ किसी तरह का कोई दुख न छू सकेगा । यानी जन्नत में केवल आराम ही आराम और चैन ही चैन होगा । किसी तरह का कोई दुख और शोक (रंज) की कोई बात न होगी ।

यह तो जन्नत का और जन्नतियों का थोड़ा सा बयान हुआ अब दोज़ख का और दोज़ख़ियों का कुछ समाचार पवित्र कुर्आन ही से सुन लीजिये।

सूरए मूमिनून में कहा गया है :—

वमन + ख़फ्फ़त + मवाज़ीनुहू + फ़उलाइकल्लज़ी न + ख़सिरू + अनफ़ + सहुम + फ़ी + जहन्न + म + ख़ालिदून। तल + फ़हु + वुजू + ह + हुमुन्नारु वहुम फ़ीहा कालिहून।

(सूरतुल मूमिनून। रुकू ६)

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ۚ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ۚ

(سورۃ المومنون ۔ ع ۔ ۶)

अर्थ यह है :—और जिसका पल्ला हलका होगा सो यह वह लोग होंगे जिन्होंने ख़ुद अपना घाटा किया तो यह नर्क में रहेंगे उनके चेहरों को आग झुलसाती होगी और उनके मुँह उससे बिगड़े हुए होंगे।

और सूरए कहफ़ में फ़रमाया गया है :—

इन्ना + आतद + ना लिज़्ज़ालिमी + न + नारन + अहा + त + बिहिम + सुरादिक़ुहा वइं + यस्तग़ीस् + युग़ासू + बिमाइन + कल + मुह + लि + यश + विल वुजूह।

(सूरए कहफ़ रुकू ४)

اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۭ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَاۗءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ ۭ

(سورۃ کہف ۔ ع ۔ ۴)

अर्थ यह है :—हमने अत्याचारियों के लिये नर्क तय्यार को है उसकी टट्टियाँ (आग की) उन्हें घेरे हुए हैं और जब वह प्यास से चिल्लाएँगे तो उसके उत्तर में उनको पानी दिया जायगा तेलकी गाद जैसा और इतना जलता और खौलता हुआ कि भून डाले मुँह को।

और सूरए हज में कहा गया है :—

फ़ल्लज़ी + न + क + फ़रू + क़ुत्तिअत + लहुम सियाबुम्मि-न्नारीं + युसब्बु + मिन + फ़ौक़ि + रूऊसिहिमुल + हमीम। युस्हरु + बिही + मा + फ़ी + बुतूनिहिम + वल + जुलूद। व + लहुम + मक़ा + मिउ + मिन + हदीद। कुल्लमा + अरादू + ऐं यख़ + रुजू + मिन + हामिन + ग़म्मिन + उईदू + फ़ीहा + वज़ूक़ू + अज़ाबल + हरीक़।

(सूरतुल हज। रुकू २)

فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ
ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ يُّصَبُّ مِنْ فَوْقِ
رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ۚ يُصْهَرُ بِهٖ
مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ۚ وَلَهُمْ
مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ۚ كُلَّمَا اَرَادُوْا
اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا
فِيْهَا وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۚ

(سورۃ الحج - ع - ٢)

अर्थ यह है :—जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके लिये आग के कपड़े बेउँते जायँगे और उनके सर के ऊपर बहुत गर्म पानी डाला जायगा उससे उनकी खालें और पेट के अन्दर की भी सब चीज़ें गल जायँगी और उनके लिये लोहे की गदाएँ (गुर्ज़) होंगी।

वहाँ के कष्ट और दुख के कारण वह; जब ;उससे निकलने की इच्छा करेंगे तो फिर उसी में धकेल दिये जायँगे। उनसे कहा जायगा कि यही जलने का दण्ड चखते रहो ।

और सूरए दुख़ान में है :—

इन्न + श + ज + र तज्ज़क्क़ूम । तआमुल असीम । कल्मुह + लिय-ग़ली + फ़िल्बुतून । क + ग़लयिल + हमीम + ख़ुज़ूहु फ़ातिलूहु इला + सवाइल + जहीम । सुम्म + सुब्बू + फ़ौ + क़ + रासिही + मिन + अज़ा-बिल + हमीह ।

(अद्‌दुख़ान । रुकू । "३")

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ۝ طَعَامُ الْأَثِيمِ ۝ كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ۝ كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ۝ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ۝ - (الدخان - ع - ٣)

अर्थ यह है :—बेशक थूहड़ का पेड़ बड़े पापियों का भोजन होगा । जो घिनौनेपन में तेल की तलछट की तरह होगा और वह पेटों में ऐसा खौलेगा जैसे तेज़ गर्म पानी खौलता है और फ़रिश्तों को आज्ञा दी जायगी कि इसको पकड़ो फिर घसीटते हुए नर्क के बीचो-बीच तक ले जाओ फिर उसके सर पर बहुत कष्ट देने वाला जलता हुआ पानी डालो । और सूरए इबराहीम में दोज़ख़ी आदमी के बारे में कहा गया है :—

वयुस्क़ा + मिम्माइन + सदीद। य + त + जर्र उहू + वला + यकादु + युसीग़ुहू + व + यातीहिल + मौतु + मिन + कुल्लि मकानिंव बमा हुव बिमय्यित + वमिवँ + वराइही अज़ाबुन ग़लीज़।

وَيُسْقٰى مِنْ مَّاءٍ صَدِيْدٍ ۙ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۗ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ

(सरए इबराहीम। रुकू ३)

(سورۂ ابراہیم ع -۳)

अर्थ यह है :—और इसको ऐसा पानी पीने को दिया जायगा जो कि पीप और लहू होगा जिसको वह घूँट घूँट करके पियेगा और वह उसको गले से न उतार सकेगा और हर ओर से उस पर मौत की पहुँच होगी और वह मरेगा भी नहीं और उसको कड़े दण्ड का सामना होगा।

और सरए निसाअ में है :—

इन्नल्लज़ी + न + क + फ़रू + बिआयातिना + सौ + फ़ + नुस्ली हिम + नारा। कुल्लमा + नज़िजत + जुलूदहुम + बद्दलनाहुम जुलूदन + ग़ै + रहा + लिय + ज़ूक़ुल + अज़ाबा +

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ۭ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُھُمْ بَدَّلْنٰھُمْ جُلُوْدًا غَيْرَھَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ۔

(सूरए निसाअ)

(سورۂ نساء)

अर्थ यह है :—जो हमारी आयतों के साथ कुफ्र करते हैं और हमारी आज्ञाएँ नहीं मानते हम उनको बेशक दोज़ख़ की आग में डालेंगे जब उनकी खालें जल भुन जायँगी और पक जायँगी तो हम उनकी जगह और खालें बदल देंगे ताकि वह दण्ड का स्वाद पूरी तरह चक्खें।

पवित्र क़ुर्आन की सैकड़ों आयतों में दोज़ख़ के दुख देने वाले दण्ड का इससे कहीं अधिक बयान किया गया है। यहां हम ऊपर दी हुई थोड़ी सी आयतों पर समाप्त (ख़त्म) करते हैं।

अब जन्नत और दोज़ख़ के बारे में कुछ हदीसें भी सुन लीजिये।

एक हदीस में आया है कि :—

हुज़ूर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि :—

> मैंने अपने अच्छे बन्दों के लिये जन्नत में वह चीज़ें तय्यार की हैं जिनको न किसी आँख ने देखा है न किसी कान ने सुना है और न किसी मनुष्य के दिल में उनका विचार ही पैदा हुआ है।
>
> बेशक जन्नतियों को जो शुद्ध और स्वाद वाला भोजन मिलेगा, जो फल और मेवे दिये जायँगे, पहेनने के लिये जो ऊंचे दर्जे के सुन्दर कपड़े दिये जायँगे, जो बड़े-बड़े और सुन्दर महल और सुन्दर फुलवाड़ियां दी जायँगी, जन्नत की सुन्दर हूरें दी जायँगी और इन सबके अलावा भी आराम, चैन और ख़ुशी के जो सामान

दिये जायंगे जैसाकि इस हदीस में बयान किया गया है, सच यह है कि उनको केवल अल्लाह ही जानता है अल-बत्ता हम इन सब पर यक़ीन रखते हैं।

एक हदीस में है कि :—

जब जन्नती जन्नत में पहुँच जायँगे तो अल्लाह की ओर से एक पुकारने वाला पुकारेगा कि अब तुम हमेशा भले चँगे रहो कोई रोग तुम्हारे पास न आएगा अब तुम हमेशा ज़िन्दा रहो। अब तुम्हें मौत न आएगी। अब तुम हमेशा जवान रहो अब तुम कभी बूढ़े न होगे। अब तुम हमेशा आराम, चैन और सुख में रहो। कोई रँज, दुख और कष्ट तुम्हारे पास कभी न आएगा। जन्नत में पहुँच जाने के बाद जो सबसे बड़ी नेमत जन्नतियों को मिलेगी वह अल्लाह तआला को देखने की नेमत होगी।

हदीस शरीफ़ में है कि :—

जब जन्नती लोग जन्नत में पहुँच जायँगे तो अल्लाह तआला उनसे फ़रमाएंगे क्या तुम्हारी इच्छा है कि जो नेमतें तुमको दी गई हैं उनसे भी बड़ी कोई नेमत मैं तुमको दूं ? वह कहेंगे कि हे मालिक ! आपने हमारे चेहरे रौशन किये। हमको नर्क से बचाया और हमको जन्नत दी जिसमें सब कुछ है। अब हम और क्या मांगे। हुज़ूर फ़रमाते हैं कि फिर परदा उठा दिया जायगा और उस समय जन्नती लोग अल्लाह को बेपरदा देखेंगे। और फिर जन्नत और उसकी सब नेमतें जो

अब तक उनको मिल चुकी थीं उन सबसे अधिक नेमत यह अल्लाह के दर्शन की नेमत होगी।

अल्लाह तआला हमको भी यह नेमतें अपनी दया से प्रदान करे (दें)। आमीन!

एक हदीस में है कि :—

हुज़ूर ने जन्नत के सुखों और दोज़ख़ के दुखों का बयान करते हुए फ़रमाया :—

क़ियामत के दिन एक ऐसे आदमी को लाया जायगा जो दुनिया में सबसे अधिक सुख आनन्द और ठाठ बाठ से रहा होगा लेकिन अभाग्यवश (बदक़िस्मती से) वह दोज़ख़ के काबिल निकलेगा तो उसको दोज़ख़ की आग में एक डोब देकर तुरन्त निकाल लिया जायगा फिर उससे पूछा जायगा कि कभी तू सुख और आनन्द में भी रहा था? तो वह कहेगा कि हे पालनहार! तेरी क़सम खाता हूँ कि मैंने कभी कोई आराम नहीं देखा। और एक दूसरे आदमी को लाया जायगा जो दुनिया में सबसे अधिक दुखों और कष्टों में रहा होगा लेकिन वह भाग्यवान बैकुण्ठ का अधिकारी निकलेगा। फिर उसको भी उसी तरह जन्नत की हवा एक क्षण भर खिला कर तुरन्त बैकुण्ठ से निकाल लिया जायगा, और पूछा जायगा कि तू कभी किसी दुःख और कष्ट में भी रहा था? वह निवेदन करेगा कि नहीं मेरे पालनहार! तेरी क़सम मुझे कभी कोई दुख नहीं पहुँचा और मैंने कभी कोई कष्ट नहीं झेला।

सच यह है कि जन्नत में ख़ुदा ने ऐसे ही आराम और चैन का प्रबन्ध किया है कि दुनिया में पूरी उम्र दुखों और कष्टों में रहने वाला भी एक क्षण के लिये जन्नत में पहुँचने के बाद अपने जीवन भर की कठिनाइयों को भूल जायगा और नर्क ऐसे ही दण्डों और कष्टों का ठिकाना है कि दुनिया में सारी उम्र सुख और आनन्द से रहने वाला मनुष्य भी एक क्षण के लिये नर्क में रह कर बल्कि केवल उसकी गर्म व दुर्गन्ध लपट पाकर यही कहेगा कि मैंने कभी सुख और आनन्द का मुँह नहीं देखा। दोज़ख के दण्ड की कठिनाइयों का अन्दाज़ा केवल इस एक हदीस से किया जा सकता है।

नर्क में सबसे कम दण्ड जिस मनुष्य को होगा वह यह होगा कि उसके पाँव की जूतियाँ आग की होंगी जिसके कारण उसका भेजा इस तरह खौलेगा जिस तरह चूल्हे के ऊपर रक्खी हुई हाँडी खौला करती है।

दोज़ख़ियों को खाने पीने के लिये जो कुछ दिया जायगा उसका थोड़ा सा बयान अभी-अभी ऊपर कुर्आन की आयतों में किया जा चुका है। इसके बारे में दो हदीसें भी सुन लीजिये।

> नर्कवालों को जो "ग़स्साक़" दुर्गन्ध यानी बदबू वाला पीप पीनी पड़ेगी, अगर उसका एक डोल भर कर दुनिया मे बहा दिया
>
> जाय तो सारी दुनिया उसकी बदबू सड़ाहन्ध से भर जायगी।

एक और हदीस में है कि :—

उस ज़क्कूम (थूहड़) का वर्णन करते हुए जो दोज़ख़ियों का भोजन होगा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:—

"अगर ज़क्कूम" की एक बूँद दुनिया में टपक जाय तो सारी दुनिया में जो खाने पीने की वस्तुएँ हैं सब नष्ट (बरबाद) हो जायँ फिर सोचो कि उस पर क्या गुज़रेगी जिसको कि यही "ज़क्कूम" खाना पड़ेगा।

हे अल्लाह तआला आप हमको और समस्त ईमानवालों को नर्क के हर छोटे बड़े दंड से अपनी शरण (पनाह) में रखियेगा।

भाइयो "बर्ज़ख़" "क़ियामत" और "आख़िरत" यानी 'जन्नत' और "दोज़ख़" के बारे में अल्लाह तआला के पवित्र क़ुर्आन ने और उसके रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल़ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो कुछ हमको बतलाया है उसमें ज़र्रा बराबर भी शक नहीं है। शपथ (क़सम खाता हूँ अल्लाह तआला के पवित्र नाम की कि सब बातें बिलकुल सच्ची हैं और मरने के बाद जो कोई जिस चीज़ का अधिकारी होगा वह उसको इसी तरह देख लेगा जिस तरह अल्लाह और उसके रसूल ने बतलाया है।

पवित्र क़ुर्आन और हदीसों में क़ियामत और जन्नत और दोज़ख़ का बयान जो इस तरह खोल-खोल कर सैकड़ों बार किया गया है वह इसलिये कि हम जन्नत को प्राप्त करने को और दोज़ख़ के दुखों और कष्टों से बचने की कोशिश करें।

भाइयों यह दुनिया केवल कुछ ही दिनों की है। एक न एक दिन बेशक हम सबको मरना है और क़ियामत बेशक आने वाली है और हम सबको अपने-अपने कामों का हिसाब देने के लिये अल्लाह तआला के सामने बेशक खड़ा होना है और फिर इसके बाद हमेशा के लिये किसी का ठिकाना जन्नत और किसी का दोज़ख़ होगा।

अभी समय है कि पिछले पापों से "तौबह" करके और आगे के लिये अपने जीवन को सुधार कर नर्क से बचने और जन्नत प्राप्त करने की कोशिश कर लें। खुदा न करे अगर जीवन यों ही ग़फ़लत में बीत गया तो मरने के बाद पछतावे और दण्ड के सिवा कुछ न प्राप्त कर सकेंगे।

आओ हम सब मिल कर सच्चे दिल से यह दुआ करें और हमेशा बार-बार यह दुआ करते रहा करें :—

اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَمَا قَرَّبَ إِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ وَعَمَلٍ

وَنَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ وَمَا قَرَّبَ إِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ وَعَمَلٍ

अल्लाहुम्म + इन्ना + नस्अलुकल जन्न + त + वमा + क़र्र + ब + इलैहा + मिन क़ौलिवँ व अ + मलिन + व + नऊज़ुबि + क मिन्नारि वमा क़र्र + ब इलैहा मिन क़ौलिवँ व अ + म + लिन।

हे अल्लाह हम आप से माँगते हैं जन्नत और ऐसी ज़बान और ऐसे काम जो उससे नज़दीक करदें और हम तेरी पनाह चाहते हैं दोज़ख़ से और ऐसी ज़बान और ऐसे कामों से जो उससे क़रीब करदें।

—:o:—

इस्लाम का सत्तरहवाँ पाठ

अल्लाह की याद, उसका भजन, और उसके नाम का जाप ।

चूँकि इस्लाम की शिक्षा और उसकी माँग यह है बल्कि कहना चाहिये कि इस्लाम सचमुच नाम ही इसका है कि अल्लाह के बन्दे अपना पूरा जीवन अल्लाह की आज्ञाओं के अनुसार बिताएँ हर दशा और हर व्यवहार में वह अल्लाह की आज्ञाओं पर चलें और चूँकि यह बात पूरी तरह जभी प्राप्त हो सकती है जब कि बन्दे को हर समय अल्लाह का ध्यान रहे और उसके दिल में अल्लाह की बड़ाई और उसका प्रेम पूरी तरह बैठ जाय इसलिये इस्लाम की एक विशेष शिक्षा यह है कि बन्दे अल्लाह की याद बहुत रक्खे और उसके नाम का जाप करते रहें और उसकी **"तस्बीह"** व **"तकदीस"** और **"हम्द"** **"सना"** से अपनी ज़बानें तर रक्खें। दिल में अल्लाह की मुहब्बत पैदा करने और उसकी बड़ाई का ध्यान जमाने का

तस्बीह व तकदीस—पवित्रता का बयान करना यानी "सुबहान-ल्लाह" पढ़ना। हम्द=शुक्र अदा करना और प्रशंसा करना यानी "अल्हम्दू लिल्लाह" पढ़ना।

सना=गुण बयान करना यानी "सुबहा + न + कल्लाहुम्द वबिहम्दि + क + व + तबा + र + कस्मु + क + व + तआला + जद्द + क + वला + इला + ह + ग़ैरुक पढ़ना।

एक विशेष तरीक़ा है और परखा परखाया हुआ गुर है। यह एक प्राकृतिक (क़ुदरती) बात है कि आदमी जिस किसी की बड़ाई के ध्यान में हर समय डूबा रहेगा और जिसकी पवित्रता और प्रशंसा के गीत दिन रात गाता रहेगा उसके दिल में उसकी बड़ाई और उसकी मुहब्बत अवश्य पैदा हो जायगी और इस राह में लगातार आगे बढ़ता रहेगा।

यह एक सच्ची बात है कि याद की अधिकता (ज़ियादता) प्रेम दीप को जलाती भी है और उसकी लौ को भड़काती भी है और यह भी एक मानी हुई बात है कि पूरी तरह से आज्ञाओं पर चलने का रास्ता जिसका नाम इस्लाम है वह केवल प्रेम ही से पैदा हो सकता है। केवल मुहब्बत ही वह चीज़ है जो सच्चे प्रेमी को अपने "**प्यारे**" का पूरी तरह आज्ञा मानने वाला बना देती है।

आशिक़ी चीस्त बुगो बन्दए जाना बूँदन।

यानी "**प्रेम क्या है दास्ता है प्रिय की।**"

इस लिये पवित्र कुर्आन में अल्लाह के भजन, याद और जप की अधिकता की आज्ञा बड़े बल के साथ दी गई है और रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम ने भी इसकी बड़ी प्रशंसा की है। सूरए "अहज़ाब में फ़रमाया गया है :—

या + ऐय्युहल्लज़ी + न + आ + मनुज़ + कुरुल्ला + ह ज़िक्रन + कसी + रौं + व + सब्बिहूह + बुक्रतौं + व + असीला। (अह + ज़ाब + रुकू ६)	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝ (احزاب ع ٦)

अर्थ यह है :—हे ईमान वालो अल्लाह की याद करो। बहुत और उसकी पाकी बयान करो सवेरे और शाम को। और सूरए जमुअह में है :—

वज़ + कुरुल्ला + ह + कसी + रल्लअल्लकुम तुफ़ + लिहून।
(जुमुअह, रुकू : २)

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ۝ (جمعہ ع-٢)

अर्थ यह है:—और याद करो अल्लाह को अधिक ताकि तुम सफल हो जाओ।

विशेषकर दो चीजें ऐसी हैं जिनके नशे में मस्त होकर आदमी अल्लाह को भूल जाता है : एक धन दौलत दूसरे बीबी बच्चे। इस लिये इन दोनों चीज़ों का नाम लेकर मुसलमानों को चौंकाया गया है।

सूरए मुनाफ़िक़ून में है :—

या + ऐय्युहल्लज़ी + न + आ + मनू + ला + तुल + हिकुम + अम्वालुकुम + वला + औलादु-कुम + अन ज़िक + रिल्लाहि + वमँ + यफ़अल + ज़ालि + क + फ़उलाइ + क + हुमुल + ख़ासि रून।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ
اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ
ذِكْرِ اللّٰهِ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

अर्थ यह है :—हे ईमान वालो तुम को तुम्हारा धन और

तुम्हारी सन्तान अल्लाह की याद से असावधान (ग़ाफ़िल) न कर दे और जो ऐसा करेंगे वही टोटे और घाटे में रहने वाले होंगे।

इसलाम में पाँच समय की नमाज़ अनिवार्य है और वह बेशक अल्लाह की याद है बल्कि नमाज़ बहुत ऊँचे दर्जे की याद है लेकिन किसी ईमान वाले के लिये ठीक नहीं है कि वह केवल नमाज़ पढ़ लेने को काफ़ी समझे और नमाज़ के बाद फिर अल्लाह की याद, उसका भजन और जाप कुछ न करे। इसका यह अर्थ नहीं है कि जिस तरह पाँच बार नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है इसी तरह कुछ बार जाप और भजन भी अनिवाय है बल्कि अर्थ यह है कि अल्लाह की याद, भजन और जाप से असावधान (ग़ाफ़िल) हो जाना मोमिन के लिये ठीक नहीं है।

इस्लाम का खुला हुआ आदेश यह है कि नमाज़ के अलावा भी तुम जिस दशा में हो अल्लाह की याद से असावधान न हो।

सूरए निसाअ में है—

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيَامًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ

फ़इज़ा + क़ज़ैतुमुस्सला + त + फ़ज़ + कुरुल्ला + ह + क़िपामौं + व + क़ुऊदौं + व + अला + जुनूबिकुम।

अर्थ यह है :—और जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो अल्लाह को खड़े, बैठे और लेटे याद करो।

यहाँ तक कि जो लोग ख़ुदा की राह में जिहाद के लिये निकले हुए हों उन्हें भी यह आज्ञा बहुत बल के साथ दी गई है कि वह अल्लाह की याद से असावधान न हों बल्कि अधिकता के साथ उसका भजन करते रहें और उसकी याद रक्खें।

सूरए अनफ़ाल में है:—

या + ऐय्युहल्लज़ी + न + आ + मनू + इज़ा लक़ीतुम + फ़िअतन + फ़सबुतू + वज़् कुरुल्ला + ह + कसी-रल्लअल्लकुम तफ़् + लिहून। يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۚ-

अर्थ यह है :—हे ईमान वालो, जब किसी सेना से तुम्हारा सामना हो तो मज़बूती से :जम जाओ और अल्लाह को बहुत याद करो ताकि तुम सफल हो जाओ।

इस आयत से भी मालूम हुआ और ऊपर सूरए जुमुअह की भी यह आयत लिखीं जा चुकी है।

वज़् + कुरुल्ला + ह + कसी रल + लअल्लक़ुम + तुफ़् + लिहुन। (وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ)

इससे भी मालूम हुआ था कि ईमान वालों की सफलता में अल्लाह की याद की अधिकता का विशेष भाग है। और सूरए मुनाफ़िक़ून की जो आयत ऊपर लिखी गई थी उससे भी मालम हो चुका है कि अल्लाह की याद से असावधान रहने वाले अस-फल होने वाले और हानि उठाने वाले ह और सूरए 'राद" की एक आयत में अल्लाह की याद का एक यह नतीजा बयान हुआ है कि इससे शान्ति और सन्तोष प्राप्त होता है।

अला + बिज़िक + रिल्लाहि तत-मइन्नुलक़ूलब। اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ۚ

अर्थ यह है :—याद रक्खो अल्लाह की याद ही से दिलों को शान्ति मिलती है।

पवित्र क़ुआंन की इन आयतों के अतिरिक्त रसलुल्लाहि सल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुछ हदीसें भी सुन लीजिये—

एक हदीस में है कि :—

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि क़ियामत के दिन कौन लोग अल्लाह के बन्दों में से बहुत ऊँचे दर्जों पर होंगे ? आपने फ़रमाया कि अल्लाह का ज़िक्र (याद, भजन, जाप) करने वाले। चाहे वह पुरुष हों या स्त्रियां।

सहीह मुसलिम और सहीह बुख़ारी में हज़रत अबू मूसा (अल्लाह उनसे ख़ुश हो) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह को याद करने वाले की मिसाल और याद न करने वाले की मिसाल मुरदा और ज़िन्दा की है यानी याद करने वाला ज़िन्दा और याद न करने वाला मुरदा है।

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है कि हुज़ूर ने फ़रमाया :—

हर चीज़ के लिये एक सफ़ाई करने वाला होता है और दिलों की सफ़ाई करने वाला अल्लाह का ज़िक्र (याद, भजन, जाप) है। और अल्लाह के दण्ड से बचाने वाली कोई चीज़ अल्लाह की याद, उसके भजन और उसके जाप से बढ़ कर नहीं है।

ज़िक्र का ठीक अर्थ :-

यहाँ यह बात अच्छी समझ लेनी चाहिये कि ज़िक्र का ठीक अर्थ यह है कि मनुष्य अल्लाह से ग़ाफ़िल न हो बल्कि वह जिस हालत और जिस काम में हो उसको अल्लाह का और अल्लाह की आज्ञाओं का ध्यान रहे। इसलिये यह बात आवश्यक नहीं है कि हर समय और हर दशा में मनुष्य ज़बान से भी ज़िक्र करे लेकिन यह सच्ची बात है कि अल्लाह के जिन बन्दों का यह हाल होता है उनकी ज़बानें भी अल्लाह के ज़िक्र से तर रहती हैं। और यह बात कि हर समय और हर दशा में अल्लाह की याद और उसका ध्यान बना रहे उन्हीं लोगों को प्राप्त होती है जो ज़बान से भी अल्लाह का ज़िक्र अधिकता के साथ करते रहते हैं जिससे उनके दिल और दिमाग़ में अल्लाह की याद बस जाती है इसलिये ज़बान से ज़िक्र करते रहना हर दशा में आवश्यक है। इस ज़माने में कुछ पढ़े लिखे लोग एक बहुत बड़ी भूल में फँस गए हैं कि वह ज़बान से अल्लाह के ज़िक्र की अधिकता को बेकार समझते हैं लेकिन रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों में साफ़-साफ़ इसकी हिदायत मौजूद हैं और हुज़ूर ने इसकी बड़ी प्रशंसा की है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र की रिवायत है कि एक आदमी हुज़ूर की सेवा में हाज़िर हुआ और उसने निवेदन किया :—

हे अल्लाह के रसूल! इस्लाम के आदेश बहुत हैं। आप मुझको कोई ऐसी बात बता दीजिये जिस को मैं मज़बूती से पकड़ लूँ! हुज़ूर ने फ़रमाया 'तुम्हारी ज़बान हमेशा अल्लाह के ज़िक्र से तर रहा करे।

एक हदीसे क़ुदसी में है जो हज़रत अबू हुरैरह की रिवायत है कि :—

अल्लाह तआला का पवित्र कथन (कहना) है कि बन्दा जब मुझे याद करता है और मेरे ज़िक्र से उसके होंट चलते हैं तो मैं उसके साथ होता हूँ।

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिखाए हुए कुछ विशेष अज़्कार (जाप)

जो आयतें और हदीसें अब तक लिखी गईं उनसे अल्लाह के ज़िक्र (जाप) की बड़ाई और उसका महत्व मालूम हो चुका है और ऊपर यह भी बतलाया जा चुका है कि अल्लाह के ज़िक्र की अधिकता से अल्लाह का प्रेम पैदा हो जाता है और बढ़ता है अब हमको आपको पवित्र रसूल के सिखाए हुए और पसन्द किये हुए ज़िक्र के विशेष मन्त्र मालूम कर लेना चाहिये।

अफ़+ज़लुज्ज़िक्र यानी सबसे ऊँचा और बढ़िया जापः—

हज़रत जाबिर (अल्लाह उन से राज़ी हो) से रिवायत है कि पवित्र रसूल ने फ़रमाया सब ज़िक्रों में ऊँचा और बढ़िया "ला+इला+ह+इल्लल्लाह" का ज़िक्र है।

एक दूसरी हदीस में है जो हज़रत अबू हुरैरा की रिवायत है (अल्लाह उनसे राज़ी हो) कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः—

जब कोई बन्दा दिल के पूरे "**इख़लास**" के साथ

"ला + इला + ह + इल्लल्लाह कहता है तो इस वाक्य के लिये आकाश (आसमान) के द्वार (दरवाज़े) खुल जाते हैं यहां तक कि यह वाक्य सीधा अर्श तक पहुँचता है। शर्त यह है कि वह बन्दा "क़बीरह" पापों से (बड़े पापों से) बचे।

एक दूसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु 'अलैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाया:—

एक बार हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने (उन पर सलाम हो) अल्लाह तआला से निवेदन किया कि मुझे कोई जाप बताया जाय ताकि मैं आपकी याद करूँ।

अल्लाह तआला की ओर से जवाब मिला कि:—

ला + इला + ह + इल्लल्लाह के जाप से मेरा ज़िक्र किया करो। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने निवेदन किया कि यह ज़िक्र तो सभी करते हैं। मैं आप से कोई विशेष जाप लेना चाहता हूँ। जवाब मिला कि हे मूसा अगर सातों आकाश और उनमें जो कुछ है और सातों पृथ्वियां तराज़ू के एक पलड़े में रक्खी जायँ और ला + इला + ह + इल्लल्लाह दूसरे पलड़े में, तो ला + इला + ह + इल्लल्लाह वाला पलड़ा ही झुक जायगा।

सचमुच ला + इला + ह + इल्लल्लाह की शान ऐसी ही है। लेकिन लोग इसको केवल एक हल्का सा शब्द समझते है। इस सेवक ने अल्लाह के एक संत और सच्चे भक्त से सुना।

एक विशेष दशा में इस सेवक पर दया करते हुए फ़रमाया :—

अगर कोई आदमी जिसके पास दुनिया के खज़ाने हों मुझसे यह कहे कि यह सारे खज़ाने तुम ले लो और केवल अपना एक बार का कहा हुआ "ला + इला + ह + इल्लल्लाह" इसके बदले में दे दो तो यह फ़क़ीर इस बात पर राज़ी न होगा।

हो सकता है कि कोई अन्जान यह समझे कि यह बात बढ़ा चढ़ाकर कह दी गई है लेकिन सच्ची बात यह है कि अल्लाह तआला के यहाँ ला + इला + ह + इल्लल्लाह की जो बड़ाई और क़ीमत है अगर अल्लाह तआला अपने किसी बन्दे को इसका यक़ीन प्रदान कर दें तो उस बन्दे की दशा भी यही हो जायगी कि वह सारी दुनिया के खज़ानों के बदले में एक बार का कहा हुआ ला + इला + ह + इल्लल्लाह देने पर कभी तैय्यार न होगा।

कलिमए तम्जीद यानी तीसरा कलिमह

हज़रत सुमरह सपुत्र जन्दब, (अल्लाह उनसे राज़ी हो), से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :—

सारे बोलों में सबसे ऊँचे और अच्छे और सारे मन्त्रों में सबसे ऊँचे और अच्छे यह चार बोल और मन्त्र हैं :—

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ

सुब+हा+नल्लाहि। वल+हम्दु लिल्लाहि।

वला+इला+ह+इल्लल्लाहु। वल्लाहु अक्बर।

और हज़रत अबू हुरैरह से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह बोल :—

सुब + हा + नल्लाहि। वल+हम +दुलिल्लाहि।

वला+इला+ह+इल्लल्लाहु। वल्लाहु+अक्बर।

मुझको इस सारे संसार से अधिक प्यारे हैं जिस पर सूरज चमकता है।

वास्तव में (सचमुच) यह बोल हर तरह से एक ऊँचा तुला पूरा बोल है और अल्लाह तआला की प्रशंसा के सब रूप और भाव इसमें आ जाते हैं। कुछ हदीसों में "अल्लाहु अक्बर" के बाद "ला+हौ+ल+वला+क़ू+व+त+इल्लाह+बिल्लाह" भी आया है। हमारे एक माननीय ऊँचे दरजे के सन्त इस वाक्य का अर्थ इस तरह बयान किया करते थे :—

(१) सुब+हा+नल्लाह। =पवित्र है अल्लाह। उसमें कोई ऐब, दोष और कमी नहीं। वह उन सब बातों से पवित्र है जो उसकी शान से नीचे की बातें है।

(२) अल+हम+दुलिल्लाह। =अल्लाह में सब गुण हैं। बड़ाई और प्रशसा की सारी बातें उसमें पाई जाती हैं। इसलिये सारी प्रशंसा उसी को फबती है।

(३) ला+इला+ह + इल्लल्लाह=नहीं है कोई दूसरा

ऐसा जिसकी पूजा की जाय सिवा अल्लाह के। यानी जब उसकी शान यह है कि हर अनुचित बात से वह पवित्र है और सब अच्छे गुण उसमें पाये जाते हैं तो बस वही हमारा पूज्य और प्रिय है। और हम केवल उसी के बन्दे हैं।

(४) अल्लाहु अकबर=वह बहुत ही बड़ा है। हम किसी तरह उसकी इबादत (पूजा) का हक़ अदा नहीं कर सकते। और उस ऊँचे दरबार तक हमारी पहुँच नहीं हो सकती।

(५) ला+हौ+ल+वला+क़ू+व+त+इल्ला+बिल्लाह=नहीं है ताक़त किसी में सिवा अल्लाह के। यानी जब वह बहुत ही बड़ा है तो उस ऊँचे दरबार तक हमारी पहुँच नहीं हो सकती क्योंकि हमारे अन्दर इतनी ताक़त नहीं है। हाँ वही हमारी सहायता करे तभी हम उसके दरबार तक पहुँचने की आशा कर सकते हैं।

तसबीहाते फ़ातिमह यानी बीबी फ़ातिमह के जाप।
(अल्लाह उनसे राज़ी हों)

प्रसिद्ध हदीस में है कि :—

> हज़रत बीबी फ़ातिमह (अल्लाह उनसे राज़ी हो) अपने घर का पूरा काम काज ख़ुद करती थीं। यहाँ तक कि ख़ुद ही पानी भी भरा करती थीं और ख़ुद ही चक्की भी पीसती थीं। एक बार उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रार्थना की कि इन कामों के लिये बीबी फ़ातिमह को कोई दासी दे दी जाय तो हुज़ूर ने उनसे फ़रमाया कि मैं तुम्हें दासी से अच्छी चीज़ बताता

हूँ और वह यह है कि तुम हर नमाज़ के पीछे और सोते समय भी तेंतीस बार सुब+हा+नल्लाह, तेंतीस बार अल+हम+दुलिल्लाह और चौंतीस बार "अल्लाहु अक्बर" पढ़ लिया करो। यह तुम्हारे लिये दासी से कई गुना अच्छा होगा।

एक दूसरी हदीस में इन वाक्यों की बड़ाई और इनके गुण यह बयान किये गये हैं :—

जो आदमी हर नमाज़ के बाद तेंतीस बार सुब+हा+नल्लाह । तेंतीस बार अल+हम+दुलिल्लाह। और चौंतीस बार अल्लाहु अक्बर पढ़ा करे और आख़िर में एक बार यह पढ़ लिया करे:—ला+इला+ह+इल्लल्लाहु +वह+दहू+ला+शरी+क लहू+लहुल+मुल्कु+व+लहुल+हम्दु+व+हु+व+अला+कुल्लि शैइन +क़दीर। तो उसके सब अपराध (गुनाह) क्षमा कर दिये जायँगे। चाहे वह समुद्र के झाग की तरह ही क्यों न हों।

सब+हा+नल्लाहि व बिहम्दि ही :—

हज़रत अबू हुरैरह से एक दूसरी रिवायत है कि :—

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि—

दो वाक्य हैं। ज़बान पर बहुत हलके। तराज़ू में बहुत भारी। और अल्लाह को बहुत प्यारे। वह यह हैं :—

(१) सुब+हा+नल्लाहि+वबि हम्दिही। सुब+ह। +

नल्लाहिल अज़ीम। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से अल्लाह तआला के जाप के लिये और भी बहुत से वाक्य बयान किये गये हैं लेकिन हमने जो थोड़े से वाक्य ऊपर लिखे हैं अगर अल्लाह का कोई बन्दा उन्हीं को या उनमें से कुछ को अपना जाप बना ले तो काफ़ी है। ज़िक्र के बारे में एक बात और भी ध्यान देने के क़ाबिल है कि जहाँ तक आख़िरत के बदले और सवाब की बात है उसके लिये कोई विशेष नियम और क़ानून नहीं है। अल्लाह के जो बन्दे ज़िक्र का जो वाक्य भी पूरे यक़ीन और सवाब की इच्छा से जिस समय और जिस संख्या (तादाद) में पढ़ेंगे, ख़ुदा की दया से वह उसके पूरे बदले और सवाब के हक़दार होंगे लेकिन इस राह के गुरु लोग दिल में कोई ख़ास असर पैदा करने के लिये जैसे अल्लाह तआला की मुहब्बत को बढ़ाने के लिये या दिल से असावधानी दूर करने के लिये या आत्मा और दिल के किसी रोग को दूर करने के लिये विशेष तरीक़े से जो जाप बताते हैं उसमें उनके बताए हुए क़ायदे और गिन्ती की पाबन्दी आवश्यक है। क्योंकि जिस फ़ायदे के लिए वह जाप किया जाता है वह लाभ उसी ढंग से जाप करने से प्राप्त होता है। इसकी खुली हुई मिसाल यह है कि अगर कोई मनुष्य केवल सवाब लेने के लिये 'अल्हम्दु'' या पवित्र क़ुर्आन की किसी दूसरी सूरत का पाठ करे तो इसमें कोई बुराई नहीं है कि वह एक बार सवेरे, एक बार दोपहर को एक बार तीसरे पहर, एक बार शाम को और इसी तरह दो चार बार रात में पाठ कर ले लेकिन अगर वह इस सूरत को ज़बानी याद करना चाहे तो उसको लगातार एक ही

बैठक में बीसों बार पाठ करना पड़ेगा। बिना इसके वह ज़बानी याद नहीं कर सकता। बस इसी प्रकार का अन्तर है जापों में। एक जाप वह है जो केवल सवाब के लिये किया जाय। दूसरा जाप वह है जो गुरु लोग अपने मुरीदों को किसी दवा और उपाय के रूप में बताते हैं। बहुत से लोगों को जाप का यह अन्तर मालूम न होने के कारण तरह-तरह की उलझनें पैदा होती हैं इस लिये अन्तर वाली यह छोटी सी बात यहाँ लिख दी गई।

पवित्र क़ुर्आन की तिलावत (पाठ) :—पवित्र क़ुर्आन का पाठ भी अल्लाह तआला का ज़िक्र है। बल्कि ऊँचे दरजे का ज़िक्र है। आज कल कें नई तालीम पाए हुए कुछ लोगों का विचार है जिसको वह पूरी ताक़त से फैलाते हैं कि अर्थ समझे बिना पबित्र क़ुर्आन का पाठ बिलकुल बेकार है। यह वेचारे शायद यह समझते हैं कि जिस तरह क़ानून की दूसरी पुस्तकें होती हैं उसी तरह की एक पुस्तक पवित्र क़ुर्आन भी है और जिस तरह क़ानून की किसी पुस्तक को बिना समझे पढ़ना व्यर्थ (बेकार) है इसी तरह पवित्र क़ुर्आन को भी बिना समझे पढ़ना बेकार है। लेकिन ऐसे लोगों को यह याद रखना चाहिये कि पवित्र क़ुर्आन दूसरी पुस्तकों जैसी एक पुस्तक नहीं है। इस पवित्र पुस्तक की विशेषता यह है कि यह पवित्र अल्लाह की पवित्र पुस्तक है। इस लिये अदब और मुहब्बत के साथ केवल इसका पाठ भी बिना अर्थ समझे हुए अल्लाह तआला के साथ प्रेम और दासता (ग़ुलामी) के सम्बन्ध को जाहिर करने वाला

एक काम है। इस लिये यह एक पूजा है। अगर पवित्र क़ुर्आन का फ़ायदा केवल उसका समझना ही होता तो एक-एक नमाज़ में चार-चार बार सूरए फ़ातिहा के पढ़ने की आज्ञा न होती। क्योंकि अर्थ समझने के लिये तो एक दोबार का पढ़ना भी काफ़ी होता। इस तरह की भूल केवल उन लोगों को लगती है जो अल्लाह तआला को भी दुनियाँ के हाकिमों की तरह का एक हाकिम समझते हैं और अल्लाह तआला की इस शान से अनजान हैं कि वह हमारा पूज्य और प्रिय भी है या यों कहा जाय कि जिन लोगों ने केवल अपने मस्तिष्क (दिमाग़) के बल से ख़ुदा को जाना और माना और दिल की ताक़त से अभी ख़ुदा को जानने और मानने की बारी नहीं आई। इसी के साथ यह भी याद रहे कि क़ुर्आन का जो ठीक-ठीक उद्देश्य (मक़सद) है यानी रास्ता दिखाना और नसीहत करना वह तो बेशक समझने ही से पूरा हो सकता है। इसलिये इसको समझना और समझ बूझ कर पढ़ना इबादत और भाग्य वानी का ऊँचा स्थान है इस बारे में यही ठीक और सच्चा फ़ैसला है। लेकिन बहुत से लोग इस पर ध्यान नहीं देते।

एक हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया।

अल्लाह तआला के कथन (कलाम) की बड़ाई दूसरे कथनों पर ऐसी ही है जैसे अल्लाह की बड़ाई उसी के बनाए और पैदा किये हुये लोगों पर है। एक दूसरी हदीस में है जो हज़रत अब्दुल्लाह सुपुत्र मसऊद की रिवायत की हुई ह कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :—

जो कोई अल्लाह की पुस्तक यानी पवित्र क़ुर्आन का एक अक्षर पढ़े उसके लिये एक नेकी है और उस एक नेकी की क़ीमत दस नेकियों के बराबर है।

फिर फ़रमाया कि मैं यह नहीं कहता हूँ कि अलिफ़ लाम मीम एक अक्षर है बल्कि इसका अलिफ़ एक अक्षर है लाम दूसरा अक्षर है और मीन तीसरा अक्षर है।

एक और हदीस में है जो कि हज़रत अबू उमामह (अल्लाह उनसे राज़ी हो) की बयान की हुई है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि लोगो क़ुर्आन पढ़ा करो। (क़ियामत के दिन क़ुर्आन उनकी सिफ़ारिश करेगा जो क़ुर्आन पढ़ने वाले होंगे।

ज़िक्र (जाप) के बारे में कुछ शब्द

(१)

जाप करते-करते अल्लाह के जिन दासों और भक्तों के दिल में जाप बस गया है और उनकी ज़िन्दगी का अँश बन गया है उनको तो जाप के लिये किसी विशेष पाबन्दी और प्रबन्ध की आवश्यकता नहीं होती लेकिन हम जैसे लोग अगर जाप से अल्लाह तआला के साथ सम्बन्ध बढ़ाना चाहें और जाप की बरकतें और उसके लाभ प्राप्त करना चाहें तो ऐसों के लिये आवश्यक है कि वह जाप का कोई समय और ताद द तै करलें। इसी तरह पवित्र क़ुर्आन के पाठ के लिय भी समय आदि तै कर लें।

(२)

जिस मंत्र से अल्लाह का ज़िक्र किया जाय, जहाँ तक हो सके

उसके अर्थ का भी ध्यान रक्खा जाय और अल्लाह तआला की बड़ाई और उसकी मुहब्बत दिल में लिये हुए ज़िक्र किया जाय और इसका यक़ीन रक्खा जाय कि अल्लाह तआला मेरे पास और मेरे साथ हैं और मेरे हर शब्द को सुन रहे हैं।

(३)

ज़िक्र के लिये वज़ू शर्त नहीं है इसलिये वज़ू न होने की दशा में भी बे झिझक ज़िक्र किया जा सकता है इनशा अल्लाह तआला जिस सवाब का वादा किया गया है वह पूरा-पूरा मिलेगा। लेकिन वज़ू के साथ ज़िक्र करने में उसकी तासीर और रौशनी बहुत बढ़ जाती है।

(४)

ऊपर कहा जा चुका है कि जाप के सारे मंत्रों में कलिमए तमज़ीद यानी सुब+हा+नल्लाहि। वल+हम+दुलिल्लाहि। वला+इला+ह+इल्लल्लाहु। अल्लाहु अक्बर बहुत पूरा मंत्र है। अगर इसको अपना जाप बना लिया जाय तो इसमें सब कुछ है और अपने बहुतेरे संतों को देखा है कि वह जाप बताए जाने की इच्छा करने वालों को यही मंत्र और साथ में "इस्तिग़फ़ार" और "दरूद शरीफ़" बताते ह। "इस्तिग़फ़ार" और दरूद शरीफ़ का बयान अभी आगे के एक पाठ में आ रहा है।

अल्लाह तआला हम सब की सहायता करे कि उसके भजन से हमारे दिल सजे हुए और हमारी ज़बानें हरी भरी और तर रहें और उसकी रोशनियाँ, उसकी तासीरें, उसकी बरकतें और उसके फल हमको प्राप्त हों।

—:o:—

इस्लाम का अट्ठारहवां पाठ ।

प्रार्थना यानी दुआ

जब यह बात मानी हुई है कि दुनिया का सारा कारख़ाना अल्लाह तआला ही की आज्ञा से चल रहा है और सब कुछ उसी के अधिकार और ताक़त के अन्दर है तो फिर हर छोटी और बड़ी आवश्यकता में केवल अल्लाह ही से ताक़त, सहायता और सफलता की प्रार्थना करना बिलकुल समझ की बात है इसलिये हर धर्म के मानने वाले अपनी आवश्यकता के समय अल्लाह तआला ही से प्रार्थना करते हैं लेकिन इस्लाम में इसकी शिक्षा और आज्ञा विशेष रूप से दी गई है।

पवित्र क़ुर्आन में एक जगह फ़रमाया गया है :—

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ

वक़ा+ल+रब्बुकुमुदऊनी अस्त-जिब लकुम।

यानी और फ़रमाया तुम्हारे पालनहार ने मुझसे प्रार्थना करो मैं क़बूल करूँगा।

दूसरे स्थान में है :—

क़ुलमा याबउ बिकुम रब्बी लौला दुआउ कुम।

قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ

यानी कह दो क्या परवाह तुम्हारी मेरे रब को अगर न हों तुम्हारी प्रार्थनाएँ।

फिर प्रार्थना की आज्ञा के साथ यह भी दिलासा दिया गया है कि अल्लाह तआला अपने दासों से बहुत पास है। वह उनकी प्रार्थनाओं को सुनता और क़बूल करता है। फ़रमाया गया है :—

वइज़ा+स+अ+ल+क+ इबादी+अन्नी+फ़इन्नी क़रीब। उजीबु दा+व+तदाइ+इज़ा+ दआन।

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۔

यानी :—और हे रसूल ! जब तुमसे मेरे बन्दे मेरे बारे में पूछें तो उन्हें बताओ कि मैं उनके पास हूँ। पुकारने वाला जब मुझे पुकारे तो मैं उसकी पुकार सुनता हू।

रसुलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमको यह भी बतलाया है कि अपनी ज़रूत की चीजें अल्लाह तआला से माँगना और अल्लाह ही से दुआ करना ऊँचे दरजे की इबादत है। बल्कि अल्लाह से मांगना और प्रार्थना करना इबादत का निचोड़ सार और तत्व है।

पवित्र हदीस में है कि :—

प्रार्थना पूजा है। और एक दूसरी रिवायत में है कि प्रार्थना पूजा का सार और तत्व है।

एक दूसरी हदीस में है कि :—

अल्लाह की नज़र में प्रार्थना से बढ़कर किसी चीज़ का दर्जा नहीं।

इसीलिये अल्लाह तआला उस मनुष्य से नाख़ुश होते हैं जो अपनी ज़रूरत की चीज़ें अल्लाह तआला से न माँगे।

एक हदीस में है कि :—

अल्लाह तआला उस बन्दे से नाख़ुश होते हैं जो अपनी ज़रूरत की चीज़ें और अपने दिल की इच्छाएँ अल्लाह तआला से नहीं माँगता।

सुब्हानल्लाह ! वाह वा वाह ! क्या शान है अल्लाह तआला की ! दुनियाँ में कोई आदमी अगर अपने किसी गहरे मित्र याअपने किसी सगे नातेदार और प्यारे से बार बार अपनी ज़रूरत की चीज़ें माँगे तो वह उससे तंग आकर नाख़ुश हो जायगा लेकिन पवित्र अल्लाह अपने बन्दों पर ऐसा मेहरबान है कि वह न माँगने पर नाख़ुश होता है।

एक और हदीस में है कि :—

जिस मनुष्य के लिये प्रार्थना के द्वार खुल गये यानी अल्लाह तआला की ओर से जिसको माँगने और प्रार्थना

करने की आदत और इच्छा प्राप्त हो गई और सच्ची प्रार्थना करना जिसको आ गया तो उसके लिये अल्लाह की दया के पट खुल गये।

प्रार्थना करना जिस तरह अपने दिल की चाहत को पा लेने का एक रास्ता है उसी प्रकार प्रार्थना करना एक ऊँचे दरजे की इबादत भी है जिससे अल्लाह तआला बहुत ख़ुश होते हैं और अपनी रहमत (दया) के द्वार खोल देते हैं। यह लाभ हर प्रार्थना का है चाहे वह किसी दुनिया के काम के लिये की जाय या दीन और आख़िरत की सफ़लता के लिये की जाय लेकिन शर्त यह है कि वह किसी बुरी बात के लिये या गुनाह के काम के लिये न हो। बुरे और ग़लत काम के लिये प्रार्थना करना भी बुरा है और पाप है। यहाँ एक बात यह भी याद रखने की है कि प्रार्थना जितनी दिल की गहराई से और अपने को जितना भी तुच्छ और बेबस समझ कर की जायगी और जितना अधिक अल्लाह तआला को ताक़त और अधिकार वाला और दयालु यक़ीन करके की जायगी उतनी ही बड़ी आशा उसके क़बूल हो जाने की है। जो प्रार्थना दिल की गहराई से न की जाय बल्कि ज़बान ही से कर ली जाय वह केवल प्रार्थना का एक ढाँचा है जिसमें प्रार्थना की सच्चाई और उसकी जान नहीं है। ऐसी प्रार्थना के क़बूल होने की कोई आशा नहीं है। पवित्र हदीस में है कि अल्लाह तआला वह प्रार्थना स्वीकार नहीं करता जो दिल की ग़फ़लत के साथ की गई हो।

अल्लाह तआला हर समय की प्रार्थना को सुनते हैं लेकिन हदीसों से मालूम होता है कि कुछ विशेष समय ऐसे हैं जिनमें प्रार्थना अधिक स्वीकार होती है जैसे फ़ज़ नमाज़ों के बाद, रात के पिछले पहर में, रोज़ह इफ़्तार करते समय, या किसी नेक काम के बाद या यात्रा की हालत में, विशेषकर जब वह यात्रा दीन के लिये

और अल्लाह तआला को खुश करने के लिये हो, यह भी याद रखना चाहिये कि प्रार्थना के स्वीकार होने के लिये मनुष्य का वली होना या परहेजगार होना शर्त नहीं है लेकिन इसमें शक नहीं कि अल्लाह के प्यारों और नेक बन्दों की प्रार्थनाएँ अधिक स्वीकार होती हैं। ऐसा नहीं है कि मामूली आदमियों और पापियों की प्रार्थनाएँ सुनी ही न जाती हों इस लिये किसी को इस विचार से प्रार्थना करना छोड़ न देना चाहिये कि हम पापियों की प्रार्थना से क्या होगा। अल्लाह तआला ऐसे दया वाले हैं कि वह जिस तरह अपने पापी बन्दों को खिलाते पिलाते हैं उसी प्रकार उनकी प्रार्थनाएँ भी सुनते हैं।

इसलिये अलल्लाह तआला से प्रार्थना सबको करनी चाहिये। अभी बताया जा चुका है कि प्रार्थना खुद एक पूजा है इसलिये प्रार्थना करने वाले को सवाब भी मिलेगा।

अगर कुछ बार प्रार्थना करने से इच्छा पूरी न हो तब भी निराश (नाउम्मीद) होकर प्रार्थना करना छोड़ न देना चाहिये। अल्लाह तआला हमारी इच्छा के आधीन नहीं है। कभी अल्लाह तआला बन्दे ही की भलाई के लिये प्रार्थना देर में स्वीकार करते हैं। बन्दा अपनी भलाई को भी पूरी तरह नहीं समझ पाता इस लिये जल्दी मचाता है और कभी निराश होकर प्रार्थना करना छोड़ देता है। बन्दे को चाहिये कि अपनी आवश्यकताओं के लिए अल्लाह तआला से प्रार्थना करता ही रहे। मालूम नहीं अल्लाह तआला किस दिन और किस घड़ी सुन लें।

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने प्रार्थना के बारे में एक बात यह भी बताई है कि:—

प्रार्थना न कभी नष्ट होती है न व्यर्थ जाती है बल्कि

उसके स्वीकार होने के रूप कई तरह के होते हैं। कभी ऐसा होता है कि बन्दा जिस चीज़ की प्रार्थना करता है उसको वही मिल जाती है और कभी ऐसा होता है कि अल्लाह तआला बन्दे को वही चीज देना बन्दे के लिये अच्छा नहीं समझते इसलिये बन्दे को वह चीज़ नहीं देते बल्कि उसके स्थान पर कोई दूसरी नेमत उसको प्रदान करते हैं या कोई आनेवाली कठिनाई या मुसीबत टाल दी जाती है या उस प्रार्थना के बदले उसके पापों को क्षमा कर दिया जाता है। लेकिन चूँकि बन्दे को इस भेद का ज्ञान नहीं होता इसलिये वह समझने लगता है कि मेरी प्रार्थना बेकार हो गई। और कभी ऐसा होता है कि प्रार्थना को अल्लाह तआला आख़िरत में जमा कर देते हैं यानी बन्दा जिस चीज़ के लिये प्रार्थना करता है। वह उसको अल्लाह तआला इस संसार में नहीं देता बल्कि उसकी उस प्रार्थना के बदले में आख़िरत का बहुत बड़ा सवाब उसके लिये लिख दिया जाता है।

एक हदीस में है कि :—

कुछ लोग जिनकी बहुत सी प्रार्थनाएँ दुनिया में स्वीकार नहीं हुई थीं जब आख़िरत में पहुँच कर अपनी उन प्रार्थनाओं के बदले में मिले हुए सवाब के ख़ज़ाने देखेंगे तो अफ़सोस करेंगे और कहेंगे कि क्या अच्छा हुआ होता कि हमारी कोई प्रार्थना दुनिया में कभी स्वीकार न हुई होती और सबका बदला हमको यहीं मिलता।

सारांश (ख़ुलासा) यह है कि अल्लाह तआला पर ईमान रखनेवाले हर बन्दे को इस पर पूरा यक़ीन रखना चाहिए कि

अल्लाह तआला में हर तरह की ताक़त है और वह बहुत बड़ा मेहरबान और दया करने वाला है। बन्दे को पूरी आशा रखनी चाहिए कि अल्लाह तआला उसकी प्रार्थना को अवश्य क़बूल करेंगे और हर आवश्यकता पर अल्लाह तआला से प्रार्थना करनी चाहिए।

जहाँ तक बन पड़े प्रार्थना ऐसे अच्छे शब्दों में करनी चाहिए जिनसे अपनी तुच्छता और बेबसी और अल्लाह तआला की बड़ाई और उसका जलाल ज़ाहिर हो। पवित्र क़ुर्आन में हमको बहुत सी प्रार्थनाएं बतलाई गई हैं और उनके अलावा पवित्र हदीसों में भी पवित्र रसूल की सैकड़ों प्रार्थनाएं आई हैं। सबसे अच्छी प्रार्थनाएँ क़ुर्आन और हदीस की यही प्रार्थनाएं हैं। उनमें चालीस दुआएँ जो हर तरह बड़ी अच्छी हैं इस पुस्तक के आख़िर में लिख दी गई हैं।

—:०:—

इस्लाम का उन्नीसवाँ पाठ

दुरूद शरीफ़

दुरूद शरीफ़ भी एक प्रार्थना है जो हम बन्दे अल्लाह तआला से पवित्र रसूल के लिये करते हैं। अल्लाह तआला के बाद हमारे ऊपर सबसे बढ़कर उपकार (इहसान) करने वाले पवित्र रसूल ही हैं। आपने कठिन से कठिन कष्ट उठा कर अल्लाह के पवित्र रास्ते का हमको ज्ञान कराया अगर आप अल्लाह के रास्ते में यह कष्ट न उठाते तो दीन की रोशनी हम तक न पहुँच सकती और हम कुफ्र और शिर्क के अंधेरे में पड़े रह जाते और मरने के बाद हमेशा के लिये नर्क में जाते। दीन और यक़ीन की दौलत इस दुनिया की सबसे बड़ी नेमत है और यह हमको हुज़ूर के सदक़े में मिली है इसलिये अल्लाह तआला के बाद हुज़ूर ही हमारे साथ सबसे बड़े भलाई करने वाले हैं। हम आपके इहसान का कोई बदला नहीं दे सकते। अधिक से अधिक जो कुछ हम कर सकते हैं वह यह है कि अल्लाह तआला से हम आपके लिये प्रार्थना करें और इस तरह हम यह सिद्ध (साबित) करें कि हम आप का इहसान मानते हैं और आपके कृतज्ञ (शुक्र गुज़ार) हैं। हमारी ओर से हुज़ूर की शान के योग्य (लायक़) यही प्रार्थना हो सकती है कि अल्लाह तआला आप पर अपनी विशेष रहमतें और बरकते उतारें और आपका पद ऊँचे से ऊँचा करें। बस इसी प्रकार की प्रार्थना को दुरूद शरीफ़ कहते हैं।

पवित्र क़ुर्आन में बहुत साफ़-साफ़ और बड़े प्यारे ढंग से हमको इसकी आज्ञा दी गई है। फ़रमाया गया है :—

इन्नल्ला + ह + व + म + लाइ + क + तहू युसल्लू + न + अलन्न-बीयि + या + ऐय्युहल्ल + ज़ी + न + आ + मनू सल्लू + अलैहि व + सल्लिमू + तसलीमा।

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا۔

यानी अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। हे ईमान वालो तुम उनपर दुरूद और सलाम भेजो।

इस आयत में पहले तो यह बयान किया गया कि अल्लाह तआला अपने नबी का ख़ुद आदर और सम्मान करते हैं और उन पर रहमत और दया की नज़र रखते हैं और उनके फ़रिश्तों का भी व्यवहार आपके साथ यही है कि वह आपका आदर और सम्मान करते हैं और अल्लाह तआला से आपके लिए रहमत की प्रार्थना करते रहते हैं इसके बाद इस आयत में हम सब ईमान लाने वालों को आज्ञा दी गई है कि तुम भी अल्लाह तआला से प्रार्थना करो कि वह उनके ऊपर रहमतें उतारे और तुम उन पर सलाम भेजो। हम को आज्ञा देने से पहले ही बतला दिया गया है कि जिस काम का तुम को आदेश दिया जा रहा है वह काम अल्लाह तआला को विशेष रूप से प्यारा है और वह काम फ़रिश्तों का विशेष धन्दा है। यह जानने के बाद कौन मुसलमान होगा जो दुरूद शरीफ़ को अपना जाप न बनाए।

दुरूद शरीफ़ की बड़ाई के बारे में बहुत सी हदीसें आई हैं जिनमें से दो चार यहां भी लिखी जाती हैं।

एक बहुत प्रसिद्ध हदीस में है :—

जो आदमी मुझ पर एक बार दुरूद भेजे अल्लाह तआला उस पर दस बार रहमतें भेजते हैं।

एक दूसरी हदीस में इतना और भी है कि :—

उसके दस अपराध भी क्षमा किये जाते हैं और दस दरजे ऊँचे किये जाते हैं।

एक और हदीस में है कि :—

अल्लाह के बहुत से फ़रिश्ते हैं जिनका विशेष काम यही है कि वह पृथ्वी पर फिरते रहते हैं और मेरा जो उम्मती मुझ पर दुरुद और सलाम भेजे वह उसको मुझ तक पहुँचाते हैं। सुब+हा+नल्लाह ! कितनी बड़ी दौलत है कि हमारा दुरूद और सलाम फ़रिश्ते हुजूर को पहुँचाते हैं और इस बहाने से हमारा नाम भी वहाँ पहुँच जाता है।

एक और हदीस में है :—

क़ियामत में मुझ से सबसे ज़ियादा क़रीब वह आदमी होगा जो मुझ पर दुरूद बहुत भेजता होगा।

एक और हदीस में है :—

वह बड़ा कंजूस है जिसके सामने मेरी चर्चा हो और वह उस समय भी मुझ पर दुरूद न भेजे।
एक और हदीस में आया है कि :—

उस मनुष्य की नाक मिट्टी से लिथड़ जाय यानी वह मनुष्य बे अबरू हो जाय जिसके सामने मेरी चर्चा आए और वह मुझ पर दुरूद न भेजे।

साराँश यह है कि हुज़ूर पर दुरूद भेजना हमारे ऊपर फ़र्ज़ है और हमारी बड़ी भाग्यवानी है और दुनिया और आख़िरत में हमारे लिये बेगिन्ती रहमतों और बरकतों का साधन (ज़रीआ) है।

दुरूद के शब्द :—

कुछ सहाबा (सतसंगियों ने) ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा था कि हम हुज़ूर दुरूद किस तरह भेजा करें तो हुज़ूर ने उनको दुरूदे इबराहीमी की शिक्षा दी जो नमाज़ में पढ़ा जाता है और इस पुस्तक के दूसरे पाठ में नमाज़ के बयान में लिखा भी जा चुका है। उसी के लग भग और उससे कुछ छोटा एक और दुरूद शरीफ़ भी हुज़ूर ने सिखाया है।

हदीस में उसके शब्द यह आए हैं :—

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मादि निन्नबीयिल उम्मी व अज़्वाजिही उम्महातिल मूमिनी+न व ज़ुर्रीयतिही व अह+लि+बैतिही कमा सल्लै+त अला आलि इबराही+म+इन्न+क+हमीदम्मजीद।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ِنالنَّبِيِّ
الْاُمِّيِّ وَاَزْوَاجِهٖ اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ
وَذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

यानी हे मेरे अल्लाह उम्मी नबी पर यानी उस नबी पर जिसने माँ के पेट से ही समझ बूझ और विद्या (इल्म) के साथ

जन्म लिया और जिसने कभी किसी से, कुछ नहीं पढ़ा यानी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और आपकी पवित्र बीबियों पर जो मुसलमानों की माताएँ हैं और आपकी सन्तान पर और आपके घरवालों पर रहमतें भेजिये जैसे कि आप ने हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम के घराने पर रहमतें भेजी। आप सराहे जाने के योग्य हैं और आप बड़ाई वाले हैं।

जब भी हम हुज़ूर का प्यारा और पवित्र नाम लें या आपके बारे में बात करें या किसी दूसरे से आपके बारे में कोई बात सुनें तो अवश्य हमको आप पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिए और ऐसे समय पर केवल "सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम" या "अलैहि-स्सलातु वस्सलाम" कहना काफ़ी है और कोई लम्बा दुरूद शरीफ़ पढ़ना आवश्यक नहीं है।

दुरूद शरीफ़ का जाप

कुछ लोग रोज़ाना के जाप के तौर पर कई कई हज़ार दुरूद शरीफ़ का जाप करते हैं।

लेकिन हम जैसे छोटे लोग और थोड़ी हिम्मत वाले अगर हर रोज़ सवेरे और शाम को केवल सौ सौ बार दुरूद शरीफ़ का जाप कर लिया करें तो ख़ुदा चाहे तो इतना कुछ पाएँगे जिसका कोई अन्दाज़ा इस दुनिया में हो ही नहीं सकता। और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दया उन पर ऐसी होगी कि बयान नहीं किया जा सकता। जो सज्जन छोटा सा दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहें वह यह दुरूद शरीफ़ ज़बानी याद कर लें :—

अल्लाहुम सल्लि अला मुहम्मदि निन्नबीयिल उम्मी व आलिही। اللهم صلى على محمد النبى الأمى و آله

—:o:—

इस्लाम का बीसवाँ पाठ

पापों पर पछताना और क्षमा माँगना

अल्लाह तआला ने अपने नबीयों और रसूलों को इसलिये भेजा और अपनी पुस्तकें इसलिये उतारीं कि मनुष्यों को अपना बुरा भला और पाप पुण्य सब मालूम हो जाय और वह बुरी बातों और पाप के कामों से बचें और नेकी और पुण्य (सवाब) की राह पर चल कर अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करें और आने वाले जीवन यानी आख़िरत में दण्ड (सज़ा) से छुटकारा पाएँ। जिन लोगों ने अल्लाह के नबीयों, रसूलों और अल्लाह तआला की उतारी हुई पुस्तकों को नही माना और ईमान नहीं लाए, उनका पूरा जीवन आज्ञा न मानने और मालिक की बग़ावत करने में बीता और अल्लाह तआला ने सीधी राह दिखाने का जो प्रबन्ध किया उसको उन्होंने ठुकरा दिया इसलिये वह जब तक अल्लाह तआला के भेजे हुए नबियों और रसूलों पर और उसकी उतारी हुई पुस्तकों पर, विशेष कर इस आख़िरी ज़माने के आखिरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उनको लाई हुई ख़ुदा की आख़िरो पुस्तक पवित्र क़ुर्आन पर ईमान न लाएँ और जो सीधा रास्ता उसने बताया उसको न न मानें वह अल्लाह तआला की ख़ुशी और मरने के बाद वाले जीवन में सफ़लता और मुक्ति (नजात) प्राप्त नहीं कर

सकते क्योंकि अल्लाह को, उसके नबियों को और उसकी पुस्तकों को न मानना ऐसा पाप नहीं जो क्षमा कर दिया जाय। अल्लाह तआला के हर एक पैग़म्बर ने अपने अपने ज़माने में इस बात को बहुत खोल कर और डंके की चोट पर बयान किया है कि कुफ़्र और शिर्क करने वालों को मुक्ति (नजात) प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है कि सबसे पहले कुफ़्र और शिर्क से तौबह (पछतावा) करके क्षमा की प्रार्थना करें और ईमान और तौहीद प्राप्त करें। इसके बिना मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। लेकिन जो लोग नबियों और रसूलों पर ईमान ले आते हैं और उनके बताए हुए सीधे रास्ते को मानकर उस पर चलने का पक्का वादा करते हैं वह भी कभी कभी शैतान के बहकावे से या अपने मन की बुरी इच्छा से पाप के काम कर बैठते हैं। ऐसे सब पापियों के लिये अल्लाह तआला ने तौबह व इस्तिग़फ़ार यानी पछताने और क्षमा माँगने के पट खुले रक्खे हैं। बन्दे को चाहिये कि जब शैतान के बहकाने से या मन की बुरी इच्छा से उससे कोई पाप और बुरा काम हो जाय तो वह दुखी हो और पछताए और आगे के लिये उससे बचने का पक्का वादा अल्लाह तआला से करे और जो पाप हो गया है उससे क्षमा माँगे। पवित्र क़ुर्आन और हदीसों में बतलाया गया है कि इस तरह पछताने और क्षमा माँगने से अल्लाह तआला ख़ुश हो जाते हैं और पाप क्षमा कर देते हैं।

याद रखना चाहिए कि तौबह यानी पछताने और क्षमा माँगने का काम केवल ज़बान से नहीं होता बल्कि दिल से पछताना, दिल से दुखी होना और दिल से क्षमा माँगना और साथ ही उस पाप से आगे के लिये बचने का पक्का इरादा दिल से करना आवश्यक है और अपने इरादे के पूरा होने की भी प्रार्थना अल्लाह तआला से करना आवश्यक है। तौबह और इस्तिग़फ़ार को सम-

झने के लिये यह उदाहरण (मिसाल) लिखी जाती है इसको समझ लिया जाय तो तौबह भी समझ में आ जायगी। एक आदमी ने गुस्से की दशा में या शोक की हालत में अपनी जान दे देने के लिये संखिया खाली। जब सखिया ने असर किया और आँतें कटने लगीं तो वह अपनी मूर्खता पर पछताया और दुखी हुआ और उसने अपनी जान बचाने के लिये वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों को बुलाया और उन्होंने जो दवा बताई उसने खाई पी। ऐसी दशा में उसके दिल की यह दशा होगी कि वह सखिया खाने पर दिल से पछताएगा और फिर कभी ऐसी मूर्खता न करने का पक्का प्रण (इरादा) करेगा। बस इसी का नाम सच्ची तौबह है।

पाप से तौबह करने वाले के दिल की भी यही दशा होनी चाहिये यानी अल्लाह तआला की ना खुशी और आखिरत के दण्ड को सोचकर उसको पाप करने पर भलीभांति दुख और शोक हो। और आगे के लिये उसके दिल का फ़ैसला उस समय यही हो कि अब कभी ऐसा नहीं करूँगा और जो हो चुका उसके लिये अल्लाह से क्षमा मांगे। अगर दिल की दशा पाप के बाद ऐसी हो जाय तो यक़ीन रखना चाहिये कि पाप क्षमा हो गया। और अल्लाह की रहमत का द्वार खुल गया। ऐसी तौबह करके पापी अपने पाप की गन्दगी से पाक साफ़ हो जाता है बल्कि अल्लाह तआला को पहले से अधिक प्यारा हो जाता है और कभी-कभी तो पाप के बाद सच्ची तौबह करके बन्दा उस दरजे पर पहुँच जाता है जिस दरजे पर पहुँचना सैकड़ों वर्ष की पूजा और तपस्या करके भी कठिन है।

यहाँ तक जो कुछ लिखा गया यह सब आयतों और हदीसों

से निकाल कर लिखा गया । अब कुछ आयतें और हदीस भी लिखी जाती है ।

सूरए तहरीम में है :—

या + ऐय्यु हल्लज़ी + न + आ + मनू + तूबू इलल्लाहि तौ + बतन्नसूहा । असा रब्बुकुम ऐँय्युकफ़्फ़ि र + अन्कुम सय्यि-आतिकुम व + युद + खि + लकुम + जन्नातिन तज + री मिन तह + तिहल + अन्हार ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا
إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَصُوحًا عَسَىٰ رَبُّكُمْ
أَنْ يُكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ

अर्थ यह है :—हे ईमान वालो तौबह करो अल्लाह से सच्ची तौबह, आशा है कि तुम्हारा मालिक मिटा देगा तुम्हारे पाप और दाखिल करेगा तुमको जन्नत के उन बाग़ीचों में जिनके नीचे नहरें बहती हैं । और सूरए माइदह में पापीबन्दों के बारे में फ़रमाया गया है :—

अ + फ़ + ला + यतूबू + न + इलल्लाहि व + यस्तग़फ़िरू + नहू वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम ।
(सूरए माइदह । रुकू... १०)

أفلا يتوبون إلى الله ويستغفرونه
و الله غفور رحيم .
(سورة مائده ع ١٠)

अर्थ यह है :—वह अल्लाह से तौबह क्यों नहीं करते और क्षमा क्यों नहीं माँगते और अल्लाह तो बड़ा क्षमा करने वाला बार-बार दया करने वाला है ।

और सूरए इनआम में कैसे प्यार के साथ फ़रमाया गया है :—

बइज़ा जा अकल्लज़ी +न
यूमिनू+न+बिआयातिना फ़क़ुल
सलामुन अलैकुम क+त+ब+
रब्बुकुम अलानफ़ + सिहिर्रह+
म+त + अन्तहू मन+अमि+
ल + मिन+कुम+सूअम बि+
जहा + लतिन+सुम्म+ता+ब
मिम+बादिही व्असल+ल+ह+
फ़ अन्नहू ग़फ़ूरुर्रहीम :

(सूरए इनआम रुकू ६)

وَاِذَا جَاءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ
بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ
رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ اَنَّهٗ
مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًا بِجَهَالَةٍ
ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۔ (سورۂ انعام)

अर्थ यह है :—

और हे नबी जब तुम्हारी सेवा में आएँ हमारे वह बन्दे जो ईमान लाए हमारी आयतों पर तो तुम कहो उनसे सलाम हो तुम पर तुम्हारे रब ने तुम्हारे ऊपर दया करना अपने लिये तै कर लिया है जो कोई तुम में से पाप करे मूखता से फिर उसके बाद तौबह कर ले और अपना काम सुधार ले तो अल्लाह क्षमा करने वाला बार-बार दया करने वाला है।

अल्लाह तआला के बार-बार दया करने की शान पर प्राण निछावर हों। उन्होंने क्षमा का द्वार खोलकर हम पापियों की कठिनाई सहज कर दी नहीं तो हमारा कहाँ ठिकाना था। इन आयतों के बाद रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुछ हदीसें भी सुन लीजिये।

मुस्लिम शरीफ़ में एक लम्बी हदीसे क़ुदुसी है उसका एक टुकड़ा यह है :—

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि हे मेरे बन्दों ! तुम दिन रात अपराध करते हो और मैं सब पाप क्षमा करसकता हूँ इसलिये तुम मुझसे क्षमा माँगो मैं तुम्हें क्षमा कर दूँगा।

अल्लाह तआला की बात जिसको रसूल अपने शब्दों में बयान करता है उसको हदीसे क़ुद्सी कहते हैं।

एक हदीस में है कि :—

अल्लाह तआला हर रात को अपनी दया और क्षमा का हाथ बढ़ाते हैं कि दिन के पापी तौबह करने और हर दिनको हाथ बढ़ाते हैं कि रात को पाप करने वाले तौबह कर लें और अल्लाह तआला का यह व्यवहार उस समय तक जारी रहेगा जब तक कि क़ियामत के क़रीब सूरज पच्छिम से निकले।

एक हदीस में है कि :—

अल्लाह के एक बन्दे ने कोई पाप किया फिर अल्लाह के द्वार पर प्रार्थना की कि हे मेरे पालनहार मैंने पाप किया मुझे क्षमा कर दीजिये तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मेरा बन्दा जानता है कि उसका कोई पालनहार है जो पापों पर पकड़ भी सकता है और क्षमा भी कर सकता है। मैं ने अपने बन्दे का अपराध क्षमा कर दिया। फिर जब तक अल्लाह ने चाहा वह पाप से रुका रहा और फिर किसी समय अपराध कर बैठा और

फिर अल्लाह से प्रार्थना की कि हे मेरे रब (पालनहार) मुझसे पाप होगया उस को क्षमा कर दीजिये तो अल्लाह तआला ने फिर फ़रमाया कि मेरा बन्दा जानता है कि उसका कोई मालिक है जो पाप क्षमा भी कर सकता है और पकड़ भी सकता है। मैंने अपने बन्दे का अपराध क्षमा कर दिया। फिर जब तक अल्लाह ने चाहा बन्दा पाप करने से रुका रहा और किसी समय फिर कोई पाप कर बैठा और अल्लाह तआला से प्रार्थना की कि हे मेरे प्रभु मुझसे और अपराध हो गया आप मुझे क्षमा कर दीजिये तो अल्लाह तआला ने फिर फ़रमाया कि मेरे बन्दे को यक़ीन है कि उसका कोई प्रभु और स्वामी है जो पाप क्षमा भी कर सकता है और दण्ड भी दे सकता है मैंने अपने बन्दे को क्षमा कर दिया वह जो चाहे करे।

एक हदीस में है :—

पाप से तौबह करने वाला बिलकुल उस आदमी की तरह हो जाता है जिसने वह पाप किया ही न हो। इन हदीसों में अल्लाह के क्षमा करने की शान का और उसकी दया का बयान है। ऐसी हदीसें सुनकर और भी अधिक पाप करने लगना यानी तौबह और क्षमा के भरोसे पर और अधिक पाप करने लगना मोमिन का काम नहीं है। क्षमा और दया की इन आयतों और हदीसों से तो अल्लाह तआला के साथ प्रेम बढ़ना चाहिए और यह सोचना चाहिए कि ऐसी दया करने वाले मालिक की आज्ञा न मानना तो बड़ी ही नीचता है। ज़रा सोचो तो कि अगर किसी का मालिक उसके साथ ऐसी दया और ऐसे उपकार का व्यवहार करे तो

क्या उस सेवक को और भी अधिक ना शुकरा बनकर उसकी आज्ञा को ठुकराने लगना चाहिए ।

सच यह है कि इन आयतों और हदीसों का उद्देश्य तो केवल यह है कि किसी मोमिन बन्दे से अगर पाप का काम हो ही जाय तो अल्लाह की दया से निराश न हो बल्कि तौबह करके उस पाप के धब्बे धो डालें और अल्लाह तआला से क्षमा की प्रार्थना करे। अल्लाह तआला अपनी दया से उसको क्षमा कर देंगे। और जितना नाख़ुश थे उससे भी अधिक ख़ुश हो जायँगे ।

एक हदीस में है कि :—

बन्दा जब पाप करने के बाद पछताकर फिर अल्लाह तआला की ओर लौटता है और सच्चे दिल से तौबह करता है तो अल्लाह तआला उस तौबह करने वाले से उस आदमी से भी बढ़कर ख़ुश होते हैं जिसकी सवारी का जानवर किसी लम्बे चौड़े रेगिस्तान में उससे छूटकर भाग जाय और उसी जानवर पर उसके खाने पानी का सारा सामान लदा हुआ हो और वह अपने भागे हुए जानवर से निराश होकर मौत की राह देखता हुआ किसी पेड़ के साए में लेट जाय फिर उसी दशा में वह अचानक देखे कि उसका वह जानवर पूरे सामान के साथ उसके सामने खड़ा है और वह उसको पकड़ ले और फिर बेहद ख़ुशी में उसकी ज़बान से निकल जाय कि हे अल्लाह बस तू मेरा बन्दा है और मैं तेरा रब हूँ यानी उस बन्दे को इतनी प्रसन्नता (ख़ुशी) हो कि उस की ज़बान बहेक जाय और जो बात कहना चाहे उसका उलटा निकल जाय। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि

जितनी ख़ुशी उसको अपनी सवारी का जानवर फिर से पाकर होगी उससे भी अधिक ख़ुशी अल्लाह तआला को अपने पापी बन्दे की तौबह से होती है।

इन आयतों और हदीसों की जानकारी हो जाने के बाद भी जो आदमी पापों से तौबह करके अल्लाह तआला को ख़ुश न करले और उसकी दया प्राप्त न करले वह बेशक बड़ा ही अभागा है।

बहुत से लोग इस विचार से तौबह में जल्दी नही करते कि अभी क्या है। अभी तो हमारी उम्र कुछ अधिक नहीं है। और अभी तो हम तन्दुरुस्त हैं। मरने से पहले कभी तौबह कर लेंगे। भाइयो यह शैतान का बहुत बड़ा धोखा है। वह जिस तरह ख़ुद अल्लाह की दया से दूर और नर्क में जाने वाला हो गया उसी प्रकार हमको भी अपने साथ रखना चाहता है। कोई नहीं जानता कि उसकी मौत कब आ पहुँचेगी इसलिये हर दिन के बारे में यही सोचना चाहिये कि हो सकता है कि आज ही का दिन हमारी ज़िन्दगी का आख़िरी दिन हो इसलिये जब कोई अपराध हो जाय तो बहुत जल्दी उससे तौबह कर लेना ही समझदारी की बात है।

पवित्र क़ुर्आन में साफ़ साफ़ फ़रमा दिया गया है कि :—

इन्नमत्तौबतु अलल्लाहि लिल्लज़ी	إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ
+न या+मलूनस्सू+अ+बि+	
जहा+लतिन+सुम्म+य तूबू+	السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ
न+मिन+क़रीबिन+फ़उलाइ+	
क+यतूबुल्लाहु + अलैहिम+ व	قَرِيبٍ فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ
कानल्लाहु अलीमन + हकीमा ।	وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۞ وَلَيْسَتِ
वलै+ सनित्तौ+बतु लिल्लज़ी+	
न + या + मलूनस्सयिआ तहत्ता	التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ
+ इज़ा + ह + ज़ + र +	
अ + ह + द + हुमुल मौतु	حَتَّىٰ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ

قَالَ اِنِّیْ تُبْتُ الْئٰنَ وَلَا الَّذِیْنَ
یَمُوْتُوْنَ وَهُمْ کُفَّارٌ ؕ اُولٰٓئِكَ
اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا ۔
(النّساء۔ ع ۔ ۳)

क़ा + ल + इन्नी + तुब + तुल + आ + नव + लल्लज़ी + न + यमूतू + न + वहुम कुफ़्फ़ार उलाइ + क + आ + तद्‌ना + लहुम अज़ाबन + अलीमा।

(अन्निसाअ। रुकू १३)

अर्थ यह है :—केवल उन लोगों की तौबह का क़बूल करना अल्लाह तआला ने अपने ऊपर लिया है जो मूर्खता से पाप कर बैठते हैं और फिर जल्दी ही तौबह कर लेते हैं तो उनको अल्लाह तआला क्षमा कर देते हैं और उनकी तौबह क़बूल कर लेते हैं और अल्लाह तआला जानकारी और समझ बूझ वाले हैं। और उन लोगों की कुछ तौबह नहीं जो ढिटाई से लगातार पाप के काम करते रहते हैं यहाँ तक कि उनमें किसी के सामने जब मौत आ खड़ी होती है तो वह कहते हैं कि अब मैंने तौबह की तो ऐसों की तौबह क़बूल नहीं और न उनकी तौबह क़बूल होगी जो कुफ़्र की दशा में मरते हैं। उन सबके लिये हमने दुख देने वाला दण्ड तैयार किया है।

जो साँस चलती है हम उसको ग़नीमत समझें और तौबह करके अपना सुधार करने में बिलकुल देर न करें। मालूम नहीं मौत किस समय आ पहुँचे और उस समय हमको तौबह की तौफ़ीक़ भी मिले या न मिले।

भाइयो हमने और आपने अपनी ज़िन्दगी में सैकड़ों को मरते देखा है और हमारा और आपका अनुभव (तजुरबाह) भी यही है कि जो जिस दशा में अपनी ज़िन्दगी बिताता है उसी दशा में उस

की मौत भी होती है। ऐसा नहीं होता कि एक आदमी अपने जन्म भर तो ख़ुदा को भूला रहे और उसकी आज्ञाओं को ठुकराता रहे लेकिन मरने से एक दो दिन पहले वह अचानक तौबह करके वली हो जाय। इसलिये जो आदमी चाहता है कि उसकी मौत ऐसी हो जैसी आज्ञा मानने वालों, सज्जनों और परहेज़गारों की होती है तो उसको चाहिये कि वह अपना जीवन भी ऐसा ही बिताए तो अल्लाह तआला की दया से आशा है कि उसकी मौत अवश्य अच्छी होगी और क़ियामत में अच्छों के साथ उसका हिसाब होगा।

तौबह के बारे में एक आवश्यक बातः—

बन्दा अगर किसी पाप से तौबह कर ले और फिर उससे वही पाप हो जाय तो भी अल्लाह की दया और क्षमा से कदापि (हरगिज़) निराश न हो बल्कि फिर तौबह कर ले और यदि फिर टूट जाय तो फिर कर ले। इसी तरह अगर उसकी तौबह सैकड़ों हज़ारों बार भी टूटे तो वह फिर तौबह कर ले और निराश न हो। जब भी वह सच्चे दिल से तौबह करेगा अल्लाह तआला का वादा है कि उसकी तौबह क़बूल कर लेंगे और उसको क्षमा करते रहेंगे। अल्लाह तआला की रहमत और जन्नत कोई छोटी चीज़ नहीं है।

तौबह व इस्तिग़फ़ार के शब्दः—

तौबह और इस्तिग़फ़ार के बारे में जोकुछ ऊपर बताया गया है उसी से आपने यह समझ लिया होगा कि बन्दा जिस भाषा में और जिन शब्दों में भी अल्लाह से तौबह करे और क्षमा की इच्छा करे अल्लाह तआला उसकी सुनने वाला और उसकी तौबह स्वी-

कार करने वाला है लेकिन रसूलुल्लाहि अलैहि व सल्लम ने अपने पवित्र सहाबा को (सतसंगियोंको) तौबह व इस्तिग़फ़ार के कुछ विशेष शब्दों की भी शिक्षा दी है और हुज़ूर उनको ख़ुद भी पढ़ा करते थे। बेशक वह शब्द बहुत बरकत वाले क़बूल हो जाने के काबिल और अल्लाह तआला को बहुत प्यारे हैं। उनमें से कुछ हम यहाँ भी लिखते हैं। आप इनको ज़बानी याद कर लीजिये और तौबह व इस्तिग़फ़ार करने के लिये इन्हीं को पढ़ा कीजिये।

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَأَتُوْبُ إِلَيْهِ

अस्तग़फ़रुल्लाहल्ज़ी ला + इला + ह + इल्ला हुवल + हैय्युल + कैय्यूम + व + अतूबु इलैह।

अर्थ यह है:—मैं क्षमा और मुक्ति (नजात) माँगता हूँ उस अल्लाह से जिसके अलावा कोई पूजे जाने के क़ाबिल नहीं है वह सदा जिन्दा रहने वाला और संसार को थामे रहने वाला है और मैं उसकी ओर झुककर तौबह करता हूँ।

एक पवित्र हदीस में है:—

जो आदमी अल्लाह से तौबह व इस्तिग़फ़ार इन शब्दों के साथ करेगा अल्लाह तआला उसके पाप क्षमा कर देगा चाहे उसने जिहाद यानी धार्मिक युद्ध से भागने का भी अपराध किया हो। जो अल्लाह तआला की नज़र में बहुत बड़ा पाप है।

एक और हदीस में है कि:—

जो मनुष्य रात को सोते समय इस वाक्य के द्वारा

(ज़रीए) तीन बार अल्लाह तआला से तौबह व इस्तिग़फ़ार करे तो अल्लाह तआला उसके सब पाप क्षमा कर देगा चाहे वह समुद्र के झाग के बराबर क्यों न हों।

(२)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कभी-कभी केवल अस्तग़फ़िरुल्लाह अस्तग़फ़िरुल्लाह भी पढ़ा करते थे जिसका अर्थ यह है कि मैं अल्लाह से माँगता हूँ। यह बहुत छोटा सा इस्तिग़फ़ार है। यह टेंव डाल लेनी चाहिये कि यह छोटा सा इस्तिग़फ़ार हर समय ज़बान पर जारी रहे।

सैय्यदुल + इस्तिग़फ़ार (सबसे अच्छा इस्तिग़फ़ार) :—

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى
عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا
صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْ لِيْ اِنَّهٗ
لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ

अल्लाहुम्म + अन + त + रब्बी + ला + इला + ह + इल्ला + अन + त + ख़ + लक़तनी व + अ + न + अब + दु + क + व + अ + न + अला + अह + दि + क + व + वादि + क + मस्ततातु + अऊज़ु + बि + क + मिन + शर्रि + मा + सनातु + अबूउ + ल + क + बिज़म्बी + फ़ग़ + फ़िर + ली + इन्नाहू + ला + यग़ + मति + क + अलय्य + व + अबूउ + फ़िरुज्ज़नू + ब + इल्ला + अन + त

अर्थ यह है :—हे अल्लाह तू मेरा पालनहार है। तेरे अलावा

कोई पूजे जाने के योग्य नहीं। तूने मुझे पैदा किया है और मैं तेरा बन्दा हूँ और जहाँ तक मुझ से हो सका मैं तेरे वादे और इक़रार पर जमा हुआ हूँ। मैंने जो बुरे काम किये हैं उनकी बुराई से तेरी शरण यानी पनाह में आता हूँ मैं अपने ऊपर तेरी नेमतों का इक़रार करता हूँ और पापों का भी अँगीकार हूँ! इसलिये तू मुझे क्षमा कर दे। पापों का क्षमा करने वाला तेरे अलावा कोई नहीं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:—

जो बन्दा इन शब्दों के साथ इनके अर्थ को ध्यान में रख कर और इन पर यक़ीन करते हुए दिन के समय में अल्लाह तआला से क्षमा माँगे और उस दिनमें वह रात होने से पहले मर जाय तो वह जन्नत ही में जायगा और जो बन्दह इसी तरह इन शब्दो के अर्थ को ध्यान में रख कर यक़ीन के साथ रात में इन शब्दों के साथ अल्लाह तआला से अपने पापों की क्षमा माँगे और सवेरा होने से पहले उसी रात में मर जाय तो वह जन्नत में जायगा। यहाँ इस्तिग़फ़ार के केवल तीन वाक्यों को लिखा गया है जिनको ज़बानी याद कर लेना कुछ भी कठिन नहीं है।

पवित्र हदीस में है कि :—

बशारत हो यानी शुभ समाचार हो और बधाई हो उस आदमी को जिसके आमालनामे में इस्तिग़फ़ार बहुत लिखे हुए हैं।

—:o:—

आख़िरी बात

अल्लाह तआला की ख़ुशी और जन्नत प्राप्त करने का कार्यक्रम

इस छोटी सी पुस्तक के बीस पाठों में जो कुछ आ गया है उसके अनुसार (मुवाफ़िक़) जीवन बिताना अल्लाह तआला को ख़ुशी और जन्नत प्राप्त करने के लिये इन्शा अल्लाह बिल्कुल काफ़ी है। ठीक जान पड़ता है कि आख़िर में कुछ सतरों में उसका निचोड़ सामने रख दिया जाय।

इस्लाम को सबसे पहली शिक्षा और अल्लाह तआला की ख़ुशी और ज़न्नत प्राप्त होने की सबसे पहली शर्त यह है कि कलिमए "ला+इ ला+ह+इल्लल्लाहु+मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि" पर आदमी ईमान लाए जिसका बयान पहले पाठ में किया जा चुका है। फिर जितनी आवश्यकता हो दीन की आज्ञाएं जानने की कोशिश करे फिर यह कोशिश करे कि अल्लाह तआला के अनिवार्य आदेश, बन्दों के हक़ और अपने व्यवहार व स्वभाव के बारे में इस्लाम की जो शिक्षाएँ यानी अल्लाह तआला के जो आदेश हैं उन पर चले जिनका बयान पिछले पाठों में किया जा चुका है। और जब कभी कोई आज्ञा टूट जाय यानी कोई पाप हो जाय तो सच्चे दिल से अल्लाह तआला से तौबह करे और क्षमा माँगे और आगे के लिये अपने सुधार की कोशिश करे और अगर किसी बन्दे

के साथ कोई अपराध हो जाय जैसे उसका कोई हक़ मार लिया या उस पर अत्याचार किया तो उसका बदला दे या उससे क्षमा माँगे और यह बोझ अपने ऊपर क़ियामत के दिन के लिये लदा हुआ न छोड़े।

इसी तरह कोशिश करे कि हर चीज से अधिक प्रेम अल्लाह तआला के साथ हो, उनके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हो और उनके दीन के साथ हो। और कैसी ही दशा हो दीन पर जमा रहे। इसी के साथ अल्लाह के बन्दों को दीन की ओर बुलाने में और दीन की सेवा करने में अवश्य भाग ले। यह काम पैग़म्बरों का काम और पैग़म्बरों की दौलत है और विशेष कर इस ज़माने में इस काम का सवाब दूसरे सवाब के कामों से बहुत अधिक है और दूसरों को लाभ पहुँचने के साथ ख़ुद अपना लगाव दीन के साथ बढ़ता है और अल्लाह तआला के साथ प्रेम पैदा हो जाता है जो बहुत बड़ी दौलत है।

सवाब के कामों में तहज्जुद की नमाज़ का विशेष ऊँचा स्थान है। तहज्जुद की नमाज़ का समय आधी रात बीतने पर आता है और पौ फटने से पहले-पहले तक रहता है। तहज्जुद की नमाज़ चाहे दो ही रकअत पढ़ ले चाहे चार, छ, आठ, दस या बारह रकअतें पढ़ें। इसके पढ़ने का कोई विशेष नियम अलग से नहीं है। जहां तक हो सके तहज्जुद की नमाज़ की आदत अवश्य डालना चाहिये। तहज्जुद की बरकतें इतनी हैं कि गिनी नहीं जा सकती।

सभी प्रकार के पापों से और विशेष कर "कबीरह" गुनाहों यानी बड़े-बड़े पापों से बचता रहे जैसे ज़िना यानी बदकारी, चोरी, झूठ, शराब पीना, व्यवहार में बेईमानी करना आदि।

हर दिन का कुछ जाप भी बाँध ले। अगर अधिक समय न मिलता हो तो सवेरे और शामको सौ-सौबार कलिमए तमजीद ही पढ़ लिया करे यानी "सुब+हा + नल्लाहि + वल+ हम्दु लिल्लाहि वला+ इला +ह + इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर या केवल सौ-सौ सौ बार सुब + हा+नल्लाहि व बिहम्दि ही सुबहा नल्लाहिल अज़ीम ही पढ़ लिया करे। और इस्तिग़फ़ार[1] और दुरुद शरीफ़[2] भी सौ-सौ बार पढ़ लिया करे। पवित्र क़ुर्आन का कुछ पाठ भी चाहे थोड़ा ही हो प्रति दिन कर लिया करे लेकिन पूरे अदब के साथ और अल्लाह तआला की बड़ाई के ध्यान के साथ पाठ करे। हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद और सोते समय तस्बीहे फ़ातिमह[3] पढ़ा करे।

जो लोग इससे अधिक करना चाहें वह अल्लाह तआला के किसी ऐसे भक्त से सुझाव प्राप्त करें जो इस योग्य हो। इस बारे में आख़िरी बात यह है कि अल्लाह तआला के **"सालेह"** यानी परहेज़गार बन्दों से सम्बन्ध, उनसे प्रेम और उनका सत संग इस राह में पारस है अगर यह दौलत मिल जाय तो शेष बातें अपने आप पैदा होती और बढ़ती रहती हैं। अल्लाह तआला सहायता करें और शक्ति दें। आमीन।

---

१. इस्तिग़फ़ार यह है :—अस्तग़फ़िरुल्ला + हल्लज़ी + ला + इला + ह + इल्ला + हुवल + हैय्युल कैय्यूमु + व + अतूबु इलैह। या केवल अस्तग़फ़िरुल्लाह।

२. दूरूद शरीफ़ यह है :—अल्लाहुम्म + सल्लि अला सैय्यिदिना मुहम्मदिनिन्नबीयिल उम्मी व आलि ही।

३. तस्बीहे फ़ातिमह यह है — सुब्हानल्लाह ३३ बार। अल्हम्दु-लिल्लाह ३३ बार। अल्लाहु अक्बर ३४ बार।

साथ पर्वाने का कर ले, ताकि जलना सीख ले।
जलने वालों के सहित, सम्भव है ख़ुद भी जल उठे ।।

—:o:—

हर रोज़ जाप करने योग्य

पवित्र क़ुर्आन और हदीस के चालीस मंत्र।

यह वही चालीस प्रार्थनाएँ हैं जिनकी ओर अट्ठारहवें पाठ के आख़िर में सँकेत (इशारह) किया जा चुका है।

(१) बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। بسم الله الرحمن الرحيم

आरम्भ (शुरू) अल्लाह के नाम से जो बहुत ही मेहरबान और बार-बार दया करने वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ
نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ
اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝ آمين!

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ+लमीन। अर्रहमानिर्रहीम। मालिकि यौमिद्दीन। ईया+क+नाबुदु+वईया+क+नस+तईन। इहदि नस्सिरातल+मुस्तक़ीम।

सिरातल्लज़ी + न + अन + अम + त + अलैहिम । ग़ैरिल + मग़ + ज़ूबि + अलैहिम + व + लज़्ज़ाल्लीन । आमीन ।

अर्थ यह है :—सारी प्रशंसा (तारीफ़) अल्लाह के लिये है। वह सारे संसार का पालन पोषन करने वाला है। वह बड़ा दयालु बार-बार दया करनेवाला है। बदले के दिन का मालिक है। हम तेरी ही पूजा करते हैं और बस तुझी से सहायता चाहते हैं। चला हमको सीधा रास्ता। उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने पारितोषिक (इनआम) उतारा है। न उन लोगों का रास्ता जिन पर तेरा क्रोध (ग़ुस्सा) हो चुका है और न भटके हुवों का। हमारी यह प्रार्थना स्वीकार (क़बूल) हो ।

رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(२) रब्बना आतिना फ़िद्दुनया ह + स + नतौं + वफ़िल + आख़ि + रति ह + स + न + तौं + वक़िना + अज़ाबन्नार ।

अर्थ यह है :—हे हमारे पालनहार ! हमको दुनिया में भी भलाई दीजिये। और परलोक (आख़िरत) में भी भलाई दीजिए और आग यानी नर्क (दोज़ख़) के दण्ड से हम को बचाइये।

رَبَّنَا اِنَّنَا اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(३) रब्बना इन्नना आमन्ना फ़ग़फ़िर लना ज़ुनू + बना + वक़िना + अज़ाबन्नार ।

अर्थ यह है :—हे हमारे पालनहार ! हम ईमान लाए। इसलिये हमारे सारे पाप क्षमा कर दीजिये और आग यानी दोज़ख़ के दण्ड से हम को बचाइये।

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا

عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

रब्बनग़ + फ़िर + लना + ज़ुनू + बना वइस्रा + फ़ना फ़ी अम + रिना व + सब्बित + अक़ + दा + मना + वन + सुरना + अलल + क़ौमिल + काफ़िरीन।

अर्थ यह है :—हे हमारे पालनहार ! हमारे पाप क्षमा कर दीजिये और हमसे हमारे कामों में जो त्रुटियाँ (कोताहियाँ) और भ्रमपूर्ण बातें (ज़ियादतियाँ और ग़लतियाँ) हो गईं उनको क्षमा कर दीजिये। और हमारे पग जमा दीजिये और कुफ़्र करने वालों के मुक़ाबिले में हमारी सहायता कीजिये।

رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا

فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ۝ رَبَّنَا وَاٰتِنَا

مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۝ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝

(५) रब्बना + इन्नना + समीना + मुनादियैंय्युनादी लिल ईमानि अंन आमिनू बिरब्बिनकुम फ़आमन्ना। रब्बना फ़ग़ + फ़िर्लना + ज़ुनू + बना व + कफ्फ़िर अन्ना + सय्यिआतिना + व + त + वफ़्फ़ना + मअल + अबरार। रब्बना + व आतिना मा + व अत्तना + अला + रुसुल्लि + क + वला + तुख़ + ज़िना यौमल + क़ियामह + इन्न + क — ला + तुख़ लिफ़ल + मीआद।

अर्थ यह है :—हे हमारे पालनहार हमने एक पुकारने वाले की पुकार सुनी पुकारते हुए ईमान के लिये कि लोगों अपने पालनहार

पर ईमान लाओ तो हम ईमान ले आए इसलिये हे हमारे पालनहार हमारे पाप क्षमा कर दीजिये और हमारी बुराइयाँ मिटा दीजिये और अपने सच्चे भक्तों के साथ हमारा देहान्त कीजिये हे पालनहार ! हमको वह सब कुछ दीजिये जिसका अपने रसूलों की ज़बानी तूने हमसे वादा किया है और क़ियामत के दिन हमको अपमानित (बे आबरू) न कीजिये। आपका वादा ग़लत नहीं होता।

رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝

रब्बना + ज़ + लमना + अन्फ़ु + सना वइल्लम तग़फ़िर + लना + व तहम + ना + ल + नकूनन्न + मिनल ख़ासिरीन।

अर्थ यह है :—हे हमारे पालनहार ! तेरी आज्ञाएँ तोड़कर हमने अपने ही ऊपर बड़ा अत्याचार किया है और अगर तूने हमको क्षमा न किया तो हम असफल (नामुराद) और नष्ट (बरबाद) ही हो जायँगे।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ

مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

(६) रब्बना + ला + तज + अलना + फ़ित + नतल लिल + क़ौमिज्ज़ालिमीन। व + नज्जिना बिरह + मति + क + मिनल + क़ौमिल काफ़िरीन।

अर्थ यह है :—हे हमारे पालनहार ! आप हमको अत्याचारी जाति के अत्याचार और अन्याय का अभ्यास पाट (तख़्तए मश्क़) न बनाइये और अपनी दया की भिक्षा (भीख) समझकर हमको काफ़िरों की जाति के अत्याचार से छुड़ा लीजिये।

فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ قف اَنْتَ وَلِيّٖ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ تَوَفَّنِیْ
مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِيْنَ ٥

(८) फ़ातिरस्समावाति वल + अर्ज़। अन + त + वलीयी फ़िद् नया वल आख़िरति। त + वफ़्फ़नी मुस + लिमों वअलहिक़ + नी + बिस्सालिहीन।

अर्थ यह है :—हे पृथ्वी और आकाश के रचने वाले ! दुनिया और परलोक (आख़िरत) में केवल आप ही मेरे मालिक हैं। इस्लाम पर मेरा अन्त (ख़ातिमह + देहान्त) कीजिये और अपने सच्चे भक्तों में मुझे मिला लीजिये।

رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِیْ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ٥ رَبَّنَا
اغْفِرْ لِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ٥

(९) रब्बिज अल्नी मुक़ी मस्सलाति वमिन ज़ुर्रीयती + रब्बना + व + त ÷ क़ब्बल दुआइ। रब्बनग़ + फ़िर्ली वलि वालिदय्य + वलिल मूमिनी + न + यौ + म + यक़ूमुल हिसाब।

अर्थ यह है :—हे मेरे पालनहार ! मुझको और मेरी सन्तान (औलाद) को नमाज़ का रोपने वाला बना दीजिये। हे पालनहार ! मेरी प्रार्थना को स्वीकार (क़बूल) कर लीजिये। हे पालनहार ! मुझको और मेरे माता-पिता को और सब ईमानवालों को क्षमा कर दीजिये जिस दिन कि हिसाब किताब हो।

(१०) रब्बिर्हम्हुमा कमा रब्बयानी सग़ीरी

رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِیْ صَغِيْرًا ٥

अर्थ यह है :—हे मेरे पालनहार ! मेरे माता-पिता पर दया कीजिये जैसा कि उन्होंने मुझे प्यार से पाला जबकि मैं नन्हा सा था।

(११) रब्बि ज़िद+नी+इल+मा। رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا

अर्थ यह है :—हे मेरे पालनहार ! मेरे ज्ञान में बृद्धि (ज़ियादती) और बरकत प्रदान कीजिये।

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ

(१२) रब्बिग़ + फ़िर + वर्हम + व + अन + त + ख़ैरुर्राहि-मीन।

अर्थ यह है :—हे मेरे पालनहार क्षमा प्रदान कीजिये और दया कीजिये। आप सब से अच्छे दया करने वाले हैं।

رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَى وَالِدَيَّ وَأَنْ

أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ

(१३) रब्बि + औज़ीनी + अन + अश + कु + र + नी + म + त + कल्लती + अन + अम + त + अलय्य + व अला + वालिदय्य व + अन + आ + म + ल + सालि + हन + तर्ज़ाहु + व + अस + लिह + ली + फ़ी ज़ुर्री + यती + इन्नी + तुब्तु + इलै + क + वइन्नी + मिनल + मुस + लिमीन।

अर्थ यह है :—हे पालनहार ! आपने मुझको और मेरे माता

पिता को जो नेमतें प्रदान कीं मुझे ऐसा भाग्यवान बनाइये कि मैं उनके लिये आपका कृतज्ञ (शुक्रगुज़ार) होकर आपको धन्यवाद दूँ और ऐसे काम करूँ जिन से आप ख़ुश हों और मेरे लिये मेरी सन्तान (औलाद) में भी योग्यता (लियाक़त) और नेकी दीजिये। मैंने आपके सामने तौबह की और मैं आपके आज्ञाकारों में हूँ।

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا

غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَا اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ

(१४) रब्बनग़ + फ़िर + लना + वलि + इख़ + वानिनल्लज़ी + न + स + ब + क़ूना + बिल + ईमानि + वला + तज + अल फ़ी + क़ुलू बिना + ग़िल्लल्लिलल्लज़ी + न आ + मनू + रब्बना + इन्न + क + रऊफ़ुर + रहीम।

अर्थ यह है :—हे हमारे पालनहार! हमको क्षमा प्रदान कीजिये और हमारे उन भाइयों को भी जो ईमान के साथ हम से आगे जा चुके और ईमान वालों के साथ दिलमैली से हमारे दिलों को साफ़ रखिये। हे हमारे पालनहार आप बड़े दयालु और बार-बार दया करने वाले हैं।

رَبَّنَا اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

(१५) रब्बना + अत्मिम + लना नू + रना + वग़ + फ़िर + लना + इन्न + क + अला कुल्लि + शैइन + क़दीर।

अर्थ यह है :—हे हमारे पालनहार! हमारे लिये हमारी रौशनी

को पूरा कर दीजिये। और हमको क्षमा प्रदान कीजिये। आप हर तरह की ताक़त रखने वाले हैं।

يَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِیْثُ اَصْلِحْ لِیْ شَانِیْ كُلَّهٗ

(१६) या हय्यु या क़य्यूम। बि+रह+मति+क+अस्त-ग़ीसु असलिह ली शानी कुल्लह।

अर्थ यह है.—हे सदा जीवित रहने वाले और हे सब संसारों के थामने वाले! आपकी दया के द्वार पर मेरी बिनती है। आप मेरी सब दशाएँ सुधार दीजिये।

اَللّٰهُمَّ اَصْلِحْ لِیْ دِیْنِیَ الَّذِیْ هُوَ عِصْمَةُ اَمْرِیْ وَاَصْلِحْ لِیْ دُنْیَایَ الَّتِیْ فِیْهَا مَعَاشِیْ وَاَصْلِحْ لِیْ اٰخِرَتِیَ الَّتِیْ فِیْهَا مَعَادِیْ وَاجْعَلِ الْحَیٰوةَ زِیَادَةً لِیْ فِیْ كُلِّ خَیْرٍ وَّاجْعَلِ الْمَوْتَ رَاحَةً لِیْ مِنْ كُلِّ شَرٍّ

(१६) अल्लाहुम्म अस्लिह ली दीनियल्लज़ी हु+व+इस्मतु अमरी व + अस्लिह + ली + दुन्या + यल्लती फ़ीहा मआशी + व अस्लिह ली आख़ि + रतियल्लती फ़ीहा + मआदी + वज + अलिल + हया + त + ज़िया + द + तल्ली + फ़ी कुल्लि + ख़ैरिवँ + वज + अलिल + मौ + त + रा + ह + तल्ली मिन कुल्लि + शर्र।

अर्थ यह है:—हे अल्लाह! मेरे दीन का सुधार कीजिये जिससे मेरा सब कुछ है। और मेरी दुनया का सुधार कर दीजिये जिसमें मेरी ज़िन्दगी का प्रबन्ध है। और मेरा परलोक

(आख़िरत) संवार दीजिये जहाँ मुझे लौटकर जाना है और जहाँ मुझे सदा रहना है और हर भलाई में बढ़ती का कारण मेरी ज़िन्दगी को बना दीजिये और मेरी मौत को हर बुराई से बच जाने का साधन (ज़रीआ) बना दीजिये।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۝

(१८) अल्लाहुम्म इन्नी अस+अलुकल+अफ़+व वल आफ़ि+य+त+फ़िद्दुनया वल+आख़िरह।

अर्थ यह है:—हे अल्लाह मैं आप से पापों की क्षमा माँगता हूँ और दुनिया और परलोक में शान्ति (आफ़ियत) माँगता हूँ।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْهُدٰى وَالتُّقٰى وَالْعَفَافَ وَالْغِنٰى ۝

(१९) अल्लाहुम्म इन्नी अस+अलु+क+रिज़क़न तय्यिबौं व+इल्मन्नाफ़िऔं+व+अ+म+लम मु+त+क़ब्बला।

अर्थ यह है:—हे अल्लाह मैं आप से पवित्र जीविका (रोज़ी) और लाभदायक विद्या और स्वीकार किये हुए काम मांगता हूँ।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ رِزْقًا طَيِّبًا وَّعِلْمًا نَافِعًا وَّعَمَلًا مُّتَقَبَّلًا ۝

(२०) अल्लाहुम्म इन्नी अस+अलुकल+हुदा वत्तुक़ा वल+अफा+फ़+वल+ग़िना।

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह मैं आप से माँगता हूँ हिदायत (सीधी राह पर चलना) और परहेज़गारी और गन्दी बातों से बचाव और मालदारी।

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لَنَا اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ وَسَهِّلْ لَنَا اَبْوَابَ رِزْقِكَ ۝

(२०) अल्लाहुम्मफ़ + तह + लना + अब्वा + ब + रह + मति + क + व + सह + हिल्लना + अबवा + ब + रिज़्क़िक।

अर्थ यह है :—हे हमारे अल्लाह ! हमारे लिये अपनी दया के द्वार खोल दीजिये और हमारी जीविका के रास्ते हमारे लिये सहज कर दीजिये।

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِىْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ ۝

(२२) अल्लाहुम्मक + फ़िनी + बि + हलालि क + अन + हरामि + क + व + अग़निनी बिफ़ज़्लि + क + अम्मन + सिवाक।

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह ! अपनी पवित्र चीज़ों से मेरी आवश्यकताएँ पूरी कर दीजिये और गन्दी अपवित्र चीज़ों से मुझको बचा लीजिये और अपने अलावा मुझको हर एक से मांगने वाला न बनाइये।

اَللّٰهُمَّ وَفِّقْنِىْ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى وَاجْعَلْ اٰخِرَتِىْ خَيْرًا مِّنَ الْاُوْلٰى ۝

(२३) अल्लाहुम + वफ़्फ़िक़नी लिमा तुहिब्बु व तर्ज़ा वज + अल + आख़ि + रती ख़ैरम्मिनलऊला।

अर्थ यह है:—हे मेरे अल्लाह मुझको उन बातों की ताक़त दीजिये जो आपको प्यारी और पसन्द हैं और परलोक (आख़िरत) को मेरे लिये दुनिया से अच्छा बना दीजिये।

اَللّٰهُمَّ اَلْهِمْنِىْ رُشْدِىْ وَقِنِىْ شَرَّ نَفْسِىْ ○

(२४) अल्लाहुम्म + अल + हिम्नी रुश्दी वक़िनी शर्र नफ़्सी।

अर्थ यह है:—हे मेरे अल्लाह भलाई और पवित्र ज़िन्दगी की बातें मेरे दिल में डाल दीजिये और मन की बुराई से मुझे बचा लीजिये।

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّىْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ ○

(२५) अल्लाहुम्म + अइन्नी + अला + ज़िक्रि + क + व + शुक्रि + क + व + हुस्नि + इबादति + क।

अर्थ यह है:—हे मेरे अल्लाह अपनी याद, अपने जाप, अपने शुक्र और अपनी अच्छी पूजा करने में मेरी सहायता कीजिये।

يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِىْ عَلٰى دِيْنِكَ ○

(२६) या + मुक़ल्लिबल क़ुलूबि सब्बित क़ल्बी अला दीनि + क।

अर्थ यह है:—हे दिलों के फेरने वाले मेरे दिल को अपने दीन पर मज़बूती से जमाए रखिये।

اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِىْ مُسْلِمًا وَّاَمِتْنِىْ مُسْلِمًا ○

(२७) अल्लाहुम्म + अह + यिनी + मुस लिमौं + व + अमितनी + मुस + लिमा।

अर्थ यह है:—हे अल्लाह मुझे मुसलमान रखकर ज़िन्दह रखिये और मुसलमान रखकर मौत दीजिये।

اللهم إنى أسئلك حبك و حب من يحبك و حب عمل يقرب على حبك ، اللهم اجعل حبك أحب إلى من نفسى و من أهلى و من الماء البارد.

(२८) अल्लाहुम्म + इन्नी + अस + अलु + क हुब्ब + क + व + हुब्ब + मैंयुहिब्बु + क + व + हुब्ब + अ + म + लीं युक़र्रिबु + अला + हुब्बि + क। अल्लाहुम्मजअल + हुब्ब + क अ + हब्ब + इलै + य + मिन्नफ़ + सी + व + मिन + अह + ली + व + व + मिनल माइल + बारिद।

अर्थ यह है:—हे मेरे अल्लाह मैं आप से आपका प्रेम माँगता हूँ यानी मुझको आप से प्रेम हो जाय और आप से आपके उन बन्दों का प्रेम माँगता हूँ जो आप से प्रेम करते हैं और उन कामों का प्रेम माँगता हूँ जो काम मुझको आप से क़रीब कर दें। हे मेरे अल्लाह अपने प्रेम को मेरे लिये मेरी जान से, मेरे बाल बच्चों से और ठंड पानी से अधिक प्यारा बना दीजिये।

(२९) अल्लाहुम्म + गश्शिनी बिरह + मति + क व + जन्निबनी अज़ा + ब + क।

اَللّٰهُمَّ غَشِّنِیْ بِرَحْمَتِكَ وَجَنِّبْنِیْ عَذَابَكَ

अर्थ यह है:—हे अल्लाह मुझ को अपनी दया से ढक लीजिये और अपने दण्ड से बचाए रखिये।

(३०) अल्लाहुम्म + सब्बित + क़ + द + मय्य + यौ + म + तज़िल्लु + फ़ीहिल + अक़दाम।

اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْ قَدَمَیَّ یَوْمَ تَزِلُّ فِیْهِ الْاَقْدَامُ

अर्थ यह है :— हे मेरे अल्लाह जिस दिन लोगों के क़दम (पाँव) डिगने लगें उस दिन आप मेरे पाँव जमाए रखियेगा।

(३१) अल्लाहुम्म हासिब+नी+हिसाबय्यसीरा

اَللّٰهُمَّ حَاسِبْنِىْ حِسَابًا يَّسِيْرًا

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह मेरा हिसाब सहज लीजियेगा।

(३२) रब्बिग़+फ़िर्ली+ख़ती अती+यौमद्दीन।

رَبِّ اغْفِرْ لِىْ خَطِيْئَتِىْ يَوْمَ الدِّيْنِ

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह बदले के दिन मेरे पाप क्षमा कर दीजियेगा।

(३३) अल्लाहुम्म+क़िनी+अज़ा+ब+क यौ+म+तब+असु+इबा+द+क।

اَللّٰهُمَّ قِنِىْ عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह जिस दिन आप अपने बन्दों को उठाइये उस दिन मुझ को अपने दण्ड से बचा लीजिये।

اَللّٰهُمَّ اِنَّ مَغْفِرَتَكَ اَوْسَعُ مِنْ ذُنُوْبِىْ وَرَحْمَتُكَ اَرْجٰى عِنْدِىْ مِنْ عَمَلِىْ

(३४) अल्लाहुम्म+इन्न+मग़+फ़ि+र+ति+क+औ+स+उ+मिन+ज़ुनूबी व+रह+म+त+क+अर्जा+इन्दी +मिन अ+म+ली

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह आप की क्षमा मेरे पापों से बहुत बिशाल (बड़ी) है और आप की दया का सहारा मुझे अपने कर्मों (कामों) से अधिक है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ رِضَاكَ وَالْجَنَّةَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ غَضَبِكَ وَالنَّارِ ۝

(३५) अल्लाहुम्म + इन्नी + अस + अलु + क + रिज़ा + क वल + जन्न + त + व + नऊज़ु + बि + क + मिन + ग़ + ज़ + बि + क + वन्नार ।

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह मैं आप से आप की ख़ुशी और जन्नत माँगता हूँ और आप के ग़ुस्से और नर्क (दोज़ख़) से आप की शरण (पनाह) में आता हूँ ।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَاَعُوْذُ

بِكَ مِنْكَ لَا اُحْصِیْ ثَنَاءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰی نَفْسِكَ ۝

(३६) अल्लाहुम्म + इन्नी + अऊज़ु + बिरिज़ा + क + मिन + स + ख़ + ति + क + वबिमुआफ़ाति + क + मिन + उक़ू + बति + क + वअऊज़ुबि + क + मिन + क + लाउह + सी + सनाअन + अलै + क + अन + त + कमा + अस + नै + त + अला + नफ़सिक ।

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह मैं आप की नाख़ुशी से आप की ख़ुशी की शरण (पनाह) लेता हूँ और आप के दण्ड से आप की क्षमा की शरण (पनाह) में आता हूँ और आप की पकड़ से आप ही की शरण में आता हूँ । मैं आप की प्रशँसा (तारीफ़) बयान करने की ताक़त नहीं रखता । आप वैसे हैं जैसा आप ने ख़ुद अपने बारे में प्रशँसा की है ।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَتُبْ عَلَیَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝

(३७) अल्लाहुम्मग़+फ़िर्ली+ वर्हम्नी वतुब+ अलय्य + इन्न+क+अन तत्तौवाबुर्रहीम।

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह मुझे क्षमा कर दीजिये। मुझ पर दया कीजिये। मुझ पर कृपा कीजिये। आप बड़े ही कृपा करने वाले और बार-बार दया करने वाले हैं।

(३८) अल्लाहुम्म + अन+त+रब्बीला इला+ह+इल्ला + अन+त+ख़+लक़+ तनी+ व अ+न+अब्दु+क+व+अ+न +अला+अह+दि+क+व + वादि+क+मस्ततातु+अऊज़ु बि क+ मिनशर्रि+ मा+ सनातु+ अबू उ+ल+क+बिनी मति+क +अय्य+व+अबू उ बिज़म्बी+ फ़ग़ + फ़िर्ली+इन्नहू + ला+ यग़ + फ़िरुज़्ज़ु+ ब+इल्ला+ अन+त।

اللهم أنت ربى لا إله إلا
أنت خلقتنى و أنا عبدك وأنا
على عهدك و وعدك ما
استطعت أعوذبك من شر ما
صنعت أبوء لك بنعمتك على
و أبوء . بذنبى فاغفرلى إنه
لا يغفر الذنوب إلا أنت

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह ! आप ही मेरे पालनहार हैं। आप के अलावा कोई पूज्य (पूजा के क़ाबिल) नहीं। आप ही ने मुझ को पैदा किया। मैं आप ही का बन्दा हूँ और जहाँ तक मुझसे बन पड़ा आपके साथ किये गये वादे और इक़रार पर मैं जमा रहा। मैं अपनी बुरी करतूतों से आपकी शरण (पनाह) में आता हूँ और मैं मानता हूँ आपकी नेमतों को और अँगीकार हूँ अपने पापों का। हे मेरे अल्लाह ! मेरे पाप क्षमा कर दीजिये। पापों का क्षमा करने वाला आप के सिवा कोई नही।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ سَمْعِیْ وَمِنْ شَرِّ بَصَرِیْ وَمِنْ شَرِّ لِسَانِیْ وَ
مِنْ شَرِّ قَلْبِیْ وَمِنْ شَرِّ مَنِیِّیْ ـــــ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ
عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَسِیْحِ الدَّجَّالِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْیَا
وَالْمَمَاتِ ۝

(३६) अल्लाहुम्म + इन्नी + अऊज़ु + बि + क + मिन + शर्रि + सम + ई + वमिन। शर्रि + ब + सरी + वमिन + शर्रि लिसानी वमिन शर्रि क़ल्बी वमिन शर्रि मनीयी व अऊज़ुबि + क मिन + अज़ाबि ज + हन्न + म + बमिन + अज़ाबिल क़ब्रि वमिन + फ़ित + नतिल + मसी हिद्दज्जालि व अऊज़ु + बि + क + मिन + फित + नतिल + मह + या + वल + म + मात।

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह ! मैं आप की शरण (पनाह) में आता हूँ अपने कानों की बुराई से, अपनी आँखों की बुराई से, अपनी ज़बान की बुराई से, अपने दिल की बुराई से और अपनी कामुकता (शहवत) की बुराई से। और मैं आपकी शरण चाहता हूँ नर्क के दण्ड से और क़ब्र के दण्ड से और दज्जाल के उपद्रव से और आप की शरण लेता हूँ ज़िन्दगी और मौत की बुराई से।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَیْرِ مَا سَأَلَكَ مِنْهُ نَبِیُّكَ مُحَمَّدٌ (صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ)
وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَ مِنْهُ نَبِیُّكَ مُحَمَّدٌ (صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ)۔

(४०) अल्लाहुम्म इन्नी असअलु + क + मिन ख़ैरि मा + स अ + ल + क + मिन्हु नबी यु + क मुहम्मदुन + सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम वअऊज़ु बि+क+मिन+ शर्रि मस्तआ + ज़ मिन्हु नबीयु+क+मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अलैहि+व+सल्लम।

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह म आप से वह सब भलाइयाँ माँगता हूँ जो आप से आप के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मागों और मैं उन बुराइयों से आप की शरण माँगता हूँ जिन से आप के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शरण मागी ।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ
اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ اَنْزِلْهُ
الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَاَبْلِغْهُ الْوَسِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ
وَابْعَثْهُ مُقَامًا مَّحْمُوْدًا الَّذِىْ وَعَدْتَهٗ وَارْزُقْنَا شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ

(४१) अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिँव व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै+त अला+इब+ राही +म + वअला आलि इब्राही+म+इन्न+क+हमीदुम्मजीद ।

अल्लाहुम्म+बारिक अला मुहम्मदिँव वअला आलि मुहम्मदिन कमा बारक्त अला इब्राही+म+व+अला आ`ल इब्राहीम इन्न+क+हमीदुम्मजीद। अल्लाहुम्म+अन्ज़िल हुल+मक़अ+ दल+मुकर्र+ब+इन+द+क+यौमल+क़ियामति व+ अब+लिग़+हुल+वसी+ल+त+वह :-र+ ज+त वब +

अस्हु मुक़ामम्महमू + दनिल्लज़ी व अत्तहू वर्ज़ुक्ना + शफ़ा + अ + तहू यौ मल क़ियामति । इन्न + क + ला तुख़लिफ़ुल मीआद ।

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह ! हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उनकी सन्तान (औलाद) पर रहमत उतारिये जिस तरह आपने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर और उनकी सन्तान औलाद) पर रहमत उतारी आप प्रशंसा वाले और बड़ाई वाले हैं हे मेरे अल्लाह ! हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उनकी औलाद पर बरकतें उतारिये जिस तरह आपने हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम पर और पुत्र की औलाद पर बर्कतें उतारीं । आप प्रशंसा वाले और बड़ाई वाले हैं । हे मेरे अल्लाह क़ियामत के दिन अपने पास विशेष निकट स्थान में उनका सत्कार कीजिये और उनको "वसीलह" और "दरजह" नामक उच्च पदों पर पहुँचाइये और उनको "महमूद" नामक स्थान दीजिये जिस का आप ने उनके लिये वादा किया है । और हम को क़ियामत के दिन उनकी "शिफ़ाअत" प्रदान कीजिये । आप का वादा कभी नहीं टलता ।

—:o:—

विशेष अवसरों की विशेष प्रार्थनाएँ ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बहुत सी प्रार्थनाएँ विशेष समयों और विशेष अवसरों के लिये भी सिखाई हैं उनमें से जो सरल और हर रोज़ की हैं यहाँ लिखी जाती हैं। अल्लाह तआला ताक़त और हिम्मत दें तो इन को ज़बानी याद कर लेना चाहिये और उचित समय पर पढ़ने की आदत डाल लेना चाहिये ।

(१) जब भोर हो तो कहे :—

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ اَمْسَيْنَا وَبِكَ نَحْيٰى وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ

अल्लाहुम्म + बि + क + अस्बह + ना + वबि + क + अम्सैना वबि + क + नह + या + वबि + क + नमतु + वइलैकल्मसीर ।

अर्थ यह है :—हे हमारे अल्लाह। आप की आज्ञा से हमने भोर किया और आप की आज्ञा से हमने साँझ की और हम आप की आज्ञा से ज़िन्दा हैं और आप की आज्ञा से हमको मौत आएगी और फिर आप ही की ओर लौटकर जाना है।

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَمْسَيْنَا وَبِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ نَحْيٰى وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ النُّشُوْرُ

अल्लाहुम्म बि + क + अम्सैना + वबि + क + अस्बहना + वबि + क + नह + या + वबि + क + नमूतु + वइलैकन्नुशूर ।

अर्थ यह है :—हे हमारे अल्लाह हमने आप ही की आज्ञा से शाम की और आप ही की आज्ञा से भोर किया। और आप ही की आज्ञा से ज़िन्दह हैं और आप ही की आज्ञा से हमको मौत आएगी और हमको आप ही की ओर उठकर जाना है।

(३) जब सोने के लिये लेटे तो कहे :—

अल्लाहुम्म बिस्मि + क + अमूतु वअह + यां

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह ! मैं आपके पवित्र नाम के साथ जीता और मरता हूँ।

(४) जब सोकर जागे तो कहे :—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانِىْ بَعْدَ مَا اَمَاتَنِىْ وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ

अल + हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी + अह + यानी + बा + द + मा + अमा + तनी + वइलै हिन्नुशूर।

अर्थ यह है :—धन्यवाद अल्लाह को जिसने मुझे मौत के बाद ज़िन्दह किया और उसीकी ओर उठकर जाना है।

(५) जब पायख़ाने (टट्टी) जाय तो कहे :—

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ

बिस्मिल्लाहि + अल्लाहुम्म + इन्नी + अऊज़ुबि + क + मिनल + ख़बुसि + वल + ख़बाइस।

अर्थ यह है :—अल्लाह के नाम से ! हे मेरे अल्लाह मैं आप की शरण (पनाह) लेता हूँ दुष्ट पुरुषों और दुष्ट (बुरी) स्त्रियों से।

(६) जब पायख़ाने से निकले तो कहे .—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ۔

अल + हम्दु + लिल्लाहिल्लज़ी अज़ + ह + ब अन्निल + अज़ा + व + आफ़ानी।

अर्थ यह है:— धन्य है उस अल्लाह को जिसने दूर कर दी मुझ से गन्दगी और मुझे शान्ति दी।

(७) वज़ू जब करने लगे तो पहले यह कहे:—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम بسم الله الرحمن الرحيم

अर्थ यह है :—मैं शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयालु और बार-बार दया करने वाला है।

(८) वज़ू के बीच में यह मंत्र पढ़ता रहे।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ ذَنْبِیْ وَوَسِّعْ لِیْ فِیْ دَارِیْ وَبَارِكْ لِیْ فِیْ رِزْقِیْ

अल्लाहुम्मग़ फ़िर्ली ज़म्बी व वस्सी ली फ़ी दारीव बारिक ली फ़ी रिज़्क़ी।

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह मेरे पाप क्षमा कर दीजिये, और मेरे लिये मेरा घर बड़ा कर दीजिये और मेरी रोज़ी में बर्कत दीजिये।

(९) वजू जब पूरा हो जाय तो कहे :

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ - اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ

و اجعلنى من عبادك الصالحين . سبحانك اللهم و بحمدك و
استغفرك و اتوب إليك .

अशहदु + अल्ला + इला + ह + इल्लल्लाहु + वह + ला + शरी + कलहू + व + अशहदु + अन्न + मुहम्मदन + अब्दुहू + व + र + सूलुहू। अल्लाहुम्मजअलनी + मिनत्तौवाबी + न + वजअलनी + मिनल + मु + त + तह + हिरी + न + वज + अलनी + मिन + इबादि + कस्सालिही + न + सुब + हा + न + क + अल्लाहुम्म + वबि + हम्दि + क + व + अस्तग़ + फ़िरु + क + व + अतूबु + इलैक ।

अर्थ यह है :—मैं गवाही देता हूँ कि नहीं है कोई पूजे जाने के क़ाबिल। सिवा अल्लाह के। वह अकेला एक है। नहीं है कोई उसका साझी। और गवाही देता हूँ मैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे हैं और उसके रसूल हैं। हे मेरे अल्लाह मुझको तौबह करने वालों में से बना दीजिये और मुझको पवित्र रहने वालों में से बना दीजिये। और मुझको अच्छे बन्दों में से बना दीजिये। पवित्र हैं आप हे मेरे अल्लाह। आप आपसे क्षमा माँगता हूँ और आपकी ओर झुकता हूँ।

(१०) जब मस्जिद के अन्दर जाने लगे तो दाहिना पाँव पहले अन्दर रक्खे और यह मन्त्र पढ़े :—

अल्लाहुम्मग़ + फ़िर्ली + ज़ुनूबी + वफ़ + तह + ली + अब + वा + ब + रह मतिक । اللهم أغفرلى ذنوبى و افتح لى أبواب رحمتك

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह ! मेरे पापों को क्षमा कर दीजिये और मेरे लिये अपनी दया के द्वार खोल दीजिये ।

(११) मस्जिद में पहुँचते ही "एतिकाफ़" की नीयत इस तरह कर ले : नवैतुल + एतिकाफ़ نويت الأعتكاف

यानी मैं एतिकाफ़ की नीयत करता हूँ । यह नीयत कर लेने से जितनी देर मस्जिद में रहेगा एतिकाफ़ का सवाब भी मिलता रहेगा ।

(१२) जब मस्जिद से निकलने लगे तो पहले बायाँ पैर बाहर निकाले और यह मंत्र पढ़े ।

अल्लाहुम्मग़ + फ़िर्ली + ज़ुनूबी + वफ़ + तह + ली + अब + बा + ब फ़ज़्लिक । اللهم أغفرلى ذنوبى وافتح لى أبواب فضلك

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह ! मेरे पापों को क्षमा कर दीजिये और मेरे लिये अपनी देन के द्वार खोल दीजिये ।

(१३) जब खाना खाने लगे तो पहले यह पढ़ले :—

बिस्मिल्लाहि + व + अला + व + र + क + तिल्लाह ।

بسم الله و على بركة الله

अर्थ यह है :—अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ और उसकी बरकत की आशा रखता हूँ ।

(१४) जब खाना खा चुके तो कहे।

अल + हम्दु + लिल्लाहिल्लज़ी + अत + अ + म + ान + व + स + काना + व + ज + अ + लना + मिनल्मुस्लिमीन। व + क + फ़ाना व + आवान

الحمد لله الذی أطعمنا و سقانا و جعلنا من المسلمین و کفانا و آوانا.

अर्थ यह है :—प्रशंसा और धन्यवाद है उस अल्लाह के लिये जिसने हमको खाना खिलाया और पानी पिलाया और हम को मुसलमानों में से बनाया और हमारी आवश्यकताएँ पूरी कीं और हमको रहने का ठिकाना दिया।

(१५) जब किसी के यहाँ खाना खाए तो खा चुकने पर यह मन्त्र पढ़े।

अल्लाहुम्म + अत + इम + मन + अत + अ + म + नी + वस्क़ि + मन + सक़ानी। اللهم أطعم من أطعمنی و اسق من سقانی

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह उसको खिलाइये जिसने मुझको खिलाया और उसको पिलाइये जिसने मुझको पिलाया।

(१६) जब सवारी पर सवार हो तो :—

अल—हम्दु + लिल्लाह। सुब + हानल्लज़ी + सख़्ख़ + र + लना + हाज़ा + वमा + कुन्ना + लहू + मुक़ + रिनीन + वइन्ना + इला रब्बिना + लमुन + क़लिबून।

الحمد لله سبحان الذی سخرنا هذا و ما کنا له مقرنین و إنا إلی ربنا لمنقلبون.

अर्थ यह है :—प्रशंसा (तारीफ़) और धन्यवाद है अल्लाह के लिये। पवित्र है वह जिसने इस सवारी को हमारे वश में कर दिया हम खुद उसको अपने वश में नहीं कर सकते थे और एक दिन हम लौट कर अपने पालनहार के पास जाने वाले हैं।

(१७) जब यात्रा (सफ़र) के लिये निकलने लगे तो चलते समय यह प्रार्थना कर ले :—

اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا هٰذَا السَّفَرَ وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهٗ۔ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ

فِي السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِي الْاَهْلِ۔ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ

وَكَاٰبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْاَهْلِ وَالْوَلَدِ ۔۔۔۔۔۔

अल्लाहुम्म + हौविन + अलना हाज़स्स—फ़ + र वत्वि अन्ना बोदहू + अल्लाहुम। अन्त स्साहिबु + फ़िस्स + फ़िरि + वल × ख़ली + फ़तु फ़िल + अह + लि—अल्लाहुम्म + इन्नी अऊज़ु + बि + क + मिवंत्रासाइस्स + फ़रि + व + का + बतिल + मँज़रि वसूइल मुन + क + लबि फ़िल + मालि + वल + अह + लि + वल + व + ल दि।

अर्थ यह है:—हे हमारे अल्लाह हमारे लिये इस यात्रा (सफ़र) को आसान कर दीजिये और इसकी दूरी को समेट दीजिये। हे मेरे अल्लाह! यात्रा में आप ही मेरे साथी हैं और मेरे पीछे आप ही मेरे घर वालों को देखने वाले हैं। हे मेरे अल्लाह। मैं आप की शरण लेता हूँ यात्रा के कष्ट से' और बुरी दशा देखने से और वापस लौट कर बुरी दशा में पाने से धन को' घर को और बच्चों को।

(१८) जब यात्रा से लौटे तो कहे :—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ

आइबू+न+ताइबू+न + आबिदू + न + लिरब्बिना + हामिदून।

अर्थ यह है :—हम यात्रा से आने वाले हैं। तौबह करने वाले हैं। इबादत (पूजा) करने वाले हैं। अपने पालनहार की हम्द (प्रशंसा) करने वाले हैं।

(१९) जब किसी को बिदा करे तो कहे :—

اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِیْنَكَ وَاَمَانَتَكَ وَخَوَاتِیْمَ اَعْمَالِكَ

अस्तौदिउल्ला+ह+दी+न+क+व+ अमा +न+त+क+व+ख़वाती—म+आमालि+क।

अर्थ यह है :—मैं अल्लाह को सौंपता हूँ तेरा दीन और तेरी रक्षा की जाने योग्य चीजें और तेरे कामों के नतीजे।

(२० जब किसी दुख के मारे हुए को देखे तो कहे :—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا ؕ

अल+हम्दु+लिल्लाहिल्लज़ी अ.फ़ानी मिम्मबाला + क+बिही+व+फ़ज्ज़+लनी+अला+कसीरिम्मिम्मन ख़+ ल + क+तफ़ज़ीला।

अर्थ यह है :—और धन्यवाद उस अल्लाह के लिये जिसने

मुझे कुशल रक्खा है। उस दुख से जिसमें तुझको डाला है और अपने बहुत से पैदा किये हुओं से मुझ को अच्छा बनाया।

(२१) जब किसी बस्ती में पैठने लगे तो कहे :—

अल्लाहुम्म बारिक लना फ़ीहा। اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهَا۔

अर्थ यह है :—हे हमारे अल्लाह! हमारे लिये इस बस्ती में बरकत दीजिये।

(२२) जब किसी बैठक से उठ खड़ा हो तो कहे :—

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ

सुब्हा + न + क + अल्लाहुम्म वबि हम्दि + क + ला + इला + ह + इल्ला + अन + त + अस्तग़फ़िरु + क + व अतूबु इलैक।

अर्थ यह है :—हे मेरे अल्लाह मैं आप की पाकी बयान करता हूँ और आपकी हम्द (प्रशंसा) करता हूँ। आपके सिवा कोई पूज्य नहीं। मैं आप से क्षमा चाहता हूँ और आप से तौबह करता हूँ। (पुस्तक समाप्त हुई)

व + आख़िरु दावाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ + लमीन। و آخر دعوانا أن الحمد لله رب العالمين

यानी हमारी आख़िरी बात यह है कि सब तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिये हैं जो सारे संसारों का पालनहार है।

ربنا تقبل منا إنك أنت السميع العليم

रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्न + क + अन्तस्समीउल अलीम यानी हे हमारे पालनहार ! हमारे इस काम को स्वीकार कर लीजिये । आप सुनने वाले और जानने वाले हैं ।

و صلی الله تعالی علی خیره خلقه سیدنا و مولانا محمد و علی آله و صحبه و بارک وسلم .

वसल्लल्लाहु तआला अला ख़ैरि ख़ल + क़िही + सैय्यिदिन्दा व मौलाना मुहम्मदिँ व व अला आलिही व सह + बिही व बारिक व सल्लिम ।

—:०:—

विनीत लेखक का अन्तिम निवेदन पाठकों की सेवा में:—

अल्लाह के जो बन्दे

इस पुस्तक से लाभ उठाएँ और कभी इन मँत्रों और प्रार्थनाओं का पाठ करें उन से इस तुच्छ बन्दे की बड़ी विनीत (आजिज़ाना) प्रार्थना है कि वह आख़िर में यह शब्द भी कह लिया करें कि हे अल्लाह इस पुस्तक के लिखने वाले मुहम्मद मँज़ूर नोमानी और उसके मां बाप और उसके घर वालों के लिये और उस के साथ भलाई करने वालों और दोस्तों के लिये दया करने और क्षमा करने का निर्णय (फ़ैसला) कर दीजिये और यह सब प्रार्थनाएँ उन के लिये भी स्वीकार (क़बूल) कर लीजिये। आपका इस तुच्छ बन्दे पर यह बहुत बड़ा उपकार होगा और अल्लाह तआला आप को इस उपकार का बहुत बड़ा बदला देगा। और यह तुच्छ भी अल्लाह तआला से आप के लिये दुआ करेगा। विनीत और तुच्छ बन्दह=मुहम्मद मंज़ूर नोमानी रजब १३६९ हिजरी।

—:०:—